श्री नामकान्ति

रसिकाचार्य स्वामी श्री युगलानन्य शरण जी महाराज

Scanned by CamScanner

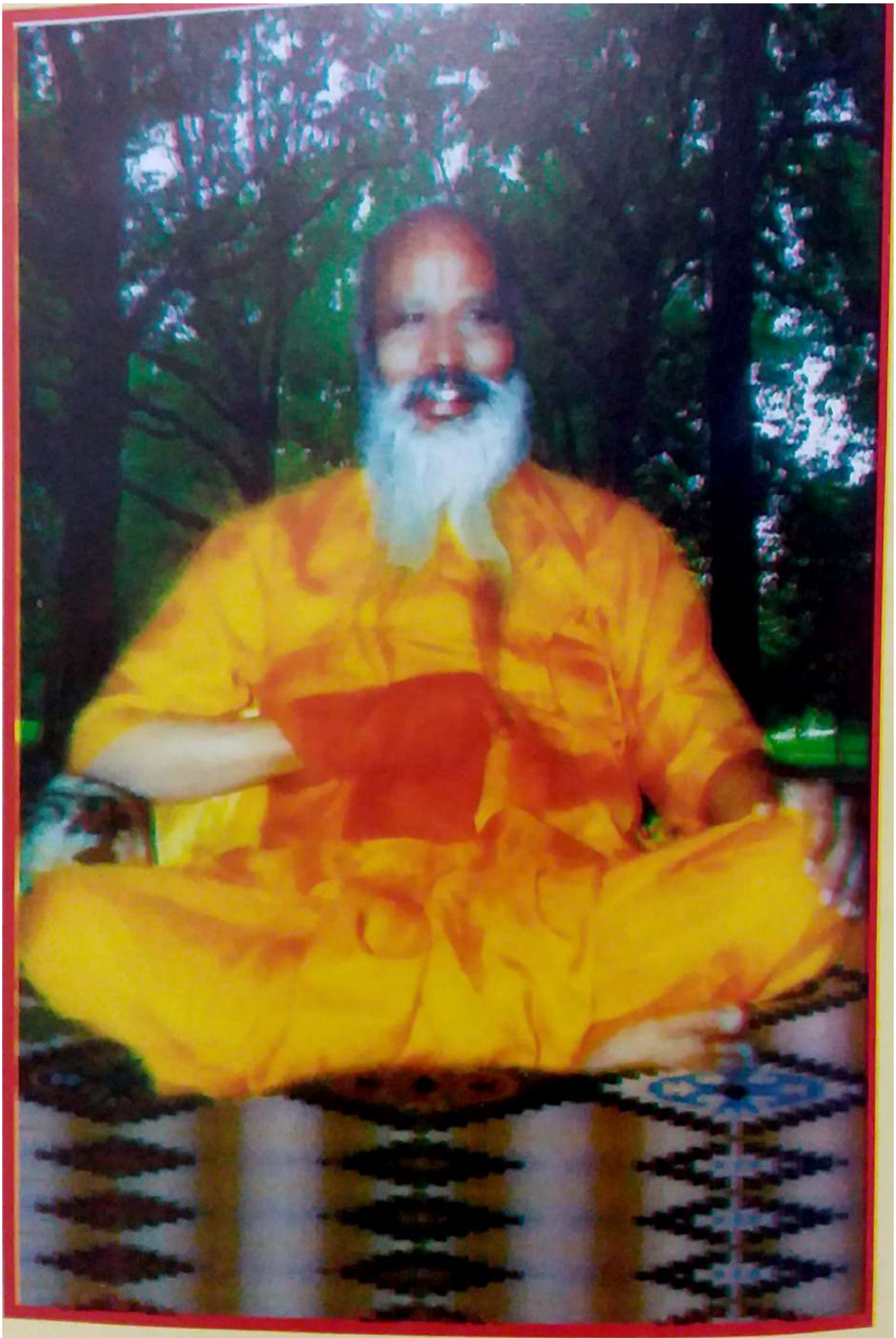

आचार्य स्वामी श्री सीताराम शरण जी महाराज

श्री लक्ष्मण किलाधीश

Scanned by CamScanner

॥ श्रीसीतारामाभ्यां नमः ॥

श्रीनाम-कान्ति

❀ रचयिता ❀

रसिकाचार्य स्वामी श्रीयुगलानन्यशरणजी महाराज

संस्थापक-श्रीलक्ष्मण किला

अयोध्या, फैजाबाद

Scanned by CamScanner

प्रकाशक–
स्वामी श्रीसीतारामशरण सेवा संस्थान
श्रीहनुमानधाम, श्रीकृष्णबलराम हाल, आशियाना
मेन रोड, पटना–८०००२५
दूरभाष–०६१२-३५८४६४८

प्राप्ति-स्थल–
कार्यालय श्रीलक्ष्मण किला
श्रीअयोध्या, फैजाबाद
(०५२७८) २३३६२३

सर्वाधिकार सुरक्षित

अक्षय नवमी
सन् २००६ ई०

मूल्य : तीस रुपये मात्र

मुद्रक–
मनीराम प्रिंटिंग प्रेस
शास्त्रीनगर, अयोध्या–फैजाबाद
मो०- ९८३८९४६८४५

Scanned by CamScanner

आत्मनिवेदन

श्री मैथिलीरमण शरण

रसिकाचार्य स्वामी श्रीयुगलानन्यशरणजी द्वारा विरचित नाम महिमा के अद्वितीय ग्रन्थ श्रीनाम कान्ति का तृतीय संस्करण आपके समक्ष प्रस्तुत है। समस्त शास्त्र–पुराणों व मनीषियों ने भगवन्नाम संकीर्तन को ही कल्याण का सरल व सर्वोत्तम उपाय माना है। यही नहीं श्रीयुगलनाम को उपाय और उपेय दोनों ही स्वीकार किया है। पूज्यपाद गोस्वामी श्रीतुलसीदास जी महाराज भी 'नाम निरूपन नाम जतन तें' कहकर इसको प्रमाणित करते हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ में पूज्य श्री महाराजजी ने रसिकों–नाम जापकों के प्राणाधार श्रीनाम महाराज की महिमा का अनेक भाँति प्रतिपादन किया है। वेद–शास्त्रों में वर्णित प्रसंगों की चर्चा तो यत्र–तत्र आयी ही है उसके अतिरिक्त श्रीमहाराज जी ने जिस माधुर्य को प्रकट किया है वह अद्भुत है। यूँ तो भगवान् के सभी नाम पाप–ताप का नाश कर सद्गति देने वाले हैं तथापि श्रीसीताराम–नाम के समान अन्य कोई नहीं है ऐसा श्री महाराज जी ने कहा है—

सकल श्रुतिन सिरमौर नाम नारायणादि विद गावैं।
तिन नामन ते कोटि अमित फलप्रद श्रीराम गनावैं।।
सकृत सुमुख ते कढ़त सहज कटु पातक पुंज परावैं।
युगलानन्य नाम सियपिय के सम कहु कौन बतावैं।।

और इस महत्ता का प्रमाण श्रीमहाराजजी शास्त्रवाद से नहीं देते, अपितु नामजापकों के अनुभव का सत्य उल्लिखित करते हैं—

पक्षपात की बात नहीं निज नैनन से लखि लीजै।
परखो प्रीति सजाय उभय पुनि रटत महामधु पीजै।।
और नाम सुमिरत रसना दस–बीस बार में छीजै।
युगलानन्य सुनाम राम नित रटत जीह रस भीजै।।

तो इस प्रकार 'सबहि सुलभ सबदिन सब देसा' जो श्रीयुगल–नाम हैं उनका जप–ध्यान करने की प्रेरणा प्राणिमात्र को मिले तथा

Scanned by CamScanner

जो जापक जन हैं उन्हें श्रीनाम महिमा के पढ़ने-सुनने का रसास्वादन प्राप्त हो इस संकल्प से यह ग्रन्थ भक्तों के कर-कमलों में समर्पित है। इससे पूर्व पूज्य गुरुदेव स्वामी श्रीसीतारामशरणजी महाराज (श्रीलक्ष्मण किलाधीश) के द्वारा अवध सन्देश के विशेषांक के रूप में १९८७ में इसका प्रकाशन हुआ था। उस संस्करण के समाप्त हो जाने पर यह नया संस्करण तैयार हुआ है।

श्रीलक्ष्मण किला के साहित्य-संरक्षण में अहर्निश लगे हुए महेशचन्द्र मिश्र जी ने पुस्तक के पाठ-संशोधन की सेवा की है। श्री किशोरी जी की कृपा इन पर नित्य बनी रहे। भगवत्-भागवत् सेवा के इस अनुष्ठान का सारा श्रेय हमारे गुरुभाई तथा श्री हनुमानजी महाराज के लाडले भक्त श्रीनागेश्वरप्रसाद सिंहजी (पटना) को है। पूर्वाचार्यों के संकल्पों को पूर्ण करने हेतु ही आपने 'स्वामी श्री सीतारामशरण सेवा संस्थान' की स्थापना की है। इसी के संस्थान के आर्थिक प्रबन्ध से यह संस्करण प्रकाशित हुआ है। श्रीहनुमानजी महाराज परम नामानुरागी हैं। हमारी उनसे प्रार्थना है कि आप पर उनकी कृपा-सुधा सदैव बरसती रहे। आपके व आपके आवास श्रीहनुमानधाम पटना के समस्त परिकरों के लिए श्रीलखनलाल जी की सन्निधि से मंगलाशासन।

विश्वास है कि यह ग्रन्थ नाम-साधना-पथ-पथिकों के लिए परम पाथेय का कार्य करेगा।

*

श्रीनामकान्ति का प्रकाशन पूज्य गुरुदेव की कृपा-प्रेरणा से हो रहा है। पूज्य श्री मैथिलीरमण शरणजी महाराज के संरक्षण में यह सेवा इस संस्थान को मिली इसका मैं आभारी हूँ। मनुष्य-मात्र के लिए प्रभु को प्राप्त करने का सर्वोत्तम साधन नामानुराग ही है। श्री नामकान्ति के नित्य पाठ से श्रीनाम महाराज में निष्ठा बढ़ेगी। भक्तजन इसे सादर स्वीकार करेंगे इसी भाव के साथ सादर जय श्रीसीताराम।

नागेश्वर प्रसाद सिंह

श्रीहनुमानधाम, श्रीकृष्णबलराम हाल, आशियाना
मेन रोड, पटना-८०००२५
दूरभाष-०६१२-२५८४६४८

Scanned by CamScanner

श्रीसीताराम नाम तत्त्व मीमांसा

स्वामी श्रीसीतारामशरणजी महाराज

परम कारुणिक भक्तवाञ्छाकल्पतरु परात्पर प्रभु श्रीसीताराम जी के श्रीनाम की महिमा समस्त वेद-शास्त्रों में प्रतिपादित है। वेद के मन्त्र एवं ब्राह्मण दोनों भागों में नाम की महिमा का वर्णन प्राप्त है। वेद के अर्थों का विस्तार करने वाले इतिहास पुराणों में भी भगवन्नाम की महिमा अत्यन्त विस्तार से वर्णित है। स्मृति, संहिता, महाभारत, रामायण आदि सद्ग्रन्थों में सर्वत्र श्री नाममहिमा का वर्णन है। प्रभु के प्रियपात्र नाम-रस-रसिक सन्त-महात्मागण श्रीनाम महिमा का गान करते रहते हैं।

ऋग्वेद के चतुर्थ मण्डल में श्रीसीताजी की प्रार्थना प्राप्त होती है–'अर्वाची सुभगे भव सीते वन्दामहे त्वा' (४/५७/५) हे सुन्दरी शिरोमणि सीते ! हम आपकी वन्दना करते हैं। इसी प्रकार ऋग्वेद के दशम मण्डल में ही श्रीरामचरित का वर्णन है—'भद्रो भद्रया ········ अभिराममस्थात्'। उपनिषदों में भगवन्नाम को सर्वोत्कृष्ट आश्रय कहा गया है। नचिकेता से यमराज ने भगवन्नाम की महिमा कही है—

"सभी वेद जिसकी महिमा का गान करते हैं, तप आदि साधन जिसका वर्णन करते हैं। जिसकी प्राप्ति के लिये महर्षिगण ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं वह परब्रह्म प्रभु का नाम है। वह नाम कहीं ओम्, कहीं श्रीराम, नारायण, कृष्ण, हरि आदि नामों से कथित है। यही सर्वश्रेष्ठ अक्षर ब्रह्म है यही परतत्त्व है इसी को जानकर मनुष्य सब कुछ प्राप्त कर सकता है। यही प्राणिमात्र का सर्वश्रेष्ठ आश्रय है। इसी भगवन्नाम के बलपर साधक मुक्त होकर भगवान् के धाम में जाते हैं–सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति ····· एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते।" कठ०–२/१५/१७

श्रीरामतापनी उपनिषद् में श्रीराम नाम को साक्षात् ब्रह्म स्वरूप कहा है—योगीगण जिनमें सदा रमण करते हैं। जो सत् चित्, आनन्द स्वरूप है ऐसा श्रीराम पद परब्रह्म परमात्मा का बोधक है—

रमन्ते योगिनोऽनन्ते सत्यानन्दे चिदात्मनि।
इति रामपदेनासौ परब्रह्माभिधीयते ॥५॥

Scanned by CamScanner

इस मन्त्र में अनेक विशेषतायें हैं किन्तु मुख्य विशेषता यह है कि इस मन्त्र में श्रीरामनाम को परब्रह्म स्वरूप कहा है। अन्य नामों की अपेक्षा श्रीरामनाम केवल गुणवाचक ही नहीं किन्तु सच्चिदानन्द ब्रह्म के स्वरूप के समान हैं। वेदों में ब्रह्म का स्वरूप सत्, चित्, आनन्द रूप कहा गया है—'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म'। उपनिषद् का यह प्रसिद्ध मन्त्र है जिसमें ब्रह्म को सत्य स्वरूप, ज्ञान स्वरूप एवं आनन्द स्वरूप कहा गया है। श्रुति में कहीं सत् स्वरूप, कहीं केवल चित्-ज्ञान स्वरूप तथा कहीं–कहीं केवल आनन्द स्वरूप ब्रह्म को कहा गया है। श्रीराम नाम में सत् भी है चित् भी है तथा आनन्द भी है– 'रमन्ते योगिनः यत्र स रामः, योगीजन जिसमें रमण करें वही श्रीराम हैं। यहाँ श्रीराम के विशेषण सत्यानन्द चिदात्मा हैं। मन्त्र का अन्वय संस्कृत में यदि करें तो बिना व्याख्या के सरलता से ब्रह्म का बोध हो जाता है–'सत्यानन्दे चिदात्मनि अनन्ते योगिनः रमन्ते राम पदेन असौ दाशरथिः परब्रह्म अभिधीयते। अर्थात्–सत्यानन्द चिदात्मा अनन्त इस श्रीरामपद से श्रीदशरथनन्दन श्रीरामचन्द्रजी अभिधा वृत्ति से परब्रह्म कहे जाते हैं।

अभिधीयते—लक्षणा, व्यंजना से नहीं किन्तु साक्षात् अभिधा-मुख्य शक्ति रूप वृत्ति से श्रीरामजी परब्रह्म कहे जाते हैं। शब्दार्थ के निश्चय के लिये व्याकरण शास्त्र में 'वृत्ति' का आश्रय लिया जाता है। वैसे तो सोलह प्रकार के वृत्ति भेद स्वीकार किये गये हैं किन्तु मुख्यरूप से तीन ही हैं--शक्ति, लक्षणा व्यंजना। वेदों में शक्यार्थ (शक्ति से निश्चित किया हुआ अर्थ ही) प्रधान है। साहित्य शास्त्र में लक्ष्यार्थ [लक्षणा द्वारा निश्चित अर्थ] की प्रधानता है। श्रीराम तापनी उप-निषद् साक्षात् वेद है। इसमें अभिधा वृति से श्री रामजी को परब्रह्म कहा गया है। अतः श्रीरामनाम साक्षात् स्वरूप से ही परब्रह्म है।

नाम वाचक होता है रूप वाच्य होता है। नाम से हम किसी को पुकारते हैं किसी को जानते हैं। जो परब्रह्म नाम से पुकारा जाता है जाना जाता है वही दशरथनन्दन सगुण साकार मेघ श्याम श्रीराम हैं। नाम वाचक व रूप वाच्य है यह नियम तो सभी भगवान् के नामों के सम्बन्ध में सर्वविदित है किन्तु श्रीरामनाम की विशेषता है कि यह नाम दशरथनन्दन सगुण साकार श्री रामचन्द्र जी का वाचक होते हुए भी स्वरूपतः ब्रह्म का वाचक है। र, अ, म, ये तीन अक्षर सामान्य क, ख, ग, घ आदि अक्षरों की भाँति अक्षर मात्र नहीं किन्तु साक्षात् ब्रह्म रूप हैं। व्याकरण शास्त्र में तो शब्द को ही ब्रह्म माना गया है किन्तु श्रीरामनाम तो साक्षात् सच्चिदानन्द ब्रह्म के वाचक हैं।

Scanned by CamScanner

वेद शास्त्रों में विष्णु, हरि, नारायण आदि भगवन्नाम गुण वाचक हैं- व्यापक होने से भगवान् का एक नाम विष्णु है। 'व्याप्नोतीति विष्णुः'। भक्तों के क्लेश हरण करने के कारण भगवान् का 'हरि' नाम है 'भक्तानां क्लेशं हरतीति हरिः, सागर में शयन करने के कारण ही प्रभु को नारायण कहा जाता है। सत्, चित्, आनन्द स्वरूप होने के कारण श्रीरामनाम स्वरूप वाचक है केवल गुणवाचक नहीं। जैसे और नामों में व्यापक होना, क्लेश हरण करना आदि गुण हैं उसी प्रकार श्रीराम में योगियों के मन को रमण कराने वाला एक विलक्षण गुण है। रमण कराना यह वास्तव में ब्रह्म के सभी गुणों से विलक्षण है क्योंकि मुक्तात्मा का मुक्त होंने पर ब्रह्म में रमण करना उसका स्वरूप एवं वैभव कहा गया है—'आत्मक्रीड़ः आत्मरति' श्रुति स्पष्ट जीवात्मा का परमात्मा में रमण करा रही है। आत्मा शब्द का अर्थ यहाँ परमात्मा है, परमात्मा के असीम आनन्द में जीवात्मा सदा सर्वदा के लिए डूब जाता है। इसीं को रमण शब्द से कहा जाता है।

श्री वैष्णव दर्शन के अनुसार श्रीभगवान् की नित्य सेवा स्वरूप दिव्य कैंकर्य सुख की प्राप्ति में ही जीवात्मा का रमण समझना चाहिए। वाल्मीकीय रामायण में जीवों के आचार्य श्रीलक्ष्मण कुमार प्रभु से कह रहे हैं—नाथ! बन में आप तो श्री जनकराजकिशोरीजी के साथ पर्वत के सुरम्य शिखरों पर रमण करेंगे तथा मैं आपके जागृत एवं शयन सभी कालों में आपकी सेवा का आनन्द प्राप्त करूँगा—"भवांस्तु सह वैदेह्या गिरि सानुषु रंस्यते। अहं सर्वं करिष्यामि जाग्रतः स्वपतश्च ते॥ रम्यमावसथं कृत्वा रममाणा वने त्रयः। देवगन्धर्व संकाशास्तत्र ते न्यवसन् सुखम्॥" चित्रकूट में रमणीय आश्रय बनाकर श्रीसीतारामजी श्री लखनलाल तीनों देवता गन्धर्व की भाँति रमण (विहार) करते हुए निवास करने लगे। यहाँ युगल श्री सीतारामजी का विहार-रमण तो सर्वथा उचित ही है किन्तु श्री लक्ष्मणकुमार के रमण का क्या तात्पर्य है? इसका उत्तर रहस्य ग्रन्थों में पूर्वाचार्यों ने दिया है।

'रममाणा वने त्रयः' तीनों का रमण तो एक ही साथ लिख दिया किन्तु रमण की व्यवस्था में परस्पर महान अन्तर है। स्वामी का रमण और है तथा सेवक का रमण कुछ और ही है। चित्रकूट के पावन शिखरों में विद्यमान गुप्त-प्रकट नाना कुन्ज--निकुन्जों में श्री युगलकिशोर श्री सीताराम जी का बिहार स्वरूप रमण होता है तथा उन कुन्ज-निकुन्जों के निर्माण एवं विविध प्रकार की सेवा सामग्रियों

Scanned by CamScanner

से सेवा करना ही श्रीलक्ष्मण कुमार का रमण है। इस प्रकार रमण गुण के कारण श्रीरामनाम की रमणीयता में और भी विलक्षणता सिद्ध हुई।

साधारण जीवों के रमण योग्य श्रीराम नहीं हैं किन्तु योगियों के रमण योग्य हैं—'रमन्ते योगिनः'। योग के द्वारा जिन्होंने अपने मन को शुद्ध कर लिया है ऐसे विशुद्ध बोध सम्पन्न मन वाले शान्तचित्त योगियों के रमण योग्य श्रीराम हैं। ब्रह्म का चिन्तन शुद्ध मन से ही सम्भव है—'शुद्धेन मनसा चाभिक्लृप्तः' दृश्यते त्वग्रया बुद्धया' आदि श्रुतियों में शुद्ध मन-चित्त से ही परमात्मा को जानने योग्य कहा गया है। इससे श्रीराम नाम सज्जन पुरुषों के ग्रहण योग्य भी सूचित है। वेद-शास्त्रों के प्रमाणों से तो श्रीराम एवं उनके नाम की महिमा असाधारण है ही, साथ ही श्रीराम के नाम में एक जादू भी है जो सभी की जिह्वा पर बलात् बैठकर अपना अधिकार जमा लेता है। उपनिषद् भी कहते हैं कि अत्यन्त अभिराम-सुन्दर होने के कारण ही श्रीरामनाम की इतनी अधिक ख्याति लोगों में हुई-'रामनाम भुविख्यातमभिरामेण वा पुनः' रामतापनी'।

श्रुति आगे कहती है—स्वर्भूज्योतिर्मयोऽनन्त रूपी स्वेनैव भासते, जीवत्वेनेदमोम् यस्य सृष्टि स्थिति लयस्य च। --तापनी १४। 'स्वभूः' श्रीराम नाम स्वतः सिद्ध, कारण रहित है। श्रीरामनाम सभी का कारण है किन्तु श्रीरामनाम का कारण कोई दूसरा नहीं है। 'ज्योतिर्मयो'— श्रीरामनाम ज्योतिर्मय प्रकाशमय है। अनन्तरूपौ--श्रीराम नाम अनन्त रूप वाला है अर्थात् एक ही काल में अनेक भक्तों के हृदय में अनेक भावों के अनुसार अनेक रूपों से ध्यान में दर्शन देने में समर्थ हैं। साथ ही एक श्री दशरथनन्दन रूप से सभी भक्तों को दर्शन देने में समर्थ हैं। 'स्वेनैव भासते' -श्रीराम नाम प्रत्यक्ष द्रव्य है। स्वतः प्रकाश हैं। 'यस्य जीवत्वेन इदम् ओम्' जिस श्रीराम मन्त्र के कार्य साक्षात् प्रणव-ओम् हैं अर्थात् श्रीरामनाम प्रणव के भी कारण हैं। समस्त मंत्रों के मूल प्राण बीजस्वरूप ओंकार हैं और श्रीराम नाम ओंकार का भी कारण है।

श्रुति कहती है जिस प्रकार एक ही वट के बीज में शाखा पल्लवों सहित एक महान् वृक्ष छिपा रहता है उसी प्रकार श्रीराम बीज के अभ्यन्तर समस्त चराचर विश्व विद्यमान है-'यथैव वटबीजस्थः...... शक्तयस्तिस्र एव च।' पूर्ण ब्रह्म श्रीराम नाम की महिमा तो अपार है ही, ब्रह्मा, विष्णु, महेश ये तीनों देवता रेफ-रकार के आश्रित रहते

Scanned by CamScanner

हैं। पुलह संहिता भी श्रीराम तापनी का समर्थन करती है–"रकाराज्जायते ब्रह्मा रकाराज्जायते हरिः············तद्वन्मंत्राश्च वेदाश्च रकारेषु व्यवस्थिताः ॥" रकार से ब्रह्मा, विष्णु, महेश उत्पन्न होते हैं। चराचर विश्व रकार में ही प्रतिष्ठित है। जिस प्रकार वट के बीज में वृक्ष रहता है उसी प्रकार श्रीराम बीज में सभी वेद हैं। जिस प्रकार डिब्बे में बन्द रत्न को ऊपर से साधारण मनुष्य नहीं जान पाता उसी प्रकार सभी वेद एवं मन्त्र श्रीराम नाम में विद्यमान हैं इस रहस्य को जापक जन ही जान पाते हैं साधारण मनुष्य नहीं।

श्रीसनत्कुमार संहिता के अन्तर्गत श्रीराम स्तवराज में श्रीराम मन्त्र को पर जाप्य कहा है जिससे भोग एवं मोक्ष दोनों वस्तुएँ अनायास प्राप्त हो जाती हैं। श्रीराम मन्त्र ब्रह्महत्यादि समस्त पापों का नाशक है—

श्रीरामेति परं जाप्यं तारकं ब्रह्म संज्ञकम्।
ब्रह्महत्यादि पापघ्नमिति वेदविदो विदुः ॥

श्रीराम मंत्र का दूसरा नाम है तारक मन्त्र। संसार से तारने योग्य इस मंत्र की तारक नाम से ही प्रसिद्धि हो गई है। ब्रह्म स्वरूप जानकर जो लोग इसका जप करते हैं उनके छोटे–बड़े सभी पाप समूल नष्ट हो जाते हैं। श्रीराम तापनी में स्पष्ट है कि इस तारक मंत्र के जप से मनुष्य बाल हत्या, ब्रह्महत्या आदि सभी पापों से मुक्त हो जाता है—

'एतत्तारकं ब्राह्मणो नित्यमधीते, स पाप्मानन्तरित।
स ब्रह्महत्यां तरति, स भ्रूणहत्यां तरति ॥

संहिताओं में श्रीसनत्कुमार संहिता का सर्वश्रेष्ठ स्थान है। इसी संहिता के अभ्यन्तर श्रीरामस्तवराज स्तोत्र है। श्रीरामस्तवराज का पाठ स्मार्त और वैष्णव दोनों करते हैं। इस स्तवराज के ऊपर अनेक संस्कृत भाष्य हैं। गालवाश्रम [गलता गादी] जयपुर के स्वामी श्री हर्य्याचार्य जी महाराज एवं श्री अयोध्या के स्वामी श्रीहरिदास जी के युगलभाष्य अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। संस्कृत भाष्यों से इस स्तवराज की प्रामाणिकता अत्यन्त सुस्पष्ट है। स्तवराज के प्रारम्भ में ही श्रीयुधिष्ठिर जी ने देवर्षि श्रीनारदजी से तीन प्रश्न पूछे हैं। प्रथम प्रश्न है परतत्त्व के सम्बन्ध में, द्वितीय है जप के सम्बन्ध में तथा तृतीय प्रश्न ध्यान के सम्बन्ध में है– किं तत्त्वं किं परं जाप्यं किं ध्यानं मुक्ति साधनम्? तत्त्व क्या है, सर्वश्रेष्ठ जपने योग्य मंत्र क्या है तथा मोक्षप्रद ध्यान क्या है? उत्तर में श्री नारदजी ने कहा कि श्रीराम ही परतत्त्व हैं। श्रीराममन्त्र

Scanned by CamScanner

ही सर्वश्रेष्ठ जपने योग्य मंत्र है तथा श्रीसीताजी के सहित श्रीरामजी का ध्यान ही मुक्तिप्रद ध्यान है ।

'यत्परं यद् गुणातीतं················ब्रह्म हत्यादि पापघ्नमिति वेदविदो विदुः' । जो सबसे पर है, गुणातीत, निर्मल स्वयं प्रकाश एवं कल्याणप्रद है । वही परम तत्त्व मोक्ष को देने वाला है । उस परम तत्त्व को 'श्रीराम' कहते हैं । ब्रह्म ही जिसकी संज्ञा है ऐसा श्री राम तारक मंत्र ही पर जाप्य है जो ब्रह्म हत्या आदि सभी पापों का नाश कर देता है ऐसा वेद को जानने वाले महपुरुषगण कहते हैं । संसार से तरण कराने में समर्थ होने के कारण इस मंत्र की तारक संज्ञा है—

'संसारात् तारयतीति तारकः' ।

शास्त्रों में श्रीराम मंत्र की ही तारक संज्ञा है अन्य भगवन्मंत्रों की नहीं । हारीत स्मृति में सुस्पष्ट है कि 'श्रीरामाय नमः' यह तारक एवं ब्रह्म संज्ञक मंत्र है । श्रीविष्णु भगवान् के हजार नामों से भी यह महामंत्र श्रेष्ठ है । वैसे तो प्रभु के अनेकों मंत्र है किंतु इस मंत्र के समान अन्य कोई भी नहीं है । सौंदर्य सुधासिंधु प्रभु श्रीराम का यह मंत्र है । सौंदर्य माधुर्य की अधिष्ठातृ देवता साक्षात् श्रीलक्ष्मी को रमण कराने में श्रीरामजी समर्थ हैं । इसीलिए उनको राम कहा जाता है-रमणाद् राम इत्यपि । नामी और नाम दोनों अलौकिक हैं । इसी मंत्र को जपकर ब्रह्माआदि देवतागण ईश्वरत्त्व को प्राप्त करते हैं । ऋषि मुनि जन इसी को जपकर संसार-सागर से पार हो गये । इसी मंत्र को जपकर 'भूतभावन श्रीशंकरजी ने त्रिपुरासुर का वध किया । उनको ब्रह्महत्या का पाप भी नहीं लगा तथा सुर-असुर सभी से पूजित हो गये । इसी मंत्र के जप से श्री अगस्त्य जी ने रुद्रत्व श्रीकश्यपजी ने ब्रह्मत्व तथा श्रीविश्वामित्रजी ने अनेक नवीन लोकों के निर्माण द्वारा इन्द्र पद को प्राप्त कर लिया । श्री कार्तिकेय जी मनु, रुद्र, हिमवान्, नारद एवं बालखिल्य आदि मुनिगण देवत्व को प्राप्त कर गये । आज भी श्रीशंकरजी काशी में मरने वाले प्राणियों को इसी महामन्त्र के द्वारा मोक्ष प्रदान करते रहते हैं । श्रीराम नाम को ब्रह्म संज्ञक कहा गया है । श्रीरामनाम साक्षात् सच्चिदानन्द ब्रह्म का वाचक है— 'श्रीरामाय नमो ह्यं तत्तारकं ············ दिशत्येतन्महामंत्रं तारकं ब्रह्म संज्ञकम् ॥'

जिस नाम से ब्रह्म को जाना जाता है उसी नाम को ब्रह्म संज्ञक कहते हैं—ब्रह्म सम्यक् ज्ञायते येन तद् ब्रह्म संज्ञकम्—स्वामी श्रीहरिदास भाष्य । लोक में यह प्रसिद्ध है कि किसी पुरुष के द्वारा किसी व्यक्ति के आकार एवं नाम का जब परिचय मिलता है तब वह व्यक्ति

Scanned by CamScanner

उस आकार वाले पुरुष को देखकर उसी नाम से पुकारता है तभी उस पुरुष का साक्षात्कार होता है। उसी प्रकार सद्गुरु के द्वारा साधक प्रभु के स्वरूप एवं नाम का ज्ञान प्राप्त कर जब नाम की साधना करने लगता है तब प्रभु की अवश्य प्राप्ति होती है। अगस्त्य संहिता में लिखा है—शाक्त, शैव, सौर, गाणपत्य आदि सभी मंत्रों में वैष्णव मंत्र श्रेष्ठ है। सभी वैष्णव मंत्रों में भी श्रीराम मंत्र श्रेष्ठ एवं शीघ्र फल-दायक है—"सर्वेषु मन्त्र वर्गेषु ········राममन्त्राः फलाधिकाः" ।

पद्मपुराण में श्रीपार्वती जी से शिवजी ने कहा है कि लौकिक एवं वैदिक शब्दों से सहस्रगुण श्रीराम नाम श्रेष्ठ है- 'लौकिका वैदिका शब्दा ये केचित्सन्ति पार्वति। नामानि रामचन्द्रस्य सहस्र तेषु चाधिकम्॥' श्रीराम स्तवराज में भोग एवं मोक्ष दोनों की प्राप्ति के लिए श्रीराम नाम का जप कहा गया है—

श्रीराम रामेति जना ये जपन्ति सर्वदा।
तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च भविष्यति न संशयः॥

अर्थात् जो मनुष्य श्रीराम नाम का सदा जप करता है उसको भोग एवं मोक्ष दोनों प्राप्त होंगे इसमें सन्देह नहीं है। श्रीराम नाम के जप से इह लौकिक तथा पारलौकिक दोनों सुख अनायास प्राप्त होते हैं। धन पुत्र राज्य आदि लौकिक सुख हैं तथा संसार की निवृत्ति-पूर्वक श्रीसीतारामजी की प्राप्ति को मोक्ष कहते हैं। श्रीनाम स्मरण से दोनों वस्तुएँ अनायास प्राप्त हो जाती हैं। अग्नि पुराण में स्पष्ट है कि श्रीरामनाम जप के अतिरिक्त कलियुग में अन्य धर्मों में मनुष्य को अधिकार ही नहीं है। 'कलौयुगे कल्मषनाशनाय,अन्यत्र धर्मे खलु नाधिकारः वायु पुराण का कथन है कि प्रभु के एक अंग-केवल श्रीचरण कमल संसर्ग से गंगा समस्त जगत् को पवित्र करती है फिर श्रीनाम तो प्रभु के अंग-प्रत्यंग में व्याप्त है अतः इसकी महिमा कौन कह सकता है?-

एकाङ्ग संगिनी गंगा पावयेदखिलं जगत्।
अंग प्रत्यंग संव्यापि नाम किं कर्तुमक्षमम्॥

ब्रह्मपुराण का मत है श्रीरामनाम स्मरण में जिनका मन लगा रहता है, यमराज उनके भाग्य की रेखा को सुधार देता है—श्रीरामनाम स्मरणे मानसं यस्य वर्तते। तस्य वैवस्वतो राजा करोति लिपिमार्जनम्। यामल में स्पष्ट है जिनके हृदय में श्रीरामनाम का निवास है वे प्रलय की आग में अथवा मृत्यु के मुख में प्रविष्ट हो जायं फिर भी उनको कहीं से किसी प्रकार का भय सम्भव नहीं—'श्रीरामनामाखिलमंत्र बीजं संजीवनी चेन्मनसि प्रविष्टा। हालाहलं वा प्रलयानलं वा मृत्योर्मुखं वा विशतां कुतो भीः॥

Scanned by CamScanner

इस प्रकार श्रीसीताराम नाम की महिमा से समस्त वेद शास्त्र मंडित हैं। अनन्त श्रीविभूषित रसिकाचार्य स्वामी श्रीयुगलानन्यशरण जी महाराज द्वारा संगृहीत श्रीसीतारामनाम प्रताप प्रकाश में विस्तार पूर्वक वेदशास्त्रों के प्रमाण उद्धृत हैं। भारत वर्ष में नाम महिमा का प्रतिपादन करने वाला हिन्दी वाङ्मय में सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ श्रीनाम कांति है जिसका व्याख्यान प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रकाशित है।

श्रीलक्ष्मण किला की गुरु परम्परा

रामानन्दमहं वन्दे वेदवेदान्तपारगम्,
राम मन्त्र प्रदातारं सर्वलोकोपकारकम्।
शुभासने समासीनमनन्तानन्दमच्युतम्,
कृष्णदासो नमस्कृत्य पप्रच्छ गुरुसन्ततिम्॥
भगवन् यमिनां श्रेष्ठ प्रपन्नोस्मि दयां कुरु,
ज्ञातुमिच्छाम्यहं सर्वां पूर्वेषां सत्परम्पराम्।
मंत्रराजश्च केनादौ प्रोक्तः कस्मै पुरा विभो,
कथं च भुवि विख्यातो मन्त्रो मोक्षदायकः॥
कृष्णदासवचः श्रुत्वाऽनन्तानन्दो दयानिधिः,
उवाच श्रूयतां सौम्य वक्ष्यामि तद्यथाक्रमम्।
परधाम्नि स्थितो रामः पुण्डरीकायतेक्षणः,
सेवया परया जुष्टो जानक्यै तारकं ददौ॥
श्रियः श्रीरपि लोकानां दुःखोद्धरण हेतवे.
हनूमते ददौ मन्त्रं सदा रामाङ्घ्रिसेविने।
ततस्तु ब्रह्मणा प्राप्तो मुह्यमानेन मायया,
कल्पान्तरे तु रामो वै ब्रह्मणे दत्तवानिमम्॥
मन्त्रराज जपं कृत्वा धाता निर्मातृतां गतः,
त्रयी सारमिमं धातुर्वशिष्ठो लब्धवान्परम्।
पराशरो वशिष्ठाच्च मुद्रा संस्कार संयुतम्,
मन्त्रराजं परं लब्ध्वा कृतकृत्यो बभूव ह॥

Scanned by CamScanner

पराशरस्य सत्पुत्रो व्यासः सत्यवती सुतः,
पितुः षडक्षरं लब्ध्वा चक्रे वेदोपबृंहणम् ।

व्यासोऽपि बहुशिष्येषु मन्वानः शुभयोग्यताम्,
परमहंसवर्य्याय शुकदेवाय दत्तवान् ।।

शुकदेव कृपापात्र ब्रह्मचर्य्य व्रते स्थितः,
नरोत्तमस्तु तच्छिष्यो निर्वाण पदवीं गतः ।

स चापि परमाचार्य्ये गङ्गाधराय सूरये,
मन्त्रं परमं तत्वं राममन्त्रं प्रशस्तवान् ।।

गङ्गाधरात्सदाचार्य्यस्ततो रामेश्वरो यतिः,
द्वारानन्दस्ततो लब्ध्वा परब्रह्म रतोऽभवत् ।

देवानन्दस्तु तच्छिष्यः श्यामानन्दस्ततोऽगृहीत,
तत्सेवया श्रुतानन्दश्चिदानन्दस्ततोऽभत् ।।

पूर्णानन्दस्ततो लब्ध्वा श्रियानन्दाय दत्तवान्,
हर्य्यानन्दो महायोगी श्रियानन्दाङ्घ्रिसेवकः ।

हर्य्यानंदस्य शिष्यो हि राघवानन्द इत्यसौ,
यस्य वै शिष्यतां प्राप्ते रामानन्दस्वयंहरिः ।।

तस्मात्सुरसुराख्यस्तु ततो माधव संज्ञकः,
गरीबाख्यस्ततःप्राप्तो लक्ष्मीदासस्ततःपरम् ।

तस्माद्गोपालदासस्तु नरहरिदासस्ततः,
श्रीमान् केवलरामश्च ततः प्राप्तषडक्षरम् ।।

श्रीदामोदरदासाख्यः शिष्यस्तस्यमहामतेः,
साधुसेवी दयायुक्तः सदाचारेषु निष्ठितः ।

तस्माद् हृदयरामस्तु विरक्तश्च गुणालयः,
कृपारामोऽपि वै तस्माद् रत्नदासस्ततोऽभवत् ।।

तस्मान्नृपतिदासस्तु रामभक्तोऽनुसूयकः,
तस्माच्छङ्करदासो हि रामनाम प्रकाशकः ।

तस्माज्जातो महाराजो जीवारामेति संज्ञकः,
शुभस्थाने चिराणाख्ये राजते रसिकाग्रणीः ।।

Scanned by CamScanner

तस्य सम्बंध सम्भूतो महाराजः प्रतापवान्,
साकेताख्ये पुरे रम्ये विरराज महाप्रभुः।
सीतारामौ प्रददतुः तस्य नाम विलक्षणम्,
युगलानन्यशरणेति विदितं पृथिवीतले ।।
तस्यानन्तकल्याणगुणाः ख्याताः विलक्षणाः,
स्वभावं तस्य सौशील्यं कारुण्यं कटुवर्जितम्।
सौन्दर्य्यं तस्य लावण्यं माधुर्य्यं रसवर्द्धनम्,
तस्मिन्नेव प्रकाशंते तथा सीतापतौ गुणाः ।।
प्रवक्तुंनाप्यलङ्कोऽपि तस्य माहात्म्यमुत्तमम्,
नमस्तस्मै नमस्तस्मै नमस्तस्मै नमो नमः।
तस्य शिष्यो महाप्राज्ञो रसिकःसर्वधर्मवित्,
श्रीजानकीवरशरणः प्रख्यातो जगतीतले ।।
सदा गुरूपदेशेषु नैष्ठिकश्चापि साधुषु,
वक्ता बृहस्पतिःसाक्षात् सहिष्णुत्वे महीसमः।
सीतारामरसानाञ्च वर्द्धको भेदभेदकः,
छेदकः संशयानाञ्च रसराज प्रवर्द्धकः ।।
दयितः सर्वभूतानां राममन्त्रप्रदायकः,
गुरुवाक्यस्य तत्वज्ञः वास्तव्यः सरयूतटे।
लक्ष्मणाख्य प्रकोटे तु सीतारामस्य सन्निधौ,
गुरु सन्निकटे तत्र क्षेत्र वासे च सुष्ठुधीः।।
तच्छिष्यो गुरुनिष्ठःसत् कविः काव्यविशारदः,
योगी श्रीरामवल्लभाशरणो रामसेवकः।
सद्गुरु सदने रम्ये शोभिते सरयूतटे,
तस्मिन्वसति वै धीरो गानविद्याविचक्षणः।।
तच्छिष्योऽभूत् महायोगी, साक्षात्कृतमरुत्सुतः,
रामकृपालुशरणः श्रीमान् साधुवल्लभः।
श्रीसीतारामशरणस्तस्मात् प्राप्तषडक्षरः,
निष्णातः सर्वशास्त्रेषु वाक्पटुत्वेगिरांपतिः ।।

१– अनन्त श्रीरामजी महाराज
२– अनन्त श्रीजानकी जी महारानी
३– अनन्त श्री हनुमान् जी महाराज
४– अनन्त श्रीब्रह्माजी महाराज
५– अनन्त श्री वशिष्ठ जी महाराज
६– अनन्त श्री पराशर जी महाराज
७– अनन्त श्री व्यासजी महाराज
८– अनन्त श्री शुकदेव जी महाराज
९– अनन्त श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज
१०– अनन्त श्री गंगाधराचार्य्य जी महाराज
११– अनन्त श्री सदाचार्य्य जी महाराज
१२– अनन्त श्री रामेश्वराचार्य्य जी महाराज
१३– अनन्त श्री द्वारानन्द जी महाराज
१४– अनन्त श्री देवानन्द जी महाराज
१५– अनन्त श्री श्यामानन्द जी महाराज
१६– अनन्त श्री श्रुतानन्द जी महाराज
१७– अनन्त श्री चिदानन्द जी महाराज
१८– अनन्त श्री पूर्णानन्द जी महाराज
१९– अनन्त श्री श्रियानन्द जी महाराज
२०– अनन्त श्री हर्य्यानन्द जी महाराज
२१– अनन्त श्री राघवानन्द जी महाराज
२२– अनन्त श्री स्वामी रामानन्द जी महाराज
२३– अनन्त श्री सुरसुरानन्द जी महाराज
२४– अनन्त श्री माधवानन्द जी महाराज
२५– अनन्त श्री गरीबानन्द जी महाराज
२६– अनन्त श्री लक्ष्मीदास जी महाराज
२७– अनन्त श्री गोपालदास जी महाराज
२८– अनन्त श्री नरहरिदास जी महाराज
२९– अनन्त श्री केवलकूवाराम जी महाराज

Scanned by CamScanner

३०– अनन्त श्री दामोदरदास जी महाराज

३१– अनन्त श्री हृदयराम जी महाराज

३२– अनन्त श्री कृपाराम जी महाराज

३३– अनन्त श्री रत्नदास जी महाराज

३४– अनन्त श्री नृपतिदास जी महाराज

३५– अनन्त श्री शंकरदास जी महाराज

३६– अनन्त श्री जीवाराम जी महाराज
(श्री युगलप्रियाशरण जी महाराज)

३७– अनन्त श्री युगलानन्यशरण जी महाराज

३८– अनन्त श्री जानकीवर शरण जी महाराज

३९– अनन्त श्री रामवल्लभा शरण जी महाराज

४०– अनन्त श्री रामकृपाल शरण जी महारज

४१– अनन्त श्री सीताराम शरण जी महाराज

मोह मद मात्यो, रात्यो कुमति कुनारिन सों,
बिसारि लोक–बेद लाज, आंकरो अचेतु है।
भावै सो करत, मुँह आवै सो कहत, कछु
काहू की सहत नाहिं, सरकस हेतु है॥
'तुलसी' अधिक अधमाई हू अजामिल तें,
ताहू में सहाय कलि कपट निकेतु है।
जैबे को अनेक टेक, एक टेक ह्वै बे को, जो
पेट प्रिय पूत हित रामनामु लेतु है॥

Scanned by CamScanner

अनन्त श्री स्वामी युगलानन्य शरण जी महाराज की नाम निष्ठा

स्वामी श्रीसीतारामशरण जी महाराज

प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद आचार्य पीठाधीश्वर स्वामी श्रीयुगलानन्य शरणजी महाराज की नाम निष्ठा समस्त भक्त समाज में अत्यन्त प्रसिद्ध है। स्वामीजी महाराज के चौरासी ग्रन्थों में नाम के गंभीर रहस्य भरे हुए हैं। पूज्य गोस्वामी जी महाराज के पश्चात् श्रीरामानन्द सम्प्रदाय में स्वामीजी एक अद्वितीय महापुरुष हुये जिन्होंने सम्प्रदाय को अपनी लेखनी से विपुल साहित्य प्रदान किया। आज भी श्रीअयोध्या, मिथिला एवं चित्रकूट धामों में श्रीस्वामीजी के ग्रंथों के आधार पर नाम जापक सन्त श्रीनाम की साधना में निरत हैं। उनके ग्रंथों में ऐसा चमत्कार है कि जो एकबार गंभीरता से पढ़ लेगा वह अवश्य नामनिष्ठ हो जाएगा।

श्रीनाम में अनन्य अनुराग प्रदान करने वाला श्रीमहाराज जी का श्रीनाम कान्ति ग्रन्थ वस्तुतः अत्यन्त अद्भुत है। एकबार श्रीराम-नाम का उच्चारण करने वाले बड़भागी के ऊपर श्री महाराज जी बलिहारी जाते हैं। त्रिदेवों से पूजित उसकी महिमा अवर्णनीय है। नाम जापक नाम के बल पर श्रीअवधबिहारी को वश में कर लेते हैं— 'एकबार जो नाम बदे ·· ·· ····· नामहिं बल बस कियो अवधबिहारी है।' कानों द्वारा नाम श्रवण करें, रसना से नाम जप करे, हाथों से कागज अथवा तुलसीपत्र पर श्रीसीताराम नाम लिखे, नेत्रों से श्रीनाम का ध्यान करे। इस प्रकार प्रत्येक इन्द्रियों से नाम रस का रसास्वादन करना चाहिये 'श्रवन सुने सतनाम ········· संसृति से ह्वै तहँ छपिये'। इस प्रकार नाम कान्ति में श्रीनाम महिमा का वर्णन अत्यन्त विस्तार से पूज्य श्रीमहाराजजी ने किया है किन्तु आपके अन्य ग्रन्थों में श्रीनाम निष्ठा के अनेक उदाहरण दर्शनीय एवं मननीय हैं।

मनबोध शतक में श्रीमहाराज जी लिखते हैं कि नाम को साधन मानना एक नामापराध है—

"साधन माने नाम को साध्य करे कछु और।
ते नर मूरख मन्दमति, तिनहिं न नरकहुँ ठौर॥

वह मूर्ख है जो नाम जप द्वारा अन्य किसी वस्तु की साधना करता है। नाम को साधन मानकर लोक परलोक की साधना करने वाले अपराधी हैं। अतः उनको नरक की प्राप्ति सम्भव है। श्रीनाम

Scanned by CamScanner

महाराज को साध्य वस्तु जानकर संयमपूर्वक छह मास यदि नाम स्मरण करें तो अवश्य श्रीसीताराम जी का दर्शन हो सकता है। संयम में चार वस्तुओं पर अधिक बल दिया गया है—एक तो मौन रहकर नाम जप करे अर्थात् वाणी से अन्य वार्तालाप न करके केवल नाम का ही उच्चारण करें। दूसरा एकान्त वास कर नाम जप करें। तृतीय स्वल्पाहार करें। वैसे नाम जापक के लिये छह कंटक हैं—

"यह षट् कंटक छेद कर, षष्ट मास जपु नाम।
अवसि मिले सियराम तेहि, पावै पर विश्राम ॥

लय, विक्षेप, कषाय, रसाभास, नामापराध, सुकृतजन्य विघ्न—इन छह कंटकों को काटकर यदि छह मास एक स्थान में बैठकर नाम जप का अनुष्ठान किया जाय तो अवश्य प्रभु की कृपा प्राप्त होगी। श्रीसीताराम सनेह वाटिका में श्रीनामानुरागियों की प्रीति रीति का वर्णन किया है—'नाम अनुरागिन की रीति मन पार है, रहे संक तंक बिन अचल अडोल नित ········· युगल अनन्य मेरी मति न पहुँचि सकै, नाम अनुरागिन की रीति मन पार है ॥

जो प्रेमी प्रतिदिन पचीस हजार नाम जप करते हैं उनका सदा मंगल होता है। जो पचास हजार जप करते हैं उनकी पूजा देवतागण करते हैं। जिन बड़भागी नाम जापकों के एक लाख नाम के नियम हैं वे तो साक्षात् प्रभु प्रेम प्राप्त कर कृतार्थ बने रहते हैं। जो संख्या से पार होकर निरन्तर नाम जपते रहते हैं उनकी महिमा का वर्णन कौन कर सकता है ?— "सहस पचीस लों जपत जौन जीह नाम ········ जाके सुखसागर के रटन हमेशे हैं।" नाम तो प्रभु के अनन्त हैं किन्तु सभी नामों में राजा श्रीराम नाम हैं—"नाम तो अनन्त तामें राम नाम भूप हैं ······· श्रीयुगल अनन्य साँच बदत बजाय बात, नाम तो अनन्त तामें राम नाम भूप हैं।"

श्रीमहाराज जी कहते हैं कि अन्य नाम दीपक व मशाल के समान हैं किन्तु श्रीराम नाम हजारों सूर्य के समान हैं। अन्य नाम मिश्री एवं कलाकन्द के समान हैं, श्रीरामनाम साक्षात् अमृत के समान हैं। अन्य नाम शरीर के समान हैं परन्तु श्रीरामनाम पंचप्राण के समान हैं। अन्य नाम बाराती के समान हैं तथा श्रीसीतारामनाम साक्षात् दुलहा दुलहिन के समान हैं—"और नाम दीपक मशाल-तारा-शशि सम, रामनाम सूर शत सहस समान रे। और नाम सिता कन्द मधु मीठ मिसरी सो, रामनाम स्वच्छ सुधासार रसखान रे ॥ और नाम तन धन

Scanned by CamScanner

सदृश सुभायमान, रामनाम प्रबल प्रधान पंच प्रान रे। श्रीयुगल अनन्य और नाम हैं बराती सम, रामनाम दम्पती बिचारु त्याग मान रे।

इस प्रकार पूज्यपाद श्री बड़े महाराजजी की श्रीयुगल नाम निष्ठा अवर्णनीय है जिसका दर्शन नामकांति में विशेष रूप से होता है।

श्रीसद्गुरु कृपा कलाप

सन्मुख होत जाके आनन्द उदोत होत,
मिटत कुअंक भाल रंकन की नकशैं।
पावन पदुम पद परम पराग परे,
फैलति प्रभाव भूरि सन्त कवि शकशैं॥
दूर होत जनम अनेकन की बाधा दोह,
मिटति अशेष भानुनन्दन की अकशैं।
श्रीयुगल अनन्य शरण सेबकन मण्डलन,
अखण्डल की साहिबी कमण्डल से बकशैं॥

रामु हैं मातु, पिता, गुरु बन्धु, औ,
संगी, सखा, सुत, स्वामि सनेही।
राम की सौंह, भरोसो है राम को,
राम रँग्यो, रुचि राच्यो न केही॥
जीअत राम, मुएँ पुनि राम,
सदा रघुनाथहि की गति जेही।
सोई जिये जग में 'तुलसी',
नतु डोलत और मुए धरि देही॥

श्री नाम कान्ति

पूज्यपाद स्वामी श्री युगलानन्यशरण जी महाराज

श्रीगुरु चरन सरोज मधुर मकरंद मनोहरताई ।
मन मधुकरहिं पवाय सहित रुचि सुचि सनेह सरसाई ।।
सर्वोपरि श्रीनाम कान्ति कमनीय कहौं सुखदाई ।
युगलानन्यशरण सर्वस सद संपति नाम बड़ाई ।। १ ।।

अर्थ—श्रीसद्गुरुवन्दना से श्री नाम कान्ति का शुभारम्भ करते हुए अनन्त श्री विभूषित स्वामी श्रीयुगलानन्यशरणजी महाराज लिखते हैं कि श्रीगुरुदेव के चरणकमल के मधुर मनोहर मकरन्द का अपने लुब्ध मन मधुप (भ्रमर) को अत्यन्त पवित्र रुचि पूर्वक पान कराके तथा स्नेह में सराबोर करके–अर्थात् श्रीसद्गुरु कृपा बल से प्राप्त नाम स्नेह द्वारा सर्वश्रेष्ठ अत्यन्त सुन्दर व सुखद श्रीनाम कान्ति का वर्णन करता हूँ क्योंकि वह मेरा सर्वस्व है तथा नाम महिमा ही सज्जनों की सत्य सम्पत्ति है ।।१।।

नाम परम अभिराम कामप्रद सदमत दृग से देखो ।
श्रीसीतावर नाम महामनि उजियारी जग लेखो ।।
नाम सुजस गुनगान करो नित नाम प्रताप परेखो ।
युगलानन्य नाम सुमिरन बिन नर पाहन पबि पेखो । २।।

यदि विवेक दृष्टि, शास्त्र सम्मत दृष्टि से देखो तो श्रीसीताराम नाम परम रमणीय व समस्त कामनाओं की पूर्ति करने वाला है । श्रीसीतावर नाम महामणि के प्रकाश से ही समस्त जगत् को प्रकाशित समझो । श्रीनाम के सुयश का प्रतिदिन गुणगान करते हुए नाम के प्रभाव को पहिचानो । श्री युगलानन्यशरण जी महाराज कहते हैं कि श्रीनाम स्मरण के बिना मनुष्य को पत्थर के समान जड़बुद्धि और वज्र के समान कठोर हृदय समझो ।

जय श्रीयुगलकिशोर नाम चितचोर चैन चित दानी ।
जयति प्रियापरतंत्र लाल हिय हरन रहस रसखानी ।।
जयति सरस उज्ज्वल उतंग गुन घन अनुराग बितानी ।
युगलानन्यशरण जीवन जय विदित बिभव बरबानी ।।३।।

Scanned by CamScanner

श्री युगलकिशोर श्रीसीतारामजी के नाम की जय हो जिनका नाम चित्ताकर्षक व चित्त को शान्ति देने वाला है । श्री प्रिया जू के परवश श्रीलालजू के हृदय को हरण करने वाले तथा गोपनीय रहस्यों के खानि–कोष श्रीनाम महाराज की जय हो। ये अत्यन्त सरस, उज्ज्वल व श्रेष्ठ गुण समूह एवं अनुराग को बढ़ाने वाले हैं तथा श्रेष्ठ गुण घटा–बादल से अनुराग वर्षण करने वाले श्रीनाम की जय हो ।

श्रीमहाराज जी के जीवन श्रीनाम महाराज की जय हो जिसका वैभव श्रुति शास्त्र एवं सन्तों की महावाणियों में प्रसिद्ध है ॥३॥

श्रीसीतावर नाम मुबारक सादी सहर सोहावन है ।
परमानन्द परेश प्यार परतीति प्रभा परचावन है ॥
अनुभव अमल पार प्रीतम छबि छटा-घटा झलकावन है ।
युगलानन्य नाम सुमिरन बिन बिबिध बात बहकावन है। ४॥

श्रीसीतावरजू का नाम धन्य है और आनन्दोत्सव से पूर्ण सुन्दर नगर है। अथवा धन्य है श्रीसीतावरजू का नाम जो सीधा सुलभ सुन्दर प्रातः काल (प्रभात) है। परमानन्द दायक श्रीनाम महाराज भगवत्प्रेम व विश्वास के प्रकाश से परिचय करने वाले हैं । प्रभु के श्रीनाम के निर्मल अनुभव में परात्पर प्रभु की सुन्दर झाँकी रूपी घटा को प्रकट करने वाले हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीनाम स्मरण के बिना अन्य विविध चर्चाएं धोखा–भ्रम हैं ॥४॥

तीरथ तप साधन कदंब कई कोटि किए क्या हासिल है ।
शीत उष्ण सिर सदा सहे से सुख शोभा भव भासिल है ॥
गिनती कौन कहे दानन की नाम हीन घुन घासिल है ।
युगलानन्य सीयवल्लभ हित फकत नाम ही वासिल है ॥५॥

तीर्थाटन तप आदि अनेक कोटि साधन समूह कर लेने से क्या प्राप्त हुआ है ? सदा सिर पर शीत उष्ण सहने से जो सुख शोभा है वह लोक में प्रकट है। शीत उष्ण की जो सहिष्णुता है वह तपश्चर्या की प्रसिद्धि संसार में फंसाने वाली है । दान आदि की गिनती कौन कह सकता है किन्तु नाम स्मरण के बिना वह घुन लगी हुई वस्तु की भाँति खोखला व घास के समान तुच्छ है। श्रीमहाराज जी कहते हैं कि श्री सीताराम जी की प्राप्ति में केवल नाम ही सहायक है ॥५॥

शेष शीश धारे धरनी निज नाम प्रताप प्रभा तें ।
मारतण्ड ब्रह्मण्ड विकासित नाम प्रभाव सुभा तें ॥

Scanned by CamScanner

सुचि सीतल पवमान गमन गुन निखिल सुनाम सभा तें ।
युगलानन्यशरण जपिये जग जीवन नाम प्रभा तें ।।६।।

श्रीनाम के प्रताप से ही शेष भगवान् सिर पर पृथ्वी को धारण करते हैं । नाम की प्रभाव आभा से ही सूर्य ब्रह्माण्डों को प्रकाशित कर रहें हैं। सुन्दर श्रीनाम के विचार (स्मरण) से ही चन्द्र की शीतलता वायु की गतिशीलता आदि निखिल गुण विद्यमान हैं।

श्री महाराज जी कहते हैं समस्त जगत् व जीवन का आधार नाम प्रभा से ही है उस श्रीनाम का जप करिये ।।६।।

होय-होय मदहोश खूब रसना से नाम उचारो ।
खोय-खोय ख्वाहिश खवास बिस्वास सुबास बिचारो ।।
गोय-गोय गुन ज्ञेय नाम अनुराग दिमाग सम्हारो ।
युगलानन्यशरण नामहिं भजु तजु तम त्रिगुन पसारो ।।७।।

खूब मदहोश हो होकर-अत्यन्त तन्मय होकर जिह्वा से श्रीनाम का उच्चारण करो । कामना की दासता को समाप्त करके विश्वास की सुगन्ध पर बिचार करो । ज्ञेयजानने योग्यनाम के गुण का अनुचिन्तन बारम्बार ध्यान करके बिचार पूर्वक अनुराग को बढ़ाओ मस्तिष्क में अनुराग के प्रति वृद्धि करो । श्री महाराज जी कहते हैं त्रिगुणात्मक अन्धकारमय सांसारिक फैलाव को त्याग कर नाम का ही भजन करो ।।७।।

नाम प्रताप अताप ताप तम कठिन कलाप मिटावेगो ।
काम कलाम दाम बामादिक दिशि से दिल सिमटावेगो ।।
श्याम धाम दुति राम दान दै पवि पन पीर पिटावेगो ।
युगलानन्य नाम करुना कल चाह ललित लिपटावेगो ।।८।।

नाम के शीतल प्रताप (प्रभाव) से त्रिताप के कठिन अंधकार समूह को मिटा देंगे । कामनाओं की चर्चा, दाम (धन) स्त्रियादिक सांसारिक दिशा से दिल को समेट लेंगे—हटा लेंगे । कंचन कामिनी आदि कामनाओं की चर्चा से दिल हटा लेंगे । श्रीनाम महाराज श्यामल (श्याम कान्ति सम्पन्न) कोमलाङ्ग श्रीराम को प्रदान करके वज्र सदृश पीड़ाओं को मार भगाएँगे । श्रीमहाराजजी कहते हैं नाम मधुर करुणा द्वारा सुन्दर चाह में लिपटावेंगे । नाम की करुणा से ही नामासक्ति प्राप्त होगी ।।८।।

Scanned by CamScanner

होके गरक नाम सागर में फर्द पयाल फन फाड़ो।
रोके रैन ऐन बिह्वल वपु नाम रमत छल छाड़ो॥
धोके दिल दुर्वास आस उर बीच नाम धुज गाड़ो।
युगलानन्यशरण सोके सुख सहित प्रपंच पछाड़ो।९॥

भगवन्नाम समुद्र में डूबकर अभिमान व चतुराई की कला के पन्ने को फाड़ डालो नष्ट कर दो। रात दिन रोकर अश्रुपूरित होकर विह्वल वपु-व्याकुल तन से नाम में रमण करते हुए छल कपट का परित्याग कर दो। दिल से दुर्वासना व कामनाओं को धोकर हृदय के मध्य में नाम की ध्वजा को गाड़ दो। श्री महाराज जी कहते हैं सुख पूर्वक योगनिद्रा में सोकर-पूर्ण निश्चिन्त होकर समस्त प्रपंचों को पछाड़ दो पराजित करो ॥९॥

नाम-विश्वास, भरोसे की दृढ़ता का यहाँ वर्णन है।

नामानन्य प्रपन्न धन्य सो जिनकी गति मति ऐसी है।
बांकी कहनि रहनि कसरत गुन गहनि चहनि निज नैसी है॥
प्रीति प्रनय परतीति एकरस श्री मजनू लैले सी है।
युगलानन्य इश्क वालों की कीमत चहिए जैसी है॥१०॥

वह प्रपन्न- शरणागत नामानन्य नामानुरागी धन्य है जिनकी गति चेष्टा व मति बुद्धि-धारणायें ऐसी हैं-नीति पूर्वक जिनकी सुन्दर वाणी व आचरण तथा अभ्यास और गुण ग्रहण शीलता की अपनी चाह है। जिनका स्नेह सम्बन्ध एवं विश्वास एक रस श्री मजनू, लैला-आशिकों के समान है। श्री महाराज जी कहते हैं प्रेमियों की कीमत--मूल्यांकन जैसा चाहिए वैसा ही है ॥१०॥

निरन्तर चिन्तन का स्पष्टीकरण इस पद्य में है।

बात बताने से हासिल क्या जब तक नाम न जपते हो।
कथनी का कूड़ा बटोरि के मोद मानि खल खपते हो॥
नाम सनेह सहित संतन की कथा सुने पर कंपते हो।
युगलानन्यशरण पंचानन निदरि स्याल पहं छपते हो॥११॥

जब तक स्वयं भगवन्नाम का जप नहीं करते हो तब तक कथन मात्र से क्या उपलब्ध होगा? (पर उपदेश कुशल बहुतेरे) इस प्रकार कथनी वाक्समुदाय का कूड़ा बटोर कर प्रसन्न होते हो एवं अपना समय बर्बाद करते हो (व्यर्थश्रम करते हो।) श्रीनाम स्नेह पूरित सन्तों की

Scanned by CamScanner

कथा (जीवन गाथा) सुनने से घबड़ाते--भयभीत होते हो। श्रीमहाराज जी कहते हैं सिंह की रहनी का निरादर करके सियारों में छिपते हो। जगद्विश्वासी बनते हो ॥११॥

श्रीशंकर बरबीर सुधन पाये पर प्रेम न करते हैं।
हाय बड़ा अफसोस निकट चिन्तामनि भूखे मरते हैं॥
संतन से सोहबत साबित सजि नाम तरफ नहिं ढरते हैं।
युगलानन्य समान पसू पांवर सिस्नोदर भरते हैं॥१२॥

श्रीशंकरजी व श्री महावीर जी के सुन्दर धन भगवन्नाम प्राप्त होने पर भी प्रेम नहीं करते हैं। हाय (खेदपूर्वक) (आश्चर्य के साथ दुःख है) अत्यन्त खेद है कि चिन्तामणि के समीप रहने पर भी भूखे मरते हैं सन्तों का संग (सिद्ध) करके नाम के प्रति रुचि नहीं करते हैं। श्री महाराज जी कहते हैं नीच पशु की भाँति केवल इन्द्रियों को तृप्त करते हैं ॥१२॥

द्विज देवता मुनीश भए क्या काम कलपना नासेगो।
छन्द प्रबन्ध योग जप तप से परतम प्रभा प्रकासेगो॥
कोटिन करो उपाय हाय हरिबे हित वृथा बिमासेगो।
युगलानन्यशरण सुनाम बिन रमे न कंज बिकासेगो॥१३॥

ब्राह्मण, देवता या मुनि हो जाने से क्या कामनाएँ विनष्ट हो जाएँगी ? छन्द, प्रबन्ध (स्वाध्याय) या योग, जप, तप से परमात्मा का, भगवत्साक्षात्कार प्रकाश का दर्शन होगा ? पीड़ा-दुःख निवृति के लिये करोड़ों उपाय करो किन्तु सब व्यर्थ हो जाएंगें। श्रीमहाराज जी कहते हैं सुन्दर नाम में बिना रमे हृदय कमल विकसित नहीं होगा अर्थात् हर्ष प्राप्त नहीं होगा ॥१३॥

कठिन काल कलि मलिन महोदधि मांझ मगन हो जावोगे।
साधन सकल समाश्रित हूँ पर कबहूँ कढ़न न पावोगे॥
जो कुछ सुकृत पूर्व संचित तिसहूँ को भले बहावोगे।
युगलानन्य नाम करुनाकर रटत समुंद सुखावोगे॥१४॥

श्रीनाम बिना कठिन कराल कलिकाल के मलिन पाप समुद्र में डूब जाओगे। समस्त साधनों का आश्रय लेने पर भी कभी भी उस समुद्र से निकल नहीं पाओगे। हाँ जो कुछ पूर्व के संचित एकत्र पुण्य है उनको भी इसी में बहा दोगे।

Scanned by CamScanner

सम्भावना है कि वह भी इसमें नष्ट हो जाएगा। श्रीमहाराज जी कहते हैं करुणानिधान श्रीनाम के रटने से ही इस समुद्र को सुखा पाओगे ॥१४॥

वर वल्लभ बिनोद बागन की सैर करन जो चाहत हौ।
तौ काहे नाहीं प्रपंच परित्यागि नाम अवगाहत हौ ॥
देखो अन्दर दृष्टि खोलि केहि हित बानी बकि बाहत हौ।
युगलानन्यशरण नामहि से क्यों न नेम निर्बाहत हौ ॥१५॥

यदि प्रियतम प्रभु की विहार वाटिका (प्रमोदवन) में भ्रमण करना चाहते हो तो क्यों नहीं प्रपंच का परित्याग करके श्री नाम में अवगाहन करते हो ? अन्तर्दृष्टि (विवेक के नेत्र) खोलकर हृदय में देखो किसके लिए व्यर्थ की बकवास करते हो ? श्री महाराज जी कहते हैं श्रीनाम से ही क्यों नहीं नियम का निर्वाह करते हो ॥१५॥

एक बार जो नाम बदे तिस ऊपर बहु बलिहारी है।
उसकी महिमा अगम कहन लायक नहिं सुमति हमारी है॥
पूजनीय सोई सबहीं बिधि-बिधि बैकुंठ पुरारी है।
युगलानन्यशरण नामहि बल बस कियो अवधबिहारी है॥१६॥

एक बार भी जो श्रीनामोच्चारण करता है उसके ऊपर मैं बार-बार बलिहार जाता हूँ। उस नाम लेने वाले की महिमा अगम है हमारी इतनी सुबुद्धि नहीं है कि उसकी महिमा कह सकें। ब्रह्मा विष्णु महेश त्रिदेवों द्वारा वह सभी प्रकार से पूजनीय है। श्री महाराज जी कहते हैं श्रीनाम के बल से ही श्री अवध बिहारी श्रीराम जी को वश में किया है ॥१६॥

नाम नवल अभिराम जीह जपि जग जड़ जन्तु प्रतापी।
तीनों काल बिदित वैभव बुध बरने बेद अलापी ॥
सियवल्लभ संबन्ध स्वच्छ सर सुन्दर सुघन कलापी।
युगलानन्यशरण अनुरागी नाम निरन्जन जापी ॥१७॥

नित्य नवीन सुन्दर श्रीनाम, जिह्वा से जपकर जगत् में जड़ जन्तु भी प्रभावशाली हैं। तीनों काल में जिनका वैभव प्रसिद्ध है। विद्वान सन्त जिसकी महिमा का वर्णन करते हैं तथा वेद गान कर रहे हैं। श्रीसीताराम जी का सम्बन्ध नाम से उसी प्रकार है जैसे स्वच्छ सुन्दर सरोवर का सम्बन्ध सुन्दर बादलों से व मयूर का घन से है।

Scanned by CamScanner

जिस प्रकार जल वृष्टि से सरोवर की शोभा तथा वृद्धि होती है तथा मयूर के मन में आह्लाद की सृष्टि होती है उसी प्रकार नाम से नामी के मन में सुन्दर आह्लाद होता है। श्री महाराज जी कहते हैं इसीलिए अनुरागी जन निरन्जन भगवन्नाम का जप करते हैं ॥१७॥

परिकर प्रेम परत्व प्रकासी अविनाशी रस रासी हैं।
काशीपति सुमिरत संतत गति खासी देत सुधासी हैं॥
फांसी काल कराल बिमोचन भासी भवन निवासी हैं।
युगलानन्यशरण दासी सब विद्या बरन बिकासी हैं ॥१८॥

श्रीनाम सेवक में अपने जन में प्रेम के परत्व को प्रकाशित करने वाले अविनाशी न क्षीण होने वाले अनन्त रस की राशि हैं। काशीपति भगवान् शंकर जिस श्रीनाम का निरन्तर स्मरण करते हैं तथा जीवों को अमरत्व (मुक्ति) प्रदान करते हैं। कराल काल (मृत्यु) के फाँसी–फन्दे से मुक्त कराने वाले तथा निजधाम व धामी का प्रकाश करने वाले हैं। श्री महाराज जी कहते हैं चिन्मय धाम का निवास देने वाले हैं समस्त विद्याएँ जिनकी दासी हैं वह श्रीनाम महाराज वर्णों का विकास करने वाले वर्णों के मुकुटमणि हैं ॥१८॥

श्रीसीतावल्लभ सुनाम सुख खान बाम दुति दमते हैं।
वैदिक वाद बिहार लौकिकी कठिन काटि जिय जमते हैं॥
बृजिनि विकल्प अनल्प जल्प तम तल्प तबोयत समते हैं।
युगलानन्यशरण अग जग में भीतर बाहर रमते हैं ॥१९॥

श्रीसीतापति का सुन्दर सुख खानि श्रीनाम स्वर्णिम आभा से सम्पन्न हो चमकता दमकता है। कठिन वैदिक वाद–विवाद और लौकिक व्यवहार को निवृत्त करके श्रीनाम महाराज हृदय में स्थित हो जाते हैं। भ्रम, अत्यधिक व्यर्थ चर्चा तथा अज्ञान, शय्या सुखादि पाप से मन को रोकते हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं स्थावर जङ्गमात्मक संसार में श्रीनाम भीतर–बाहर रमण करते हैं ॥१९॥

नाम सेवाय जाय साधन सब आयबाय बहु बदते हैं।
दुविधा दाय ववाय नहीं खर खाय खराबी हद ते हैं॥
नामी संग सजाय ध्याय पद पदुम प्रेम बेहद ते हैं।
युगलानन्यशरण बिन बूझे व्योम बाटिका फंदते हैं ॥२०॥

Scanned by CamScanner

श्रीनाम के बिना सब साधन व्यर्थ है केवल व्यर्थ बकवास करते हैं। सन्देह सम्पत्ति को न दबाकर अर्थात् सन्देह की निवृत्ति न करके सन्देह के पीछे पड़े हुए हैं ये बुराई सीमा तक पहुँच गई है। अर्थात् नाम के प्रति अविश्वासी हैं। नाम के बिना नामी (प्रभु) का संग प्राप्त करके उनके चरण कमलों का ध्यान व बेहद-असीम प्रेम चाहते हैं किन्तु श्री महाराज जी कहते हैं वे लोग बिना जाने ही अज्ञान पूर्वक आकाश उपवन को लाँघना चाहते हैं ॥२०॥

जीवन जान जुगल परिकर से सहित नाम में बसते हैं।
अमल अभेद अखेद नाम नामी अभ्यंतर लसते हैं॥
नाम सनेह सजे पावे प्रीतम सत्संग तरसते हैं।
युगलानन्य नाम रमने कारन हरदम कटि कसते हैं॥२१॥

प्राणधन युगल सरकार श्रीसीताराम जी निज परिकरों पार्षदों सहित नाम में निवास करते हैं। अर्थात् नाम के तात्पर्य हैं। निर्मल, अभिन्न, क्लेश रहित श्रीनाम नामी के अन्दर सुशोभित होते हैं अथवा नाम के अन्तर्निहित नामी हैं। नाम-स्नेह से युक्त प्रियतम प्रभु के सुन्दर अंग-अंग सतसंग के लिए तरसते हैं। श्रीमहाराज जी कहते हैं नामजापक श्रीनाम में रमण करने के लिए निरन्तर नाम स्मरण के लिए सदा कमर कसे रहते हैं ॥२१॥

व्यथा त्यागि अनुराग नाम तन मन बच जिकर जमाते हैं।
अखिल तत्त्वतर सार अर्थ मन मनन किए मुद माते हैं॥
नामी नाम एकता करि निज नाम सनेह समाते हैं।
युगलानन्य नाम करुना ते छविनिधि छबि झमकाते हैं॥२२॥

पीड़ा का परित्याग कर मन, वचन, कर्म से नाम में अनुराग कर नाम की चर्चा करते हैं। नामी के सम्पूर्ण श्रेष्ठ तत्त्व का सार जो नाम है उसके अर्थ का मन में मनन करके प्रसन्नता में निमग्न हैं। नामी और नाम की एकता स्वीकार करके नाम-स्नेह में डूबे रहते हैं। श्री महाराज जी कहते हैं श्रीनाम की करुणा से छविनिधि श्रीराम के सौन्दर्य का दर्शन करते हैं ॥२२॥

तौ लौं मन बन बीच द्विरद मदमस्त पापगन सेना है।
गाजत रहत गरूर गुमर युत बिचरत सतत सचैना है॥
जौ लौं परम प्रताप नाम पंचानन सुघुनि सुनै ना है।
युगलानन्यशरण भागत अविलम्बित रहत बनै ना है॥२३॥

Scanned by CamScanner

तब तक मन-जंगल के बीच मतवाले हाथियों के झुण्ड के समान पाप की सेना अत्यधिक अभिमान के साथ गर्जना करती हुई निश्चिन्तता पूर्वक सदा विचरण करती रहती है जब तक श्रीनाम के परम प्रताप की सिंहध्वनि नहीं सुनाई देता श्रीमहाराजजी कहते हैं सिंह गर्जना से हस्तिसमूह शीघ्र भाग जाते हैं वे रुक नहीं सकते । इसी प्रकार श्रीनाम गर्जना से पाप-सेना अविलम्ब भाग जाती है—समाप्त हो जाती है ॥२३॥

सकल सिद्धि नव निद्धि निहोरत नाम रमत जब जोहा ।
आसा असत असार भार तजि सजि पर प्रीति पपीहा ॥
पाँचों मुक्ति-भुक्ति नाना बिधि तिन हित सतत समोहा ।
युगलानन्यशरण नामहिं जपि होत विशेष अनीहा ॥२४॥

जब जिह्वा श्रीनाम में रमण करने लगती है अर्थात् नाम का रसास्वादन करने लगती है तब अष्ट सिद्धियाँ और नवों निधियाँ उनका निहोरा करती हैं, निवेदन करती हैं ।

नाम जापक मिथ्या साररहित कामनाओं के भार का त्यागकर पपीहे की भाँति पराभक्तिनिष्ठ होते हैं । निरन्तर नाम रटन करते हैं । पाँचों मुक्ति एवं सभी भुक्ति-भोग अनेक प्रकार से सदा उनके समीप रहते हैं । श्रीमहाराजजी कहते हैं श्रीनाम का सतत् स्मरण कर साधक इच्छारहित विशेष रूप से निष्काम हो जाता है ॥२४॥

धर्म अधर्म सर्म साधक सुर भूरुह बीज बिहारी ।
मुनि मानस का सार हंस वर अद्भुत बिसद बहारी ॥
छन्द छीरिनिधि मधुर महामनि परमानन्द प्रचारी ।
हनुमत हिय पंकज अलि सम श्रीयुगल नाम श्रमहारी ॥२५॥

श्रीनाम सन्देह रहित धर्म, सुख प्रदायक कल्पवृक्ष के बीज को वर्धन करने वाले हैं । मुनियों के मानस सर के श्रेष्ठ राजहंस के सदृश अभूतपूर्व व्यापक आनन्ददाता हैं । श्रीनाम काव्य क्षीरनिधि के मधुर चिन्तामणि (महामणि) व परमानन्द के प्रचारक हैं । श्री हनुमान् जी के हृदय-कमल-भ्रमर के समान श्रीयुगल नाम विश्रामदायक है ॥२५॥

चिद्घन रमत रूप राका रजनी चिन्तामनि चंदा ।
मोह मलीन मान मरदन हित प्रबल परेश सुछंदा ॥
सर्वोपरि रस एक बिलच्छन लसत अतर्क अमंदा ।
युगलानन्य सीयवल्लभ सुचि नाम हरत श्रमफंदा ॥२६॥

Scanned by CamScanner

चिद्घन–ज्ञानस्वरूप पूर्णिमा की रात्रि में चिन्तामणि चन्द्रमा श्रीनाम रमण करते हैं। मलिन मोह, अभिमान को (मर्दन) विनष्ट करने के लिए परेश श्रीनाम सशक्त, स्वतन्त्र हैं। सर्वश्रेष्ठ, एकरस, विलक्षण, तर्करहित, पूर्णतः सुशोभित है। श्री महाराज जी कहते हैं श्रीसीताराम जी का पवित्र नाम श्रम के बन्धन का हरण कर लेता है और परम विश्राम प्रदान करता है ॥२६॥

जरा मरा हराम तैसेहीं कोउ आराम उचारयो है।
कोऊ सरिततराम बिपिन बिचरामो बदन प्रचारयो है॥
सांकेतिक सम्बन्ध नाम सुनि करुनासिंधु उबारयो है।
युगलानन्यशरण निज दृढ़ मत नाम मांझ अब धारयो है॥२७॥

जरा, मरा हराम की भाँति ही किसी ने आराम का उच्चारण किया है। किसी ने सरिततराम का तो किसी ने जंगल में बिचरामः कह कर पुकार लिया। इस प्रकार संकेत के सम्बन्ध से नाम सुनकर ही करुणासिन्धु प्रभु ने उनका उद्धार किया है। श्रीमहाराज जी कहते हैं इन प्रमाणों से हमने भी नाम के प्रति अपनी मति दृढ़ करके अब उसे धारण कर लिया है॥२७॥

विप्र एक अबिबेक कर्म बल बारमुखी गृह गमनो।
ताके संग–रंग कीनो पर भयो चित्त बिच बिमनो॥
वाही समय बधिक सुक बेचत आय गयो दुख समनो।
युगलानन्यशरण द्विज हित गुनि गनिकहिं दियो सुमुकनो॥२८॥

एक ब्राह्मण अज्ञान से (कर्म के कारण) वेश्या के घर गया। उसके साथ विहार किया किन्तु चित्त ग्लनि से भर गया। उसी समय एक व्याध दुःख शमन करने हेतु शुक (तोते) को बेचने आ गया। श्री महाराज जी कहते हैं उस ब्राह्मण के कारण वेश्या ने वह सुग्गा खरीद लिया ॥२८॥

हे गनिके निज नाम राम अभिराम पढ़ाव हमेशे।
इह कहि गयो विप्र अपने गृह सहित बरन आवेशे॥
गनिका लगी शुकहिं इमि भाषन सिखवन नाम परेशे।
युगलानन्यशरण भूलो वह खान पान तन देशे॥२६॥

ब्राह्मण ने कहा हे गणिका ! श्रीराम के अभिराम श्रीनाम को इस सदा पढ़ाओ ऐसा कहकर वह विप्र उस भगवन्नाम के आवेश में

अपने घर चला गया। इधर वेश्या उसी प्रकार प्रभु के श्रीनाम का उच्चारण करना शुक को सिखाने लगी। श्रीमहाराज जी कहते हैं इस प्रकार वह अपने शरीर व खाने पीने की सुधि भी भूल गयी अर्थात् वह इतनी तन्मय हो गई कि शरीर दशा से ऊपर हो गयी ॥२६॥

सुन्दर सुचि श्रीरामनाम रस एक पढ़ावत सोई।
तन्मय भई नाम महिमा बल परम पावनी लोई ॥
एक बेर मोचन सरीर युग शुक गनिका नहिं गोई।
बिगत पाप गये धाम परम प्रभु युगल अनन्य सुदोई ॥३०॥

वह गणिका सुन्दर पवित्र श्रीरामनाम को एकरस निरन्तर सुग्गे को पढ़ाती थी। श्रीनाम के प्रताप से तन्मय हो गई तथा नाम महिमा के बल से परम पवित्र व दीप्तिमती हो गई। एक ही बार शुक व गणिका दोनों का शरीर त्याग हुआ यह बात छिपी नहीं है श्रीमहाराज जी कहते हैं निष्पाप होकर वे दोनों प्रभु के परम धाम चले गये ॥३०।

नाना भाँति समर तिन कारन बेदव्यास बखान्यो।
श्रीरघुवीर पारषद सह यमराज दूत ज्यों ठान्यो ॥
लीला भक्त प्रेम पोषन हित जगत जनावन जान्यो।
युगलानन्य जीति अंतक घर श्री साकेत पयान्यो ॥३१॥

श्रीरामजी के पार्षदों के साथ यमराज के दूतों का जिस प्रकार अनेक भाँति से वाक्‌युद्ध हुआ था उसका वेद व्यास जी ने वर्णन किया है। यह लीला जगत में भक्तों के प्रेम को पुष्ट करने के लिए प्रकट की गयी है ऐसा जानना चाहिए। श्रीमहाराजजी कहते हैं यमराज के दूतों को जीत कर वे श्री साकेत धाम पधारे ॥३१॥

सकल श्रुतिन शिरमौर नाम नारायणादि बिद गावैं।
तिन नामन ते कोटि अमित फलप्रद श्रीराम गनावैं ॥
सुकृत सुमुख से सहज कढ़त कटु पातक पुंज परावैं।
युगलानन्य नाम सिय-पिय के सम कहु कौन बतावैं ॥३२॥

समस्त श्रुति शिरोमणि भगवान् के श्री नारायणादि नाम का सुधीजन गान करते हैं किन्तु उन भगवन्नामों से कोटि गुणित फल प्रदान कराने वाले श्रीरामनाम हैं। एकबार भी सुन्दर मुख से श्रीराम नाम निकल जाय तो कठिन पाप समूह भाग जाते हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं श्रीसीतापति के श्रीनाम के समान किसको बतावें ?।३२॥

Scanned by CamScanner

कोटिन बार तेल धारा सम हरि बहु नाम उचारे ।
तुलना तऊ न होय सके सद्ग्रंथन मथि निरधारे ।।
जैसे सूर शशी सम समुझो होत न कबहूँ तारे ।
युगलानन्य सुनाम छोड़िबे नाहक ही पचि हारे ।।३३।।

करोड़ों बार तैलधारावत् निरन्तर अविच्छिन श्रीहरि के बहुत नामों उच्चारण करें किन्तु श्रीनाम से समता नहीं हो सकती यह सत् शास्त्रों का मन्थन करके निर्धारण किया गया है सोचो जिस प्रकार सूर्य, चन्द्र के समान कभी तारागण नहीं हो सकते हैं। श्रीमहाराजजी कहते है सुन्दर श्रीराम नाम को छोड़कर व्यर्थ अन्यत्र श्रम करके पच कर हार गये ।।३३।।

पक्षपात की बात नहीं निज नैनन से लखि लीजे ।
परखो प्रीति सजाय उभय पुनि रटत महामधु पीजे ।।
और नाम सुमिरत रसना दस बीस बार में छीजे ।
युगलानन्य सुनाम राम नित रटत जीह रस भीजे ।।३४।।

पक्षपात की बात नहीं हैं स्वयं अपने नेत्रों से देख लीजिये । परीक्षा करके देखो स्नेहनिष्ठ होकर दो अक्षर श्रीराम नाम का रटन करके मधुर रस–अमृत का पान करिये । अन्य नामों का स्मरण करने से दस–बीस बार में ही ये रसना थक जाती है । श्री महाराज जी कहते हैं सुन्दर श्रीराम नाम की रटन करने से जिह्वा रस से भींज जाती है—सिक्त हो जाती है ।।३४।।

और नाम बिपरीत बरन कल रहित कहे फलहानी ।
रामनाम कैसेहुँ कहो आनन्द लहो गुनखानी ।।
वेद पुरान प्रकट पेखो अति प्रचुर सुनाम कहानी ।
युगलानन्यशरण जाने श्रीहर हनुमंत निसानी ।।३५।।

अन्य नामों के उल्टे उच्चारण से वे वर्ण सौन्दर्य रहित होकर फलप्रद नहीं होते हैं किन्तु गुणखानि श्रीराम नाम को कैसे भी उल्टा सीधा कहा जाय तो आनन्द की प्राप्ति होती है । देखो वेद पुराण में सुन्दर श्रीराम नाम की कथाओं का वर्णन विशेष रूप से स्पष्ट है—दिखायी देता है । श्रीमहाराज जी श्री शंकर जी व श्रीहनुमान जी नाम महिमा जानते हैं यही प्रमाण–उदारण हैं ।।३५।।

Scanned by CamScanner

नाम महामदिरा मनमोहनि जे जन छकि-छकि पीते हैं।
कोटिन कल्प बिकल्प भए पर निशा नैन नहिं रीते हैं।।
झुकि-झुकि रहे रहस राते मृगमद, सम अमीते हैं।
युगलानन्य अमर पद पाये हर हमेश हो जीते हैं।।३६।।

मन को मोहित-बेहोश करने वाली श्रीराम नाम महामदिरा का जो जीव छक-छक कर मन भरकर पान करते हैं। करोड़ों कल्प व्यतीत हो जाने पर भी प्रलय हो जाने पर भी अर्थात् अत्यधिक समय व्यतीत होने पर भी समय का प्रभाव उनपर नहीं पड़ता, काल लघु हो जाता है।

रात्रि में उनकी आँखों में नींद नहीं आती तैल धारावत् अविच्छिन्न नाम स्मरण होता है नेत्र खाली नहीं रहते नाम मदिरा का नशा नेत्रों चढ़ा रहता है उतरता ही नहीं। उनके युगल केलि-रहस्य में रमे हुए अर्धोन्मीलित नेत्र कस्तूरी मृग की भाँति नामामृत का पान कर मस्त (तन्मय) रहते हैं अर्थात् उनकी अवस्था सदा अन्तर्मुख बनी रहती है। वे नाम जापक अमर पद प्राप्त करके निरन्तर चिरंजीवी बने रहते हैं।।३६।

निर्मल नाम नेह नूतन निज नेही सजें सजावें।
नाम मनोहर शब्द विशद बीना हर वखत बजावें।।
नाह दरस उत्साह चाह चित चौगुन चटक छजावैं।
युगलानन्य निखिल नर से निर्वेद अखेद भजावें।।३७।।

प्रेमी जन परम पवित्र श्रीनाम के प्रति नित्य नवीन प्रेम से हृदय को सुशोभित करते रहते हैं। मनोहर श्रीयुगल नाम की व्यापक शब्द वीणा को हर समय बजाते रहते हैं नाम-वीणा झंकृत होती रहती है। अर्थात् निरन्तर श्रीनाम का जप करते हैं। अपने प्रेमास्पद प्रियतम प्रभु के दर्शन की उत्कृष्ट अभिलाषा व उत्साह हृदय में चौगुना बढ़ाते हैं- तीव्रतम अभीप्सा है। जीव सम्पूर्ण-आत्यन्तिक दुःख पीड़ा से निवृत्ति तुरन्त प्राप्त कर लेते हैं—नित्य कैंकर्य प्राप्त कर लेते हैं।

सम्पूर्ण दुखों से निवृत्त हो जाते हैं। सम्पूर्ण शारीरिक व मानसिक वेदना व व्यथा से मुक्त हो जाते हैं ।।३७।।

नाम मन्त्र जस यन्त्र तन्त्र सिरताज स्वतन्त्र सम्हारें।
खाम खलक खाहिस खाकी नापाकी नजर निहारें।।
दाम चाम की सुरति सफाफन फानी दफा बिचारें।
युगलानन्य सुनाम बसीकर नामी दृढ़ मत धारें।।३८।।

Scanned by CamScanner

श्रीनाम को सभी मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र से श्रेष्ठ व स्वतन्त्र मानें-समझें। इस मृण्मय नश्वर संसार की कामना को व लौकिक वासना इच्छाओं को अपवित्र भाव, त्याज्य दृष्टि से देखें। कंचन-कामिनी के चमक-दमक चाकचिक्य को ध्यान में रखकर एकबार स्पष्ट रूप से नश्वरता पर विचार करें। इस प्रकार सुन्दर श्रीनाम के अधीन श्री नामी प्रभु हैं अर्थात् नामी के वशीकरण का साधन श्रीनाम है—यह निश्चित रूप से स्वीकार करें ॥३८॥

लैल निहार यार गुलशन रुखसार बहार बिलोकैं।
गैल सनेह सैल हरदम महबूब मोहब्बत नोकैं॥
मैल मिजाज खाज खुद खातिर खोफ लिए नित रोकैं।
युगलानन्यशरण सुन्दर हिय हरन नाम दोउ लोकैं॥३९॥

युगल प्रियतम प्रभु की प्रसन्न मुखमुद्रा व दृष्टि को बाग की बहार शोभा के सदृश अहर्निश रात दिन अवलोकन करते हैं प्रेमास्पद का प्रेम--पथ सदा स्नेह की बाढ़ से आप्लावित होकर प्रियतम के प्रेम से सजा रहता है। अपने हित के लिए मलिन अहंकार के (आरोपित खौफ-भय से) पंक व संदेहशीलता से स्वयं को नित्य रोकते हैं। इस प्रकार दोनों लोकों में सुन्दर श्रीनाम हृदय को हरण करने वाले हैं ॥३९॥

नाम निरूपन नित्य नेह से करत परम पद पावेंगे।
वाद-विवाद विषाद दाग दुःख दोष अनेक बहावेंगे॥
नाम सनेह रहित धिग जीवन नाह नाम ही गावेंगे।
युगलानन्य अखण्ड ध्यान धरि नामी नाम समावेंगे॥४०॥

नित्य-निरन्तर प्रेम से श्रीनाम का निरूपण-गान करने से परम पद प्राप्त करेंगे। वाद-विवाद विषाद, व्यथा व अनेक दुःखादि को बहा देंगे—समाप्त कर देंगे। श्रीनाम-प्रेम रहित जीवन को धिक्कार है अतः प्रियतम के नाम का ही गुणगान करेंगे। इस प्रकार नामी श्रीप्रभु का अखण्ड नित्य ध्यान करके श्री नाम में ही मग्न, लीन हो जाएँगे ॥४०॥

साप असोष खबीस हरक्कत हरगिज एक न राखेंगे।
आपा पर प्रपंच पावक सम समुझि नाम रस चाखेंगे॥
सर्वोपरि सिरताज नाम गहि रसना असद न भाषेंगे।
युगलानन्य कटुक बानी सुनि तीनों काल न माषेंगे॥४१॥

Scanned by CamScanner

प्रेतादिक क्षुद्र सिद्धियों द्वारा शाप आशीर्वाद का कार्य कभी नहीं करेंगे अर्थात् शाप, आशीर्वाद तथा दुष्टचेष्टाओं को कदापि हृदय में नहीं रखेंगे। अपने पराये--प्रपंच जगत् की चर्चा को अग्निसम दाहक समझकर उससे दूर रहकर श्रीनाम रस का रसास्वादन करेंगे। सर्वोत्तम सर्वश्रेष्ठ श्रीनाम को ग्रहण कर रसना-जिह्वा से असत्यभाषण व्यर्थ चर्चा नहीं करेंगे। किसी प्रकार की कटुवाणी निन्दा आलोचना सुनकर तीनों काल में व्यथित नहीं होंगे ॥४१॥

निज निन्दा पीयूष सहस सम मिष्ट मानि मन मातेंगे।
लोक बड़ाई धूर-कूर घर घूर बूझि रँग रातेंगे॥
महामोद सतनाम सिन्धु में मगन होय घुन घातेंगे।
युगलानन्य सुनाम कृपालहिं चित चरखा नहि कातेंगे॥४२॥

अपनी निन्दा को हजारों अमृत घट के समान मधुर मिष्ठान्न के के सदृश मानकर मन को प्रसन्न रखेंगे-हृदय में हर्षित होंगे। लोक प्रतिष्ठा को घर के कूड़े-कचरे के समान त्याज्य समझकर श्रीनाम के रंग में रंगे रहेंगे। सत्य श्रीनाम के परमानन्द सिन्धु में निमग्न होकर अन्य चिन्ताओं से दूर रहेंगे। श्रीमहाराज जी कहते हैं मनोहर कृपालु श्रीनाम की अनुकम्पा से चित की चंचलता विविध संकल्प विकल्प-ऊहापोह से निवृत्त हो जाएँगे ॥४२॥

सोभा सरस विशेष देख तब जब जुबान जप जागें।
नाम ललाम कलाम दाम तजि अपर बचन कटु लागें॥
दुबिधा दाग बिमाग राग भव सब समान लखि त्यागें।
युगलानन्यशरण सतगुरु पद पंकज सेव सुभागें॥४३॥

जब स्वयं अपनी जिह्वा से श्रीनाम जप रटन प्रारम्भ करेंगे तब उनकी विशेष शोभा छवि व सरसता का दर्शन होगा। सुन्दर भगवन्नाम के ललित शब्द (धन) वैभव को छोड़कर तदतिरिक्त अन्य वाणियाँ-वचन कड़वे लगते हैं। संदेहशीलता, अभिमान व संसारासक्ति सभी को समान देखकर उसका परित्याग करके श्रीसद्गुरु के चरणारविंद के सेवन से सौभाग्यशाली होते हैं ॥४३॥

मूरख मन बोधन अति दुस्तर सोधन अति कठिनाई है।
सिकता तेल गगन कुसुमादिक मिलत नहीं श्रुति गाई है॥
बिमल विज्ञ अति मूढ़ गहत गुरुज्ञान मध्य दुखदाई है।
युगलानन्यशरण अधिकारी परखि नाम रट लाई है॥४४॥

मूढ़ मन को समझाना व स्वच्छ करना, निग्रह करना अत्यन्त कठिन व कष्टप्रद है। बालुका में तेल व आकाश-पुष्प प्राप्ति के समान मन का निग्रह असम्भव है ऐसा श्रुति का कथन है । विमल विद्वान्-वेदज्ञ गुरु के द्वारा अज्ञानी जीव के लिए ज्ञानोपदेश दुःखप्रद-कठिन है, अर्थात् ज्ञानमार्ग दुस्तर है । इस प्रकार अधिकारी समझदार साधक योग-ज्ञान इस विषय को परख कर श्रीनाम की रटन लगाते हैं अथवा हमने योग और ज्ञान में स्वयं को अधिकारी न जानकर नाम की रटन लगाई है ।

श्रीगुरुदेव ने अधिकारी परख कर नाम का आश्रयण देकर नाम की रटन लगाई है ॥४४॥

जिनके ज्ञान गुमान मान तिन से न नाम गुन कहिए ।
जो वे प्रश्न करें बादन हित तउ अति चुप ह्वै रहिए ॥
अमल अमोल महामनि नाहक खोलि खेद खुर सहिए ।
युगलानन्य परत्व पदारथ समय बदत मुद लहिए ॥४५॥

जिनको ज्ञान का अभिमान है उनसे नाम की महिमा नहीं कहनी चाहिए। यदि वे श्रीनाम के विषय में वाद-विवाद के लिए प्रश्न करें तो बिलकुल मौन हो जाना चाहिए । निर्मल अमूल्य श्रीनाम महामणि के रहस्य वयर्थ में खोलकर कष्ट न सहिए। श्रीनाम रूपी परत्व वस्तु को समय देखकर अधिकारी को कहकर प्रसन्नता प्राप्त करनी चाहिए ॥४५॥

जैसे कृषीकार सुन्दर सुचि धान पाय सुख पावैं ।
तजे पयाल जानि अंतर गुनि तिमि सतनाम समावैं ॥
पढ़ि सुनि निखिल ग्रंथ अर्थन पुनि छोड़ि सुनाम लोभावैं ।
युगलानन्यशरण घृत गहि घट अलग किए हरषावैं ॥४६॥

जैसे कृषक-किसान खेत में सुन्दर स्वच्छ धान को प्राप्त कर सुखी होता है और पुआल को छोड़ देता है उसी प्रकार व्यर्थ संसार प्रपंच व नाम का अन्तर हृदय में समझकर श्रीनाम में प्रवेश करना चाहिए । सम्पूर्ण सद्ग्रंथों को पढ़ सुनकर व उनके अर्थ को जानकर पुनः उसको छोड़कर तात्पर्य रूप सुन्दर नाम में ही सुधीजन रुचि लेते हैं । इस प्रकार मन्थन कर सार भाग घी को ग्रहण कर हर्षित होते हैं और घड़े को सारहीन तत्त्व जानकर छोड़ देते हैं ॥४६॥

समुझि कृतज्ञ सुगुन राखे रस चाखे नाम पियूषन को ।
संतत संत सुसंग सजे तम तजे भजे कुलभूषन को ॥

राग अराग पराग प्रलय नाशे तजि नेह कुरूषन को।
युगलानन्यशरण अन्तर उर सोभा नाम मयूषन को।।४७।।

श्रीनाम महिमा को समझकर उपकृत (कृतज्ञ) होकर श्रीनाममहिमा का मनन करते हुए साधक श्रीनाम सुधारस का रसास्वादन करते हैं। अज्ञान का परित्याग करके निरन्तर सन्तों का सुन्दर सत्संग करते हुए रघुकुल भूषण श्रीराम का भजन करना चाहिए। आसक्ति, उदासीनता, द्वेष से पूर्णतः रहित होकर बदसूरत शुष्क-रसहीन हृदय वालों से संबंध त्याग कर अपने अन्तर (हृदय)को श्रीनाम की किरणों से सुशोभित करें।।४७

पार भए पर नाव काम कहो कौन रहे दृग देखो।
निज मोकाम जब जाय मिल्यो पुनि पंथगमन नहि लेखो।।
भेंट्यो सुजन सनेहवंत फिरि बृथा खोज अविशेषो।
युगलानन्य नाम जपि के श्रम साधन निरस निरेखो।४८।।

विचार करके देखो सरिता से पार हो जाने पर नौका से क्या काम रह जाता है अर्थात् साध्य की प्राप्ति पर साधन की क्या आव-श्यकता है? अपने लक्ष्य से जब जाकर मिल गये तब पुनः मुड़कर पंथगमन (मार्ग) को नहीं देखते हैं। स्नेहास्पद प्रियतम से मिलन हो जाने पर अन्वेषण करना व्यर्थ है—कुछ शेष नहीं रह जाता है। श्रीनाम जप के पश्चात् समस्त साधन श्रम साध्य, नीरस दिखाई देते हैं।।४८।।

कस्तूरी सुचि सरस सुरभि गुलशन गुलाब जिन पाया है।
तिनको प्याज गांठ लहसुन दुर्गंध कहो कब भाया है।।
शाहनशाह सल्तनत हासिल हुए न भीख मंगाया है।
युगलानन्य नाम रस चाखत साधन सकल बिलाया है।।४६।

कस्तूरी एवं गुलाब की वाटिका की पवित्र रसपूर्ण सुगन्धि (सौरभ) जिन्होंने प्राप्त करली है उनको प्याज और लहसुन की गाँठ की दुर्गन्धि कहो कब अच्छी लग सकती है? किसी को बादशाह की सल्तनत राजा का राज्य प्राप्त हो जाने पर फिर भीख नहीं माँगनी पड़ती है। श्रीनाम रस का रसास्वादन करने पर समस्त साधन नष्ट हो जाते हैं।।४६।

पंचानन नहि घास खाय कोउ काल बात सत सांची है।
राजहंस नहि चुगे कबहुँ संबुक सुरेख दृढ़ खांची है।।
सुन्दरि सती सिंगार सजी स्वामी बिन अनत न रांची है।
युगलानन्यशरण मति मेरी नाम मोहब्बत मांची है।५०।।

Scanned by CamScanner

किसी भी काल में सिंह घास नहीं खाता है यह बात सत्य है। मुक्ता चुगने वाले राजहंस कभी भी संबुक (घोघा) नहीं चुगते हैं यह बात भी वज्ररेखा समान निश्चित अमिट है। सुन्दरी पतिव्रता स्त्री श्रृंगार करके पति के बिना अन्यत्र रमण नहीं करती है। श्रीमहाराज जी कहते हैं इसी प्रकार मेरी मति भी श्रीनाम स्नेह में पूर्ण रूप से सनी हुई है। नामातिरिक्त अन्यत्र कहीं नहीं जाती है ॥५०॥

बड़ा भाग दिल दाग दमन अनुराग बरन बर पाया है।
जड़ा जवाहिर जाल लाल अनमोल नजर झलकाया है॥
गड़ा निशाना नाम नाह निज बपुष बीच छबि छाया है।
युगलानन्य कड़ा कसरत रत क्या करती मति माया है॥५१।

उन लोगों के बड़े भाग्य हैं जिन्होंने हृदय के कालुष्य को नष्ट करके श्रेष्ठ वर्ण श्रीराम नाम के अनुराग को प्राप्त कर लिया है। जैसे जवाहरात जड़े हुए जाल में अनमोल लाल पृथक् ही नजर में झलकता है–दृष्टिगोचर होता है। अपने प्रियतम की नाम ध्वजा को शरीर के मध्य में गाड़ दिया है जो हृदय में सुशोभित हो रही है। इस प्रकार नाम स्मरण का दृढ़ अभ्यास करने वाले के प्रति माया की बुद्धि क्या कर सकती है अर्थात् उसका क्या बिगाड़ सकती है ॥५१॥

हौं तौ महामन्द मोही दिल द्रोही कोही कामी।
पै श्रीनाम कृपाल आस दृढ़ गह्यो अधिक अनुगामी॥
उनहीं के भरोस गरजत तरजत सब हिरस हरामी।
युगलानन्यशरण सिर मेरे रक्षक सतगुरु स्वामी॥५२॥

यद्यपि मैं अत्यन्त अल्पज्ञ, मोग्रहस्त, द्वेषी, क्रोधी व कामी हृदय वाला हूँ तथापि कृपालु श्रीरामनाम का पूर्ण विश्वास ग्रहण करके उनका विशेष अनुगामी हूँ। उन्हीं श्रीनाम के भरोसे पर ही निकृष्ट वासनाओं को गरज-तरज कर डाँट-डपट कर दबाये रहता हूँ क्योंकि मेरी रक्षा करने वाले सद्गुरु स्वामी का कर कमल मेरे सिर पर है ॥५२॥

श्रीसतगुरु पद पदुम मनोहर रज सज आसा धरते हैं।
उनकी नेक नजर निरखन से समन संक नहिं करते हैं॥
सर्वोपरि प्रिय पूज्य प्रभाकर नाम खजाना भरते हैं।
युगलानन्यशरण श्रीसतगुरु बंदत सब सुख सरते हैं॥५३॥

श्रीसद्‌गुरु के चरणकमल की मनोहर रज (धूलि) से सज्जित होने की आशा करते हैं। उनके किंचित् कृपा कटाक्ष प्राप्त हो जाने से काल का भी भय नहीं होता है। सर्वश्रेष्ठ प्रिय पूज्य सूर्य सदृश गुरुदेव निरन्तर श्रीनाम का खजाना भरते हैं, नामदान करते हैं। श्रीसद्‌गुरु की वन्दना से समस्त सुखों की प्राप्ति होती है ॥५३॥

जिनको श्री सतगुरु सुन्दर सम्बन्ध सो नहीं डरते हैं।
तिनको भूल-सूल नाना बिधि हूल कुसंगम गरते हैं ॥
इत–उत में बेबूझ घूमते जैसे कांच बगरते हैं।
युगलानन्यशरण सुनाम बिन काम न रामनगर ते हैं॥५४॥

जिनको श्रीसद्‌गुरुदेव का सुन्दर सम्बन्ध प्राप्त है वे भयमुक्त रहते हैं। उनके अपराध, पीड़ा नाना प्रकार के कष्ट--कुसंग सब नष्ट हो जाते हैं। जैसे शीशा टूट कर बिखर जाता है उसी प्रकार नाम जापक बेसुध बेहोश होकर प्रेमोन्माद में मत्त होकर इधर-उधर घूमते हैं। श्रीनाम के बिना उन्हें श्रीरामनगर से भी कोई काम नहीं है अर्थात् साकेत भी प्रिय नहीं लगता ॥५४॥

अंतर बाहर विशद विभव बर बिलसत अवध बिहारी।
चित अरु अचित उभय बिग्रह श्रुति संत प्रसंसत न्यारी ॥
बिलग नहीं भासत भाविक भल भाव भव्य पटु प्यारी।
युगलानन्यशरण वल्लभ सिय निरखहिं प्रीति प्रचारी ॥५५॥

हृदय के अन्दर बाहर समस्त संसार में उत्तम ऐश्वर्य सम्पन्न श्रीअवध विहारी विलास बिहार कर रहें हैं। सब उन्हीं का विकास है। चित्-अचित् उभय विग्रह, जड़–चेतन दोनों शरीरों में श्री रामचन्द्र जी की ही वेदों व सन्तों ने विशेष रूप से प्रशंसा की है। भावुकों को उभय विग्रह पृथक् नहीं दिखायी देता यही श्रीसीयराममयता के सुन्दर भाव उन्हें प्रिय लगते हैं तथापि सगुण सरकार श्रीसीतावल्लभ जू के श्री विग्रह का दर्शन करके प्रीति की वृद्धि होती है ॥५५॥

उज्ज्वल असल उन्मनी करि परिहरि अशेष चतुराई।
मुद्रा मान मनोज मरदनी स्वायंभुवी सोहाई ॥
दृष्टि निरोध सुबोध हृदस्थल इष्ट रूप झलकाई।
युगलानन्यशरण योगी पति रसिकराज भलभाई ॥५६॥

Scanned by CamScanner

सम्पूर्ण चंचलता का परित्याग कर स्वच्छ सच्ची उन्मनी (नासाग्र पर दृष्टि स्थापित करके) अवस्था को प्राप्त करें। कामदेव के मान का मर्दन करने वाली सुन्दर स्वयंभुवी मुद्रा (बारह अंगुल नाक के आगे बिन्दु पर दृष्टि स्थापित करके ध्यान करना है।) इस प्रकार दृष्टि का निरोध करके (रोककर) सुन्दर ज्ञानपूर्वक हृदय स्थल में इष्ट के रूप की झाँकी दिखायी देती है। वही योगेश्वर रसिकेश्वर सुन्दर श्रीराम अच्छे लगते हैं ॥५६॥

सावन सरित भरित सोभा भल हरित हिये हर सायत।
याही भाँति उमंग नाम नव रंग चढ़े चित चायत ॥
भूले भीति नीति निज पर मति सहित सराह सरायत।
युगलानन्यशरण पदुमन में कोउ महरमी बिलायत ॥५७॥

जिस प्रकार श्रावण मास में वर्षा के जल से भरी हुई सरिता की शोभा होती है तथा चारों ओर की हरियाली सर्वदा हृदय को अच्छी लगती है इसी प्रकार उल्लास पूर्ण श्रीनाम का नित नूतन रंग चित्त पर चढ़ा रहता है श्रीनाम धारा प्रवाहित होती है। भय, नीति, अपने पराये की बुद्धि सहित प्रशंसा, प्रभाव-मान और प्रतिष्ठा सबको नाम की उमंग में भूल जाता है। अरबों-खरबों में कोई एक श्रीनाम की सिद्धावस्था के जानकार है अथवा इस स्थिति को प्राप्त होता है ॥५७॥

श्रवन सुने सतनाम सुखद सुखदेन सुरसना जपिए।
करन लिखो सुचि सुजस नाम अभिराम सुमन थिर थपिए॥
परसो प्रेम समेत नाम दृग देखो वृथा न खपिए।
युगलानन्यशरण शंकित संसृति से ह्वै तहं छपिए ॥

सुखप्रदायक सत्य श्रीनाम श्रवण सुखद हैं उनका सुन्दर जिह्वा से जप करिए। हाथों से उनके पवित्र सुयश को लिखिये तथा अभिराम श्रीनाम में मन को दृढ़ता से स्थिर करिए। प्रेम सहित नाम का स्पर्श करिये तथा नेत्रों से देखिये, व्यर्थ श्रम न करिये। जन्म-मृत्यु की शंका-भय से मुक्त होने के लिए श्रीनाम की शरण लीजिए ॥५८॥

योग ज्ञान बर बिरति हिरस अति कठिन काम अटपट का।
अंतराय नाना संयुत कामादिक जंग निकट का ॥
सुनि-सुनि सकल शास्त्र शतधा मत चित्त आपही छटका।
युगलानन्यशरण सीख्यो शुचि स्वच्छ नाम का लटका ॥५६॥

Scanned by CamScanner

वासनाओं से विरत होकर योग-ज्ञान की प्राप्ति अत्यन्त कठिन और अटपटा कार्य है। इसमें कामादिक का उपद्रव तथा नाना प्रकार के विघ्न उपस्थित रहते हैं। सम्पूर्ण शास्त्र, सैकड़ों प्रकार के मत मतान्तरों को सुन-सुन कर हृदय अपने आप ही अलग हो जाता है—उपरत हो जाता है सत्यता का निर्णय नहीं कर पाता है। इसलिये पवित्र, उज्ज्वल सरल श्रीनाम जप की युक्ति को सीख लिया है ॥५९॥

रैन ऐन मदहोश रोस अफसोस बिगत खम खटका।
मैग गैन बिसराय चैन चित भार-भार बिच पटका ॥
आसा असल-अमल हरदम सियवल्लभ सरजू तट का।
युगलानन्यशरण सीख्यो शुचि स्वच्छ नाम का लटका ॥६०॥

दिनरात मदहोश-मस्त होकर क्रोध, शोक और नीचे गिरने का खटका (आशंका) समाप्त हो गया है। काम की तृष्णा का विस्मरण-निवृत्त हो जाने से चित्त में चैन--शान्ति है और अन्य बोझों को दायित्वों को भी भाड़ के बीच में पटक दिया, झोंक दिया। श्रीजानकी वल्लभ जू व सरयू तट की सर्वदा निर्मल सच्ची आशा है। श्रीमहाराज जी कहते हैं कि हमने पुनीत स्वच्छ नाम का लटका सीख लिया है ॥६०॥

मान बड़ाई खान पान हित साधन कारज नटका।
हानि लाभ की खबर नहीं सब समे विषय फल गटका ॥
जोवन जान सनेह सुधारस भरचो न अंतर घटका।
युगलानन्यशरण सीख्यो सुचि स्वच्छ नाम का लटका ॥६१।

यश कामना, खाने पीने के लिए स्वार्थ का साधन ये कार्य नाटक-दिखावा है। हानि लाभ किसी की सुध नहीं है केवल सदा विषय--फल का भक्षण कर रहे हैं। इससे जीवनधन भगवत्स्नेह के सुधारस से अन्तर घट-हृदय कलश नहीं भरता है। इसलिये हमने पवित्र स्वच्छ नाम जप की विधि को सीख लिया है ॥६१॥

प्रीतम प्रीति प्रतीति पगी सुचि सुरति विशेष निखटका।
खाहिस खलक-झलक बो दिन की लखा महामद मटका ॥
दुख सुख सम समुझे उरझे रस मुसकिल काम सुभटका।
युगलानन्यशरण सीख्यो सुचि स्वच्छ नाम का लटका ॥६२।

प्रियतम के प्रेम और विश्वास में रमी हुई पवित्र स्मृति विशेष रूप से सन्देहरहित हो गयी है। सांसारिक इच्छाओं की झलक-उपस्थित

Scanned by CamScanner

दो दिन की है, क्षणभंगुर है देखा तो ये सुरा–शराब का घड़ा है। दुःख सुख को समान समझना तथा भगवद् रस में उलझे रहना, फँसे रहना यह अत्यन्त कठिन कार्य किसी बलवान वीतराग का ही है । इसलिये हमने पवित्र स्वच्छ नाम जप की विधि को सीख लिया है ॥६२॥

सकल बिकल निज नकल अकल मत समुझि सजग जिय सटका ।
सन्त संग सम्बंध सरस सजि शबोरोज अति अटका ॥
धाम बास अभिराम सुदृढ़ करि सब दिसि से हिय हटका ।
युगलानन्यशरण सीख्यो सुचि स्वच्छ नाम का लटका ॥६३॥

अपने–अपने नकली–झूठी बुद्धि से अनेक मत मतान्तरों से सभी व्याकुल हैं यह देख समझकर हमारा मन सावधान होकर हट गया है। सन्तों का संग व रसिकों के साथ सम्बन्ध स्थापित (सतसंग में मधुर सम्बन्ध स्थापित) करके रात दिन उसी में लगे रहना चाहिए । सभी दिशाओं से हृदय हटाकर दृढ़ता पूर्वक सुन्दर धाम का वास करना चाहिए । अतः हमने सुन्दर स्वच्छ नाम की युक्ति सीख ली है ॥६३।

जयति जानकी जान नाम रसखान प्राणप्रिय प्यारे की ।
परानन्द परब्रह्म रूप परत्यक्ष स्वच्छ सुकुमारे की ॥
पूजित पद्मासन पद्मापति पार्वती सुखसारे की ।
युगलानन्यशरण आशिक हिय हरन तार तति तारे की ॥६४

श्रीजानकी जीवन के रसखानि प्राणप्रिय प्यारे नाम की जय हो। परमानन्द परब्रह्म स्वरूप सुकुमार श्रीराम के रूप को प्रत्यक्ष कराने वाले पवित्र श्रीनाम की जय हो । ब्रह्मा, विष्णु, पार्वतीपति शंकर द्वारा पूजित श्रीराम के नाम की जय हो। प्रेमियों के हृदय को हरण करने तथा जन्म-मृत्यु की परम्परा से तारने वाले श्रीराम नाम की जय हो।६४।

ईशाधिप औतार नियंता निर्गुन सगुन प्रकाशी हैं ।
साधन साध्य समस्त सार श्रुति शोभासर सुखरासी हैं ॥
अनुभव अमल-अकल परिपूरन प्रेम पियूष प्रभासी हैं ।
युगलानन्यशरण सुषमानिधि नाम निरीह निवासी हैं ॥६५॥

ईश्वरों के अधिपति, अवतारों के नियन्त्र करने वाले (नियामक) तथा निर्गुण सगुण दोनों के प्रकाशक श्रीनाम हैं । साधन, साध्य एवं समस्त वेदों के सार, सौन्दर्य सार सरोवर तथा सुख के खजाना हैं । निर्मल अनुभव, अखण्ड (कलातीत) परिपूर्ण प्रेम सुधा के प्रकट करने वाले हैं। सुषमा के निधि श्रीनाम निष्काम हृदयमें निवास करने वाले हैं।६५

Scanned by CamScanner

नाम नेह निज नाह नाज नव नैन ऐन में देवेंगे।
ग्राम आम बदनाम विषय विष पलक बीच हरि लेवेंगे।।
धाम खास अभिराम दाम द्युति बिल अन्दर भल भेवेंगे।
युगलानन्यशरण शंका बिन बंक अंक कुल छेवेंगे।।६६।।

अपने प्रियतम के श्रीनाम के नवीन गर्व को (स्नेह को) अपने नेत्र के घर में रखेंगे। नाम स्नेह के अन्जन से नेत्र गृह को पूरित रखेगें। सामान्य ग्राम्य बदनाम–अपवित्र विषयों की विषभरी दृष्टि को पलक के बीच से हटा देंगे। सुन्दर खास श्री अवध धाम की स्वर्णिम आभा से दिल को अच्छी प्रकार भिगो लेगें। दुर्भाग्य के अंक को (शंका के बिना) नि:सन्देह मिटा देंगे।।६६।।

दाह दरद दूषन दुचिता दुरितौघ दूर द्रुत देखोगे।
दाग दराज दशा दीनी दिन दिन प्रति ऊनी पेखोगे।।
दुर्गति दगाबाज दारुन दर दिल दृग बीच न लेखोगे।
युगलानन्य नाम करुना बल अबल सबल सुपरेखोगे।।६७।।

श्रीनाम करुणा के बल पर ताप, पीड़ा, दूषण, दुविधा, पाप संताप सभी को शीघ्र दूर होते देखोगे। विषय वासनाओं के समूह व दीन दशा (हीन भावना) को प्रतिदिन कम होते हुए देखोगे। दारुण दुर्दशा और धोखा देने वाले भ्रम आशंका को दिल के बीच में नहीं देखोगे–हृदय स्वच्छ हो जाएगा। श्रीनाम की करुणा के बल से जो बल रहित निर्बल है वह सबल शक्ति सम्पन्न हो जाएगा ऐसा देखोगे।६७।

काम कोह काफिर कतरन कर कलित कतरनी जानो जी।
दाम द्रोह मद मोह महातम समन हेतु रवि मानो जी।।
घाम-घाय खल खाम खलल हित सीत भानु पहिचानो जी।
युगलानन्य अनूप नाम बिन अपर उपाय न आनो जी।।६८

दुष्ट काम क्रोध को कतरने के लिए–नष्ट करने के लिऐ श्रीनाम महाराज को सुन्दर कतरनी–कैंची समझो। लोभ, मोह, द्वेष, अहंकार रूप महान अन्धकार को समाप्त करने के लिए इन्हें सूर्य समझो। दुष्ट अज्ञान व विघ्न बाधा रूप उष्णता को दूर करने के लिए श्रीनाम को चन्द्रमा पहिचानो। अनुपम श्रीनाम के बिना अन्य उपाय मत करो।६८।

नाम सनेह संग हरदम रस रंग उमंग बढ़ाना है।
काम कलंक पंक से बेशक मन मातंग कढ़ाना है।।

Scanned by CamScanner

श्याम सजन सम्बन्ध सोहावन भूणष बिशद गढ़ाना है।
युगलानन्य वपुष बासिन सन नाम सुपाठ पढ़ाना है ॥६९॥

श्रीनाम स्नेह से सर्वदा संग करके, स्मरण करके प्रीति रस की उमंग को बढ़ाना है। काम के कलंक पंक कीचड़ से निःसन्देह मन रूपी हाथी को निकालना है। श्यामविग्रह श्रीराम सुजान प्रियतम के सुन्दर सम्बन्ध रूप आभूषण को विशद रूप से गढ़ाना है, बनाना है। शरीरवासी मन बुद्धि आदि को श्रीनाम का सुपाठ पढ़ाना है ॥६९॥

नाम पियूष पियाला पीके उनमत मति मतवाली है।
चाम दाम की खबर न रंचन बेहोशी मदवाली है ॥
रामरूप अभिराम मगन मन जिकर फिकर जगजाली है।
युगलानन्य अजूब-खूब हर सायत खुश-खुशहाली है ॥७०॥

श्रीनाम सुधारस का प्याला पीकर बुद्धि उन्मत्त होकर मतवाली हो गयी है। धन-दौलत व शरीर (कंचन कामिनी) की रंचमात्र रत्ती भर भी खबर सुधि नहीं है मदमस्त होकर बेहोशी छायी हुई है आनंद-दायक मस्ती है। अभिराम श्रीराम के सुन्दर रूप में मनमग्न है। संसार चर्चा व चिन्तन जगजाली मिथ्या है। हर समय अत्यधिक अद्भुत अलौकिक प्रसन्नता खुशहाली है ॥७०॥

दूजी चाह चबाव भाव अभिलाष लाख सम बूझी है।
सूजी सदृश सूक्ष्म पाई मति-गति अलखित सब सूझी है ॥
कुँजी कृपा कपाट खोलि के अंतर रहस समूझी है।
युगलानन्य आस पूजी श्री नाम रटत रति रूझी है ॥७१॥

हमने दूसरी इच्छाएँ, निन्दा स्तुति की अभिलाषा लाह के समान समझी हैं। सूचिका सुई के सदृश सूक्ष्म बुद्धि पाकर के अदृश्य वस्तु भी सब दिखाई देने लगी हैं। नाम की कुञ्जी-ताली से भगवत् कृपा कपाट द्वार खोल करके अन्तर हृदय में श्रीसीताराम जी के सूक्ष्म रहस्य जान गये हैं। श्रीनाम के रटन से समस्त आशाएँ पूर्ण हो गयी हैं श्री सीताराम स्नेह में मन उलझ गया है ॥७१॥

रसना रटन लगाय चाय चय सहित सुहित रस रागेंगे।
हँसना हिरस हिराय हाय हर सायत हिय अनुरागेंगे ॥
बस ना चलत छैल छबिनिधि से तदपि प्रेम पन पागेंगे।
युगलानन्यशरण असनाई करत न कबहीं भागेंगे ॥७२॥

Scanned by CamScanner

रसना से श्रीनाम रटन लगाकर अत्यन्त उत्साह सहित कल्याण-कारी रस में रंगेगें। हास परिहास (दुनियाँ के राग रंग) कामना, पीड़ा सबको भूलकर खोकर सदा हृदय में नाम के प्रति अनुराग करेंगे। सजीले सुषमानिधान श्रीराम के साथ बस नहीं चलता है तो भी अपने प्रेम-प्रण में पगे रहेंगे—एकांगी प्रेम का निर्वाह करेंगे। अशिकी प्रेम करने से कभी नहीं भागेगें।७२।

बंसी नाम बिचित्र डारि दिल अन्दर मीन फँसावेगें।
नैन-सैन सतगुरु अंगो करि डोरी कठिन कसावेगें।।
भली भाँति से खैंचि आपने तरफ न फेर हँसावेगें।
युगलानन्यशरण बेगम पुर प्रीतम बास बसावेगें।।७३।।

नाम की विचित्र बंसी डाल करके मन-मीन (मन रूपी मछली) को फँसाएंगे श्रीसद्गुरुदेव के कृपा कटाक्ष को अंगीकार करके नाम की कठिन डोरी को कसेंगे। अच्छी प्रकार से डोरी अपनी ओर खींचकर पुनः शिथिल करके अपनी हँसी नहीं कराएँगे—अर्थात् मन मछली हमें अपनी ओर सांसारिक विषयों की ओर खींचेगी किन्तु हम उसे अपने श्रीराम प्रेम की ओर खीचेंगे। अपनी महारानी व प्रियतम श्रीसीता-रामजी की पुरी अयोध्या नगरी में निवास करेंगे।।७३।।

भीतर बाहर उभय रीति युत प्रीति नाम ही रटना है।
पीतर पाथर बीच विभव बर देश बिलोकत अटना है।।
गीत रबाब आब अन्तर बजबाय न रन से हटना है।
युगलानन्य सफा दरसन चित चशम बीच अब पटना है।।७४।।

भीतर बाहर अर्थात् मन से मानसिक जप एवं वैखरी वाणी जिह्वा से- दोनों प्रकार से प्रीति पूर्वक केवल नाम ही रटना है। पीतल, पत्थर अर्थात् अष्टधातु पाषाण आदि अर्चा विग्रह में श्रेष्ठ ऐश्वर्य भाव का साक्षात् श्री विग्रह का दर्शन करते हुए इस देश में भ्रमण करना है। अन्तर में युद्ध के वाद्य बजाकर उसके गीत की रौनक हो जाने पर रणक्षेत्र से भागना नहीं है अर्थात् अन्तर्द्वन्द्वों व अन्तरायों से घबड़ाकर नाम स्मरण नहीं छोड़ेंगे। हृदय के नेत्रों से अन्तर्दृष्टि से साफ दर्शन हो रहा है चित्त में अब कोई परदा-आवरण नहीं है।।७४।।

मतवारे की मौन औज सुख सौज निसैल निहारेंगे।
घटबारे की दांव पेच घटवारो एक सुधारेंगे।।

Scanned by CamScanner

नटवारे की सैन चातुरी चलन सुनट हो धारेंगे।

युगलानन्य नाम आशक की आशक रहस विचारेंगे ।।७५।।

किसी मतवाले मद्यपी की मौज–मस्ती की बुलन्दी ऊँचाई को तथा सुख–सुविधा को कोई नशेबाज ही देख सकेगा, समझ सकेगा। घाट वाले के दाव पेंच को कोई एक घाट वाला ही सुधार सकेगा। नट कलाकार के इशारे की चतुराई हावभाव तथा गति को कोई निपुण नट ही धारण कर सकेगा, समझेगा। श्रीनाम प्रेमी के रहस्य को कोई आशिक-प्रेमी ही विचार कर सकेंगे ।।७५।।

सूर–सूर प्रतिकाश रास क्या जाने भला विचारो तो।
कूर–धूर भव भूरर में निज नूर लखे क्यों धारो तो।।
जीवन मूर सहूर सजे तिन के संग तन-मन गारो तो।
पूरन पूर नाम निर्मल गुन होय अनन्य सम्हारो तो।७६।।

विचार तो करो भला कोई अन्धा सूर्य के प्रकाश समूह को क्या जानेगा ? नीच धूलि व संसार के कूड़े–कचरे में अपनी सूरत अपने स्वरूप को कैसे देख पाएगा ? यह सोचो तो संजीवनी बूटी श्रीनाम के नेम-प्रेम के साथ अपने तन-मन को लगाओ तो। पूर्ण होकर कृतकृत्य हो करके परिपूर्ण श्रीनाम के निर्मल गुणनाम महिमा को अनन्य होकर संभालो, धारण तो करो ।।७६।।

खटका खामी खोय खाहसी खलल खराबी खाली है।
लटका लगन लगाय लाल लय लहलहाय तब लाली है।।
होय रहे सरजू तट का तब पावे रहस मराली है।
युगलानन्यशरण अटका निज नाम मांझ खुशहाली है।।७७।।

चिन्ता, कमी को त्याग दे इच्छाओं में केवल बाधाएँ और खाली खराबी-बुराई मात्र है। विधि पूर्वक लगन (लटका) लगाकर ठाकुर में लीन होकर जब उमंग होती है अनुराग लहलहाता है तब प्रेम की वृद्धि होती है। जब सरयू तट का निवासी होकर रहे तब रस रहस्य हंसिनी को पाता है। इस प्रकार नाम के मध्य में अटक कर स्थित हो जाने से खुशहाली-प्रसन्नता है ।।७७।।

पिलके प्रेम पियूष पूत पयनिधि अन्तर रस भींजोगे।
मिलके मधुर मोहब्बत मोहन फेर हाथ नहि मींजोगे।।
झिलके झमक-झलक झुमका लखि चखि रसफेर न खीजोगे।
युगलानन्यशरण तिल के सम तीन लोक तजबीजोगे।।७८।।

Scanned by CamScanner

पवित्र प्रेमामृत के क्षीर समुद्र में घुसकर हृदय रस में भींजोगे। श्रीराम के मधुर प्रेम को प्राप्त करके फिर हाथ नहीं मलोगे, पश्चात्ताप नहीं करोगे। उनके हिलते हुए कुण्डल की आभा (कर्णाभूषण की चंचलता–चमक) को देखकर उस मुख के सौन्दर्य रस को चखकर फिर किसी रस को नहीं खोजोगे। तिल के समान तीनों लोकों को तुच्छ समझोगे ॥७८॥

श्रीसीतावल्लभ सुनाम सुचि सुमिरत सब सुख सरसेगा।
दिन थोरे में रोम-रोम प्रति भली भाँति ही हरसेगा॥
सर्वोपर संतोष मानि प्रिय पोष पाय पिय परसेगा।
युगलानन्यशरण नैनन से बूँद बिशद रस बरसेगा॥७९॥

श्रीजानकी जीवन धन के पवित्र श्रीनाम के स्मरण से सम्पूर्ण सुख प्राप्त होगा। थोड़े ही दिनों में रोम-रोम सब प्रकार से भली-भाँति हर्षित होगा। सबसे श्रेष्ठ श्रीनाम में सन्तोष मानकर सन्तुष्ट होकर उससे प्रिय पोषण प्राप्त कर प्रियतम का स्पर्श होगा। नेत्रों से विशद बूंद रस-स्नेह के अश्रुपात होंगे॥७९॥

नींद निगोड़ी नीच निर्गुनी नीम निहायत नीरस है।
निशि दिन नेम प्रेम पन खोनी जोनो देनी हीरस है॥
होय-होय हुशयार नाम भजु तजु तिरगुन तम बीरस है।
युगलानन्यशरण धामहि बसि याही बीच अमो रस है॥८०॥

निगोड़ी नीच निर्गुणी नींद–निद्रा नीम की तरह पूरी तरह से नीरस-रस रहित कड़ुवी है। रातदिन नेम प्रेम को खोने वाली समाप्त करने वाली है और कामनाओं वासनाओं की जन्मदात्री है। इसलिए निद्रा से सावधान होकर श्रीनाम का भजन करो और त्रिगुणात्मक नीरस तम का त्याग करो। श्रीधाम में ही बसिये इसी के बीच में अमृत रस है॥८०॥

जीवन अलप कलप दोनों सम भेद न हरगिज जानो।
सीवन विजय बिलास गूदरो महाखेदमय मानो॥
नींव नहीं दीजे दुनियो दिन टेक हृदय अनुमानो।
युगलानन्यशरण छीवन नहिं नाम बिना बंद बानो॥८१॥

जीवन छोटा हो या बड़ा हो अर्थात् अल्प जीवी हो या दीर्घजीवी हो इसमें हरगिज भेद न समझो अर्थात् दोनों बराबर है। विषय विलास की गुदड़ी को मत सिओ इसे महादुःख मय मानो। दुनियादारी की

Scanned by CamScanner

नींव ही न दीजिए–उसे प्रारम्भ ही न करिये हृदय में यह दृढ़ता पूर्वक अनुमान करिये, दृढ़ धारणा रखिये । श्रीनाम बिना समस्त आराधनाएँ छीवन छना हुए चोकर शेष भाग हैं ॥८१॥

चढ़ि के असल अश्व गज बर पर, खर रुचि करत अनारी है ।
पढ़ि के बिमल वेद विद्या पुनि सीखत बनिज बिकारी है ॥
गढ़ि के महामनिनमय भूषण फेर चाह रज धारी है ।
युगलानन्य सनेह नाम तजि आसा अपर पसारी है ॥८२॥

असली श्रेष्ठ हाथी घोड़े की सवारी कर लेने पर गधे पर बैठने की इच्छा अनाड़ी-मूर्ख लोग करते हैं। पवित्र वेद विद्या के स्वाध्याय के पश्चात् पुनः वणिक् विद्या सीखना विकार-दोष है। बहुमूल्य मणिमय गहने बनाकर जो पुनः धूलि धारण करना चाहता है वह मूर्ख है। इसी प्रकार श्रीनाम से स्नेह करके अन्य आशाएँ व्यर्थ है ॥८२॥

निजानन्द द्युति द्वंद दरद दिल दशा दर्दहर लेनी है ।
परा प्रीति प्रतिकाश प्यार पन पावन प्रिय पद देनी है॥
नेम नेह निर्मल निदान नित निर्विकार तिरबेनी है ।
युगलानन्यशरण सियवल्लभ रसनिधि नाम निसेनी है ॥८३॥

अपने दिव्य स्वरूप के आनन्द का प्रकाश आभा–दिल के आन्तरिक द्वंददशा एवं पीड़ाओं का हरण करने वाली है । अपने निजानन्द के प्रकाश ने समस्त द्वन्द और दर्द को नष्ट कर दिया । परा प्रीति का प्रकाश एवं दृढ़ स्नेह तथा पवित्र प्रियतम के पद परधाम को देने वाली है। निर्मल स्नेह व्रत के लिए नित्य विकार रहित त्रिवेणी है। श्रीजानकी वल्लभ का रसनिधान श्रीनाम सीढ़ी है ॥८३॥

रसमय रमन अर्थ आयस सुचि सार सुजान सनेही ।
बिशद बरन हिय हरन शरनप्रद तारन तरन सबेही ॥
जापक जन जानहिं जलवा जस जाहिर जुग-जुग एही ।
युगलानन्यशरण रमि रहु रस सागर नाम निरेही ॥८४॥

सुजान सनेही श्रीराम का रसमय श्रीनाम का जप व अर्थ चिन्तन पवित्र लोहे के कवच के समान रक्षक है । श्रेष्ठ वर्ण रकार मकार सभी के हृदयहारी, शरण देने वाले एवं तारने वाले मोक्षप्रद हैं। नाम जापक जन ही इनका चमत्कार (प्रभाव) जानते हैं। यह प्रत्येक युग में प्रकट है । अतः इच्छा रहित होकर रस सागर श्रीनाम में रमण करते रहो ॥८४॥

Scanned by CamScanner

किसही तरह बिरह संजुत द्रुत दरक बरन बर लायक है।
अपर असेव असर नाकिस नित चित सुख समन समायक है।।
दीजे दशा दिमाग सहित दिल दायक समुझि सहायक है।
युगलानन्यशरण इस रस से रहित अधिक नालायक है ।।८५

किसी भी प्रकार से, किसी कारण से विरह से हृदय विदीर्ण हो गया हो तो शीघ्र श्रीनाम का वरण करना चाहिए नामाश्रय लेना चाहिए। अन्य उपायों का प्रभाव बुरा है। ये श्रीनाम नित्य शाश्वत हार्दिक सुख प्रसन्नता देने वाला तथा मायिक विकारों को नष्ट करने वाला है। बुद्धिपूर्वक इस दशा पर विचार करिये प्रेम प्रदान करने में केवल श्रीनाम ही सहायक हैं यह समझिये। इस श्रीनामरस से वञ्चित होना बहुत बुरा है ।।८५।।

तरु बिहोन फल फलत नहीं इह बिबित बात नहीं गोपी है।
जननी जनक योग बिरहित सुत प्रसव कवन बिधि रोपी है।।
मारतंड परचंड प्रभा बिन तिमिर तोम को लोपी है।
युगलानन्य परम पद प्रापति बिना नाम नहिं कोपी है ।।८६।।

बिना वृक्ष के फल नहीं फलता है यह बात सर्वत्र प्रसिद्ध है गोपनीय नहीं है। माता-पिता के संयोग बिना पुत्रोत्पत्ति किस प्रकार संभव है ? सूर्य की प्रखर प्रभा के बिना घने अंधकार को कौन दूर हटाएगा, नष्ट करेगा। उसी प्रकार श्रींनाम के बिना परम पद की कराने वाला और कोई नहीं है ।।८६।।

बिमल बोध बर विभव विवर्धन मरदन महामहादो।
अद्भुत बरन बिहार हार हर हिय हरदम आजादो।।
अमित पंथ प्रतिपादित प्रतिपद प्रमुद देन अनुवादो।
युगलानन्यशरण नामहिं भजु-तजु भव विषम प्रमादो ।।८७।

निर्मल ज्ञान रूप श्रेष्ठ वैभव को बढ़ाने वाले और महामद आदि विकारों का मर्दन करने वाले हैं। श्रीशंकर, ब्रह्मा आदि के हृदय में सर्वदा श्रीराम नाम के अद्भुत वर्ण विहार करते हैं तथा हार-माला की भाँति सुशोभित होते हैं। अनेकों सम्प्रदायों द्वारा प्रतिपादित श्रीनाम प्रतिक्षण पग-पग पर सुख देने वाले हैं यह स्पष्ट कहा गया है। अतः श्री नाम का ही भजन करो तथा कठिन भवजाल व प्रमाद का त्याग करो।८७।

Scanned by CamScanner

जागत रहो गहो डोरी निज नाम सुदाम रंगीली ।
पागत प्रेम परेश प्यार पल-पल प्रति प्रभा छबीली ॥
त्यागत त्रिगुन तार तोडत तम बोडत बिरह रसीली ।
युगलानन्यशरण लागत लय लगन अजूब असीली ॥८८॥

सावधान होकर श्रीनाम की सुन्दर रंगीली डोरी पकड़े रहो । तो परमेश्वर श्रीराम के प्यार स्नेह की प्रतिक्षण छबीली-सुन्दर प्रभा में पग जाओगे । त्रिगुणात्मक सम्बन्धों के तार को त्याग कर तथा अज्ञान को नष्ट कर त्रिगुणात्मक संसार को त्यागकर व अज्ञान जन्य सम्बन्धों को तोड़कर रसमयी भगवद् विरह दशा में डूब जाते हैं । वास्तविक सच्चे अलौकिक प्रेमानन्द में मन लगाकर लीन हो जाते हैं ॥८८॥

बूजे सहज असंक अंक बिन विभव बरन उर धारी ।
दूजे तरफ नहीं दीजे दिल दरब दून दिकदारी ॥
चितवन चमन रमन कीजे चित नाम सनेह सँवारी ।
युगलानन्यशरण बिसरे नहि पल भर अवध विहारी । ८९॥

सहज रूप से निर्भय होकर अधिकाधिक ऐश्वर्य सम्पन्न श्रीनाम को हृदय में धारण करिये । दूसरी ओर दिल नहीं दीजिये, मन न लगाइये अन्यथा कष्ट दूना होकर कठिनाई बढ़ जायगी । चित्त में श्री नाम के स्नेह को सुसज्जित कर भगवत्कृपा-दृष्टि के उद्यान में रमण कीजिए । क्षणभर के लिए श्रीअवधविहारी श्रीराम को नहीं भूलें ।८९।

युगलकिशोर बोर दीजे चित चपल अचल ठहराई ।
नखसिख नवल नेह पूरन अवलोकिय बानि बिहाई ॥
आलस कहर कषाय हाय हिय हिरस अरस दृग लाई ।
युगलानन्यशरण सोभा सर मन मज्जत सरसाई ॥९०॥

चंचल चित को अचल स्थिर करके श्रीयुगलकिशोर में उसे बोर (डुबा) दीजिये । स्वभाव को त्यागकर नवीन स्नेह से पूर्ण होकर श्रीराघवेन्द्र के नखसिख श्रीविग्रह का दर्शन करिये । आलस्य, अपराध, विषय-विकार, हृदय की व्यथा, वासना को रसरहित देखिये, समझिये । सुषमा सरोवर श्रीराम रूप में मन मज्जन करते ही प्रसन्न हो जाता है ॥९०॥

Scanned by CamScanner

इत उत विषन बयारि बहत बहु गरम ज्ञान गुनहारी।
ताते कोशलेशनन्दन पद पदुम सरस सुखकारी।।
जनि भूलो-फूलो संसृति सुख निरखि दोष दुख बारी।
युगलानन्यशरण सियवल्लभ नाम रटिय बलिहारी।।६१।।

ज्ञान, गुण का हरण करने वाली विषयों की अत्यधिक उष्ण वायु (लू) इधर-उधर चारों ओर तेजी से बह रही है। इसलिए कोशलेश नन्दन श्रीराम के चरणारविन्द ही सरस सुखकारी हैं। दोष और दुःख देने वाले इस संसार सुख को देखकर इसमें नहीं भूलो, धोखा मत खाओ और न गर्व करो। श्री सीतावल्लभ जू के नाम का रटन करिये उस पर हम बलिहारी हैं वह धन्य-धन्य है ।।६१।।

लघुभोजन सुचि सत्त्व सुगुन युत बचन मधुर धुनि बोलो।
अचल हमेश रहो आसन थल विकल न भव मग डालो।।
संजम साधि समाधि सुधा सम नाम नेह अनमोलो।
युगलानन्यशरण चितवृति नित बिरह तराजू तोलो।।६२।।

पवित्र सात्त्विक गुणयुक्त स्वल्प भोजन करिये तथा मधुर वाणी बोलिये सर्वदा दृढ़ आसन करके अचल रहो व्याकुल होकर संसार पथ में इधर-उधर में मत घूमो। संयम करके समाधि जन्य-अमृत परमानंद तुल्य अनमोल श्रीनाम स्नेह को समझो। अपनी चित्तवृत्ति को बिरह के तराजू से नित्य तोलो अर्थात् हृदय में श्रीसीतारामजी के नाम स्नेह प्राप्ति की कितनी पीड़ा है यह देखो।।६२।।

नींद निंद्य निज नाश हेत हिय समुझि भली विधि जीतो।
भजन भावना स्वाद एकरस तब सरसाय अरीतो।।
बिना विजय जड़ जहर नींद, नहि मोद-प्रमोद प्रतीतो।
युगलानन्यशरण सुमिरन से बिनसत अखित अनीतो।।६३।।

अपने नाश-हानि के लिए हृदय में निद्रा को निन्द्य मानकर भली प्रकार से उस पर विजय प्राप्त करो। तब पूर्ण रूप से एकरस भजन भावना का स्वाद प्राप्त होगा। जड़तापूर्ण विष निद्रा को बिना जीते मोद-प्रमोद की प्रतीति सुख आनन्द का अनुभव नहीं हो सकता है। श्रीनाम-स्मरण से समस्त अनीतियों का विनाश हो जाता है।६३।

Scanned by CamScanner

संतत शांत सुभाव चाव चष चपल छैल छबि माहीं ।
दुर्मति दाव सुथान सीत हित सत पद रति उतसाही ।।
नाम अनाम धाम मय मन मधि मनन रमन रस राही ।
युगलानन्यशरण बेगम पुर बास सुभग सरसाही ।।६४।।

चंचल छैल छबिनिधि श्रीराम की शोभा में निरन्तर शान्त स्वभाव का भावपूर्वक दर्शन करते हैं। दुर्बुद्धि के ताप से शीतल स्थान प्राप्ति के लिए श्रीजानकी जीवन जू के श्रीचरणों में उत्साहपूर्वक प्रीति करते हैं। प्राकृत संज्ञा–संकेत रहित अप्राकृत तेजोमय श्रीनाम का मन के मध्य में चिन्तन मनन करते हुए नामजापक नामरस के पथिक हैं।

खेद रहित श्रीधाम में निवास कर प्रसन्नता प्राप्त करते हैं ।।६४।

भूपति विजय विलास देश बर नाम अनाम बिराजे ।
श्रीपति सहस साज संयुत सुखसार सुधारस साजे ।।
सात प्रकार जीव तारक प्रिय प्रेम बिबस गुन गाजे ।
युगलानन्यशरण सुन्दर तर कुत्सित अपर अकाजे ।।६५।।

राजा विजय प्राप्त कर जैसे उत्तम देश में बिलास करता है वैसे ही अप्राकृत दिव्य श्रीनाम महाराज श्रेष्ठ हृदय देश में विराजमान हैं। वहीं श्रीपति सीतापति सुखासार श्रीराम सहस्रों सुख उपकरणों से युक्त अमृतरस से सुशोभित हो रहे हैं अथवा दिव्य लीला का आनन्द अमृतरस प्रदान कर रहे हैं।

नित्य, मुक्त, बद्ध, मुमुक्षु आदि सातों प्रकार के जीव प्रेमपरवश होकर अत्यन्त प्रिय तारक श्रीनाम का गुणगान करते हैं। श्रीनाम ही अति सुन्दर है अन्य सब कुत्सित एवं कार्य को बिगाड़ने वाले हैं।६४।

श्रुतिन समूह नैन तारक कल पारक बिबिधि उपाधी ।
हारक हिरस हवाल हाल हिय हर सायत निरुपाधी ।।
बारक विघ्न विकार बारिचर केतु कठोर अगाधी ।
युगलानन्यशरण जारक जन जरनि जबून जलाधी ।।६६।।

श्रीनाम महाराज श्रुतियों के नेत्र, सुन्दर तारने वाले तथा विविध उपाधियों से पार करने वाले हैं। वासनाओं का हरण–नाश करने वाले तथा हृदय में सर्वदा व्यवधान रहित सुख शान्ति प्रदान करने वाले हैं। असाध्य अगाध काम विकार व विघ्न का निवारण करने वाले हैं। जापक जन के हृदय की दूषित जलन–बुराइयों के समुद्र को जलाने वाले बड़वानल हैं ।।६६।।

Scanned by CamScanner

पाप ताप संताप मनोभव करत सहज उच्चाटन।
दुर्मति दाह दरिद्र दवानल प्रबल प्रताप उपाटन।।
मोह मलीन महादीरघ तरु पलक मांझ कटु काटन।
युगलानन्यशरण कलिमल खल नाम दृगन करि डाटन।।९७।

श्रीनाम पाप, ताप, संताप, काम से सहज ही उच्चाटन कर देते हैं। दुर्बुद्धि, ईर्ष्या, दारिद्रय के दावानल के प्रबल प्रताप को उखाड़ देते हैं--नष्ट कर देते हैं। मलिन मोह के विशाल वृक्ष को पलक भर में- क्षण भर में तीक्ष्णता तेजी से काट देते हैं। कलिमल के खल को श्रीनाम महाराज आँख दिखाकर डाँटते हैं ॥९७॥

नीच ऊँच अधिकार वेद वद नाम मध्य सब रीती।
ज्ञान योग कर्मादि बीच बहु बरन विवेक प्रतीती।।
काल कर्म दिक्षा बिहीन सब देश परत्त्व सप्रीती।
युगलानन्यशरण कल फल प्रद नाशक निरय अनीती।।९८।।

नाम जप में नीचे-ऊँचे सभी वर्णजाति के लोगों का सभी प्रकार से अधिकार है ऐसा वेद कहते हैं। ज्ञानयोग कर्मादि के लिए बहुत प्रकार से अधिकार भेद का विवेक है—विचार है। देश, काल, कर्म, दीक्षा की अपेक्षा रहित नाम के परत्व में प्रीति करनी चाहिए। सुन्दर फलप्रद एवं भवबन्धन तथा अनीति का नाशक है ॥९८॥

शाहनशाह अदाह नाम यक अपर वजीर दिवाना।
कोइ चाकर नजदीकी कोइ पुनि फौजदार सरसाना।।
कोउ सुत सदृस भ्रात समता कोउ काम बिलास बखाना।
युगलानन्यशरण नामी निज नित आधीन अमाना।।९९।।

श्रीनाम ही एक ताप रहित शाहनशाह राजाधिराज हैं। अन्य नाम मन्त्री और दीवान हैं। कोई निकटवर्ती दास है तो कोई सेनापति के रूप में सुशोभित हैं। कोई पुत्र, कोई भाई कोई परिवार के सदस्य हैं अत: इनकी क्या समता है केवल वाग्विलास है। स्वयं निज नामी श्रीराम भी मान रहित होकर नित्य श्रीनाम के अधीन वशवर्ती हैं।९९।

बानी बेद बिहार विषय बहु बीच-बीच बररातो।
ताके मध्य अर्थ सूक्षम अति रघुबर कृपा बिभाती।।
द्वैताद्वैत दाह दिल दूषन नाना रंग देखाती।
युगलानन्यशरण परतम परमेश नाम दरसाती।।१००।।

Scanned by CamScanner

श्रुतियों की ऋचाएं अनेक विषयों की बीच-बीच में चर्चाएँ करती हैं। उनके मध्य में अति सूक्ष्म अर्थों का श्रीनाम कृपा से प्रकाश होता है। द्वैत-अद्वैत के दार्शनिक विवाद तथा विभिन्न तर्कों को उपस्थित करती हैं। उन्हीं के द्वारा परतम प्रभु की नाम महिमा का दर्शन होता है ॥१००॥

बिमल बाग अनुराग बिपुल बेदाग सुमन फल फाबी।
सरस स्वाद सीमा सौगुन सुचि सुधा सान सतबाबी॥
मधुर रसेस सदन दीपक दिल वियद दमक महताबी।
युगलानन्य कुसुम रंग सब नाम सुरंग सहाबी॥१०१॥

पवित्र अनुराग बाग उपवन बहुत से सुन्दर स्वस्थ फल-फूलों से शोभित है। सैकड़ों गुना मधुर पवित्र सुधा सम स्वाद (मिठास) की श्रेष्ठ सीमा है। श्रीनाम मधुर विशेष शृङ्गार रस के घर के दीप हैं तथा हृदयाकाश में चमकने वाले चन्द्रमा हैं। और सब नाव कुसुम (कच्चे) रंग वाले हैं किन्तु श्रीनाम सुरंग-पक्के रंग वाले हैं ॥१०१॥

बोध बिरोध अबोध धमक हर नाम रटत छकि छावै।
कर न सकत अवरोध अमर जब अभय नाम समुहावै॥
फरक फरेब फिकर फानी फल विषम फनीश सकावै।
युगलानन्यशरण साबित सियराम नाम अपनावै॥१०२॥

ज्ञान, अज्ञान का विरोध त्याग कर शीघ्रता से निरन्तर नाम रटन की मस्ती में छक जाए। तब देवगण भी कोई विघ्न नहीं कर सकते जब जापक अभय नाम का स्मरण करते हैं। छल, प्रपंच, मिथ्या चिन्ता का विषम विपरीत फल सर्प के समान है। इसलिये पूर्णरूप से श्रीसीतारामजी का नाम अपनाना चाहिये ॥१०२॥

'सी उचरत सौभाग्य सुजस सुख सहज समाधि सवादी।
सकल कलंक पंक दूरी कर होत अनन्य अवादी॥
'ता' तारक तम तोम तरल तन तृष्णा त्रिगुन तगादी।
युगलानन्यशरण श्रीस्वामिनि नाम जपत सतसादी॥१०३॥

श्रीसीतानाम के 'स' का उच्चारण करने मात्र से सौभाग्य, सुयश, सुख तथा सहज समाधि का स्वाद प्राप्त होता है। सम्पूर्ण कलंक पंक हृदय कालुष्य को दूरकर अनन्यता प्रदान करते हैं, अनन्य दासों के लिए कृपादायक हैं। अनन्य होते ही अनन्य कृपा प्रदान करते हैं 'त' शब्द

Scanned by CamScanner

तारने वाले हैं तथा अज्ञानान्धकार समूह में क्षीण होने वाले तन, मन की तृष्णा एवं तीनों गुणों से छुटकारा दिलाने के लिए तगादा करने वाले सिपाही हैं। जब तक अज्ञान जन्य दोष निवृत्त नही होते तब तक 'ता' तगादा करते रहते हैं दोष निवृत्त करके ही रहते हैं। श्री स्वामिनीजू का नाम जपते ही सच्ची प्रसन्नता, कल्याणमंगल प्राप्त होता है ॥१०३॥

श्री जानकी नाम अद्‌भुत मुद-धाम मनोहर प्यारे।
रसना रटत प्रयासरहित बस होत सुराज दुलारे ॥
बारक श्री सियनाम जपत अनुराग उमंग हजारे।
युगलानन्यशरण श्रीस्वामिनी करुना नजर निहारे ॥१०४॥

श्रीजानकीजी के अद्‌भुत सुखधाम श्रीनाम प्रियतम प्यारे श्रीराम के मन को हरण करने वाले हैं। अथवा श्री जानकी जी के अद्‌भुत सुखधाम मनोहर प्यारे श्रीनाम का जिह्वा से रटन–उच्चारण करते ही सुन्दर श्रीराजदुलारे श्रीराम बिना प्रयास के अनायास ही वश में हो जाते हैं। एक बार ही श्रीसियाजू के नाम का जप करते ही अनुराग-प्रेम की हजारों उमंगे उठने लगती हैं मस्ती आने लगती है। श्रीस्वामिनी जू की करुणादृष्टि का अवलोकन करें अथवा अपनी करुणाभरी दृष्टि से वे हमें निहारे ॥१०४॥

श्रीसीता सत नाम कामप्रद सत मत सार बिचारी।
वदत वेद बानी नित नूतन अद्‌भुत स्वाद निहारी ॥
श्रीजानकी जानि जीवन श्रीसीता नाम सदा री।
युगलानन्यशरण स्वामिनि की कृपा प्रमोद अपारी ॥१०५॥

श्रीसीता जी का सच्चा नाम कामप्रद–मनोरथ की पूर्ति करने वाला तथा सत्य सिद्धान्त वेद शास्त्रों का सार कहा गया है। श्रीनाम के नित्य नवीन अद्भत स्वाद का दर्शन करके वेद की ऋचायें उनका गुणगान करती हैं। श्री जानकी प्राणवल्लभ श्रीराम का सदा ही श्री सीतानाम जीवन है। श्रीस्वामिनीजू की कृपा और प्रसन्नता अपार है।१०५

रामा रतिवर्द्धनी रसेसा राघव प्रानपियारी।
रास रंग दरसनी रमन मन रंजनि जनकदुलारी ॥
राग रूप रस जस सुख सदना शशिवदना सुकुमारी।
युगलानन्यशरण रमनी रति मान विमोहन वारी ॥१०६॥

Scanned by CamScanner

श्रीराघव प्राण प्यारी श्रीजानकीजी प्रीति की वृद्धि करने वाली रसों की ईश्वरी हैं श्रीजनक दुलारी रास-रंग की दर्शन कराने वाली श्रीराम को रमण कराकर उनके मन का रंजन करने वाली आनन्द-दायिनी हैं। चन्द्रवन्दना सुकुमारी श्री जू राग, रूप, रस, यश व सुख का सदन-घर है। सुन्दरी रति के मान का विमर्दन करने वाली है।१०६

कोक केलि पंडिता मंडिता कलावती कमनीया।
कमल प्रिया कोमला कोकनद सदृश सुदृग बरनीया॥
कामा कांतिमती कमलाकर पूजित पद रमनीया।
युगलानन्यशरण संसृति दव दारुन दुख दमनीया॥१०७॥

श्री जनक दुलारी प्रियतम विहार निपुणा, शोभामयी, समस्त कलाओं से सम्पन्न, कमनीया-अतीव सुन्दरी हैं। कमल प्रिया, कोमलांगी तथा लालकमल सदृश प्रशंसनीय सुन्दर नेत्रों वाली है। प्रेमस्वरूपा अतीव आभामयी श्रीजानकी जी महालक्ष्मी के कर-कललों द्वारा पूजित पाद-पद्म हैं-जिनके चरणारविन्द पूजित हैं। संसाराग्नि के दारुण दुख-जन्म-मृत्यु के कठिन दुख दावानल को दमन करने वाली हैं॥१०७॥

भव्य भावदा भूरि भलाई बधू रसिक रघुराई।
भाल बिभूषन विशद भूषिता निर्दूषिता सदाई॥
भोग भूत भूतल भवभामिनि पद बंदिता सोहाई।
युगलानन्यशरण भजनीया भजन भावना दाई॥१०८॥

रसिकेन्द्र श्रीराम-पत्नी श्री सीताजी भव्य (सुन्दर) भावों व अनेक कल्याणों को देने वाली हैं। सुन्दर चूड़ामणि चन्द्रिका बिन्दी आदि विशद शिरोभूषण से भूषिता सुसज्जित सौभाग्यशालिनी श्रीजानकी जी सदा ही निर्दोष-अनिन्दिता पवित्र हैं। पृथ्वीतल के समस्त भोग ऐश्वर्य जिनके श्रीचरणों के आश्रित हैं वह पाद-पद्म शिवा द्वारा वन्दित होकर शोभायमान हैं (उमा-रमा ब्रह्मादि वन्दिता। जगदम्बा संतत-मनिन्दिता) सदा भजन करने योग्य स्मरणीया हैं तथा भजन-भावना को देने वाली है॥१०८॥

चामीकर तन तेज निंदिता चारु चातुरी रचना।
चमत्कारिणी चित्तहारिणी चाटु चमक चय बचना॥
चंदन चांद चांदनी चपला चाह चित्त बिच सचना।
युगलानन्यशरण चशमो दो ज्योति जगमगित अचना॥१०९॥

अपने श्री विग्रह की दीप्त आभा से स्वर्ण को निन्दित करने वाली हैं। श्रीजी के श्रीअंगों की सुडौल चातुर्यपूर्ण सुन्दर रचना है। चमत्कार प्रकट करने वाली व चित्तहारिणी प्रिय मधुर अनुकूल वाणी है। श्रीमैथिली जू के चन्दन सदृश सौगन्ध्य चाँद सा सौन्दर्य चाँदनी के सम शैत्य (शीतलता) व चपला की चमक–विद्युत् द्युति सम्पन्न श्री विग्रह को चित्त के बीच में संचय–धारण करने की इच्छा है। प्रत्यक्ष जगमगाती हुई ज्योति का नेत्रों से पान करना है ॥१०९॥

सिया सलोनी सहज सोहावन सारँग नयना बामा।
शरनपालनी शुभगुन खानी कमला केलि ललामा॥
समीचीन सज्जन मन रंजनि सरल सुभाव सुधामा।
युगलानन्य स्वामिनी सबकी श्रीसीता नव नामा॥११०॥

सहज सलोनी सुन्दरी बाला श्रीसियाजू के विशाल नेत्र मृग, खंजन, व कमल के समान सहज सुहावने हैं। कमला नदी में सुन्दर जल क्रीड़ा करने वाली श्री जी शरणागतों का पालन करने वाली व सुन्दर गुणों की खानि जन्मदात्री हैं। सुन्दर सरल स्वभाव व प्रभाव वाली श्रीजानकीजी भलीभाँति सज्जनों के मन को आनन्द देने वाली हैं। नवल सुन्दर नित्य नूतन श्रीसीतानाम वाली श्री जी सभी जीवों की स्वामिनी हैं ॥११०।

मिथिला मोदकरी मिथिलापति नंदनि नवला नारी।
गिरिजा पूजन तत्पर पतिपद प्रेम परा छबि वारी॥
रघुनंदन कल क्रोड विलासिनि सुखरासिनि उजियारी।
युगलानन्य सुनैना रानी सुता सनेह सँवारी॥१११॥

मिथिलेश कुमारी श्रीसीताजी मिथिला को प्रसन्नता प्रदान करने वाली सुन्दरी नित्यकिशोरानारीरत्न हैं। पार्वती पूजन में तत्पर प्रिय-तम पतिदेव श्रीराम के पादपद्मों में परा प्रीति सम्पन्न अद्‌भुत छबि वाली हैं। श्रीरघुनन्दन के सुन्दर क्रोड–अंक में विलास करने वाली सुख की राशि व दीप्तिमती हैं अथवा सुखों की राशि का प्रकाश करने वाली हैं। श्री महाराज जी कहते हैं महारानी सुनैना ने अपनी ऐसी पुत्री को स्नेह से सजाया सँवारा है– पालन पोषण किया है ॥१११॥

श्रीदशस्यंदन भूप पतोहू परम माधुरी सरिता।
सोमबंस जीवनी जानकी जगवंदिता सुचरिता॥
कौतुक सदन सोभिता तरुनी नित्या गुनगन भरिता।
युगलानन्यशरण संपति सद दानी फलन सुफरिता॥११२॥

Scanned by CamScanner

महाराज श्रीदशरथजी की पुत्रवधू परम मधुर रस की प्रवाहमयी सरिता हैं। चन्द्रवंश जीवन प्राण श्री जानकी जी जगत् वन्दिता एवं सुन्दर चरित्र सम्पन्ना हैं। कौतुक-हास विलास विनोदप्रिया, शोभामयी नित्य तारुण्य युक्त तथा अनन्त दिव्य गुण–गणों से पूर्ण हैं। कल्याणमयी संपत्ति रूप फल से सुफलित भरी हुई हैं। परमार्थ संपत्ति प्रदान करने वाली हैं ॥११२॥

यूगजा कूल कलोलनि रसिका कनकभवन मल भ्राजी ।
नव नागरि गुन आगरि प्रीतम प्रानप्रिया सुख साजी ॥
श्रुतिकीरति उर्मिला मांडवी मधुर हांस लखि राजी ।
युगलानन्यशरण सुन्दर लावन्यलता रस राजी ॥११३॥

सरयू तट पर क्रीड़ा करने में रस लेने वाली श्री जू सुन्दर कनक भवन में शोभित हैं। नवीन चातुर्य सम्पन्ना गुणखानि, प्रियतम श्रीराम की प्राणप्रिया सम्पूर्ण सुखों से सज्जिता हैं। श्रुतिकीर्ति, उर्मिला माण्डवी जी के मधुर मन्द हास्य-मुस्कान को देखकर प्रसन्न होती हैं अर्थात् बहनों की प्रसन्नता में प्रसन्न रहती हैं। सुन्दर रसमयी लावण्यलता की पंक्ति हैं।११३

मन्दस्मिता मनोज मानिनी मान प्रहार प्रबीना ।
प्रेम मधुर आसन आसीना छबि निधि पय प्रिय मीना ॥
माननीय मानस मरालिका कलित कंज कर बीना ।
युगलानन्यशरण सुकामदा कादंबिनी नबीना ॥११४॥

मन्द मुस्कान सम्पन्ना, काम–पत्नी रति के मान पर प्रहार करने में निपुणा अर्थात् रति के गर्व को नष्ट करने वाली हैं। मधुर प्रेम के आसन पर आसीन सुषमा सागर श्रीराम जल की सुन्दर मछली हैं—प्रियतम छवि पयोनिधि में सदा मग्न रहती हैं। सुन्दर कर कमलों में वीणा लिये हुए, श्रेष्ठजनों के मानस (सरोवर) में विचरण करने वाली राजहंसिनी हैं। नवीन जलभरी मेघमाला की भाँति सुन्दर कामप्रदा हैं ॥११४॥

श्रीप्रमोदवन कुंज बिहारिनि रसिक बिहारी संगिनि ।
झूलन गीत परायन निज मुद सखिन प्रदायिनि रंगिनि ॥
लज्जावती रसीली ललिता अद्‌भुत नेह तरंगिनि ।
युगलानन्यशरण सीमा सौभाग्य सदैव उमंगिनि ॥११५॥

Scanned by CamScanner

श्रीप्रमोदवनकुञ्ज विहरणशीला, रसिकविहारी श्रीराम संगिनी झूलन एवं गायन में तत्पर, अपनी प्रसन्नता प्रदान करके सखियों का रंजन करने वाली लज्जाशीला, रसीली सुन्दरी, अद्भुत स्नेह की सरिता सुख सौभाग्य की सीमा की उमंगमें उमगती रहती हैं प्रसन्न रहती हैं।११५

श्रीसीता सत नाम सुधा ह्रद मांझ सुमज्जत जोई।
ताको पाप ताप तम कोटिन कलप बिनासन होई।।
और कौन फल अधिक कहौं सुनि सुख सरसो सब कोई।
युगलानन्य रसिक रघुवर बस होत बात नहिं गोई।।११६।।

श्रीसीताजी के शतनाम (शाश्वत नाम) सुधा सरोवर में जो जन मज्जन करते हैं उनके कोटि कल्पों के पाप–ताप व अज्ञान शीघ्र विनष्ट हो जाते हैं इससे अधिक और कौन सा फल कहूँ ? जिसके श्रवण से ही सभी लोगों को सुख प्राप्त होने लगता है। जिस श्रीनाम स्मरण से रसिक रघुवर वश में हो जाते हैं यह बात किसी से छिपी नहीं है ।।११६।।

निगमागम द्रुम दमकदार दुति दायक फल ललिताली।
महामधुर रस रूप मृदुलतर नाम प्रनत प्रतिपाली।।
जेहि फल अमल हेत तरसत शिव शेष सुबिधि बनमाली।
युगलानन्यशरण चाखत चित लाय रहस्य रसाली।।११७।।

वेदशास्त्र का चमकदार प्रभामय वृक्ष प्रकाशमय सुन्दर फल देने वाला है। शरणागत पालक सुकोमल श्रीनाम उस सुन्दर फल के महा-मधुर रसरूप है जिस अमल फल के लिए ब्रह्मा विष्णु महेश शेष तरसते रहते हैं। उस फल के रसास्वादन से–रसपूर्ण रहस्य चित्त में लाते हैं–श्रीजू के नाम कृपाबल से उनके रसमय रहस्य ज्ञात होते हैं अथवा–उस रसपूर्ण श्रीयुगल विहार रहस्य द्योतक श्रीनाम का चित्त लगाकर एकाग्रचित से रसास्वादन कर रहे हैं ।।११७।।

जाके जिय जागे जगमग अनुराग दिमाग रँगीला।
ताके कठिन नहीं कौनेहु बिधि बरनहिं रसिक रसीला।।
छाके छल बल हीन होय सो सरस स्वरूप असीला।
युगलानन्य अवस लागे तिनको सब काम कसीला।।११८।।

जिनके हृदय में जगमगाता हुआ–प्रकाशमय प्रेम प्रकट होता है तथा रसमयी रंगीली बुद्धि प्राप्त होती है उसके लिये नाम–जापक के

Scanned by CamScanner

लिये किसी भी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं होती है ऐसा रसिक–रसीले–रसिकाचार्य कहते हैं। अपने असली वास्तविक सरस स्वरूप में छल–बल–रहित होकर छके रहते हैं– निमग्न रहते हैं। अतएव अवश्य ही उनको समस्त काम कसैले (रसहीन) लगते हैं ॥११८॥

पीरा तन, हीरा के माफिक नैन रोशनी झलकै।
सीरा स्वांस उसास धवल धुनि सुनि वर वरस अकलकै॥
तीसरा सदा रहे रबिजा सुचि सुरसरिता मधि चल कै।
युगलानन्यशरण नाजुक पथ प्रेम चढ़्यो जिय ललकै॥११६।

प्रेम पथ के पथिक के शरीर में पीड़ा शारीरिक व्यथाएँ होने पर भी हीरे की भाँति उनकी नैन रोशनी झलकती रहती है। नेत्रों में चमक–उत्साह प्रसन्नता (आशा की किरणें) भरी रहती हैं। प्रेमास्पद की प्राप्ति में विरही श्रेष्ठ वर्ण पवित्र श्रीनाम की ध्वनि सुनकर निः-शब्द निस्पंद संज्ञाशून्य–होकर ठण्डी साँस लेने लगते हैं। सदा किनारे रहकर प्रवाहित होने वाली यमुना पवित्र सुरसरिता गंगा नदी में चल-कर उसी में पहुँच जाती है (प्रयाग संगम में मिल जाती हैं) उसी प्रकार प्रेमी अत्यन्त सुकोमल प्रेम पथ पर चढ़कर प्रियतम से मिलन की ललक (उत्कण्ठा) लेकर प्रियतम तक पहुँच जाता है ॥११६॥

अन्तर पैठि प्रीति पानिय प्रिय परचो प्रभा प्रकासी को।
नाना नेह नाद नूतन नित सुनिये श्रवन सुपासी को॥
बाहर नजर निरोध किये रस पावो रहस विलासी को।
युगलानन्य नाम रसना रटि लहिए खासु खवासी को॥१२०॥

अन्तर्हृदय में प्रवेश करके प्रियतम के प्रीति रस का पान करिये और उनके प्रकाशित प्रभामय श्री विग्रह का दर्शन करिये। कानों को आनन्द देने वाली नित्य नूतन नेहपूर्ण (प्रीतिवर्धक) विविध नाद-वाणियाँ सुनिये। वाह्यदृष्टि के निरोध के पश्चात् श्रीयुगलकिशोर की रहस्य लीला रस को प्राप्त करोगे। श्रीनाम को रसना से रटकर जपकर मुख्यदासी का पद प्राप्त कीजिये नित्य कैंकर्य प्राप्त करिये ॥१२०॥

बाहर दृग मृग धृग दृश दिशि से खैंचि एकठा कीजे।
लक्ष्य ललित लय लगन लाय अभ्यंतर अमृत पीजे॥
मन मारे बिन काज सरे नहि बार बार मर जीजै।
युगलानन्य चौथ चंदा सम आलस तार तजीजे॥१२१॥

Scanned by CamScanner

मृग मरीरिका–संसार प्रपंच दृश्य दिशा से बाह्यदृष्टि को खींचकर एकत्र कीजिए निरुद्ध करिये। रुचिपूर्वक सुन्दर लक्ष्य की ओर लगन लगाकर अन्तर का अमृत पीजिये। मन को मारे निग्रह किये बिना कार्य सिद्ध नहीं होगा बारम्बार जन्म–मृत्यु का चक्कर लगा रहेगा। चौथ के चन्दा की तरह आलस्य–प्रमाद का त्याग करिये।१२१

तीरथ तरहदार गुनागूं बिल अंदर नहिं जोवे।
भटकत फिरत मिलत कौड़ी नहिं फकत जिन्दगी खोवे॥
सत शास्त्र उपदेश श्रवन करि जागि-जागि सठ सोवे।
युगलानन्यशरण मतलब बिन मूरख फिरि-फिरि रोवे॥१२२

पवित्र बाँके रंगीले दिल के अन्दर क्यों नहीं देखते बाहर भटकटे फिरते हैं किन्तु कौड़ी भी नही मिलती केवल व्यर्थ में जीवन खो देते हैं। सन्तों और शास्त्र के उपदेश का श्रवण करके जाग–जाग कर शठ पुनः सो जाते हैं अर्थात् सदुपदेशों का सम्यक् प्रभाव उनपर नही पड़ता। अतः बिना मतलव के मूर्ख जीव बार–बार रोता रहता है॥१२२॥

रसने अधम अभागिनि पापिनि नाम रटत अलसाती है।
जाहिर जहर जमात छहूँ रस तामें मिलि मदमाती है॥
आखिर खूब खराबी तेरी अनल बीच जर जाती है।
युगलानन्यशरण मुख अंदर नागिन सम दरसाती है॥१२३॥

हे अधम अभागिनि पापिनि जिह्वा! भगवन्नाम का जप करने में आलस्य करती है। प्रत्यक्ष विषस्वरूप छहों रस समूह में सिक्त होकर मदमस्त हो रही है। अन्त में तुम्हारी यह अत्यन्त बुराई अग्नि के बीच में (मृत्यु के बाद अग्निदाह में) जल ही जाती है। भगवन्नाम स्मरण के बिना मुख के अन्दर नागिन के समान दिखाई देती है।१२३

हे रसने! तू धन्य सोहागिनि सीयराम रस पीती है।
बहुत दिनन बीते पर चेती चारु चतुरता लीती है॥
प्रबल अविद्या जनित काम कुल कठिन बाहुबल जीती है।
युगलानन्यशरण पल-पल पर गावत गुनगन गीती है॥१२४॥

हे रसने! तू धन्य और सौभाग्यशालिनी है क्योंकि तू श्रीसीता-रामनाम रस का पान करती है। बहुत दिनों के बाद होश में आयी-विचार आया अतः सुन्दर चातुर्य सम्पन्ना हो–अर्थात् भगवन्नाम परायण हो गई। प्रबल अविद्याजन्य कठिन काम समूह को अपने बाहुबल से

Scanned by CamScanner

जीत लिया है क्योंकि पल-पल पर प्रतिक्षण भगवन्नाम गुण-गणों का गान करती हो ॥१२४॥

भली भक्ति की नींव सींव सुख सर्बस स्वाद सजाया ।
कली मिसाल मोहब्बत पी की सहजहिं सहज खिलाया ॥
गली नबीन प्रबीन नेह की नाजुक शौक समाया ।
युगलानन्यशरण बीना बर बल्लभ नाम बजाया ॥१२५॥

सुन्दर भक्ति की तुम आधार शिला हो सुख की सीमा हो स्वाद का सर्वस्व सजाया है । कली की भाँति प्रियतम के स्नेह को सहजता से सहज में ही खिला दिया सरलता से प्रस्फुटित कर दिया । नवीन प्रवीण प्रेम की गली में सुकोमल रुचि को प्रविष्ट कर दिया है, जागृत कर दिया है । श्री प्रिया प्रियतम के प्यारे नाम की श्रेष्ठ वीणा को तुमने बजाया है ॥१२५॥

रामनाम अभिराम मूल अनुकूल शूल श्रम सामक हैं ।
डार पात फल-फूल मूल सींचे से सकल सचामक हैं ॥
है सबही बिस्तार बीज को बीच कदंब नियामक हैं ।
युगलानन्य रोशनी हर दो तरफ, फकत, निज नाम कहैं ॥१२६।

सौन्दर्यसार श्रीरामनाम अनुकूल होकर पीड़ा और श्रम को शांत करते हैं । मूल (जड़) को सींचने से वृक्ष की शाखाएँ, पत्ते, फल और फूल सभी हरे-भरे हो जाते हैं अर्थात् नाम जप से सकल साधनों की सिद्धि होती है । पत्ते शाखाएँ सम्पूर्ण विस्तार बीज का ही है तथा इन सबका-वृक्ष समूह का नियामक भी बीज ही है । एकमात्र श्रीनामोच्चारण से बाहर भीतर दोनों ओर रोशनी-प्रकाश होता है ॥१२६॥

जेते वेद विदुष बरने वर वस्तु बिचित्र बिलासन को ।
तेते सुख समुदाय जान जीवन निज नेह बिकासन को ॥
परम प्रधान नाम सुमिरन बिन सुगम न प्रेम प्रकाशन को ।
युगलानन्य नाम रटिए मन मारि स्वरूप सुवासन को ॥१२७॥

जितने भी वेद और विद्वान् श्रेष्ठ वस्तु के विचित्रि विलासों का वर्णन करते हैं वे सभी सुख समुदाय प्राणधन प्रियतम के स्नेह का विकास करने वाले हैं । परम प्रधान सर्व प्रमुख श्रीनाम स्मरण के बिना प्रेम का अन्य साधन से प्रकाशित होना सरल नहीं है । स्वरूप-सौरभ

Scanned by CamScanner

(आनन्द) की प्राप्ति के लिए मनोनिग्रह करके श्रीनाम रटिए— स्मरण करिये ।।१२७।।

तीन तार चल चार पांच परपंच प्यार षट्खारी।
सात भान बसु आठ नवो दुःख खानि दशो भ्रम भारी।।
एकादश द्वादश तेरह चौदह दुःख देन निहारी।
युगलानन्य पंचदश षोडश सप्तदशो रुज जारी।।१२८।।

तीन गुणों का तार त्रिगुण-सूत्र, मन, बुद्धि चित्त, अहंकार चार अन्तःकरण की गति, पृथ्वी जल, तेज, वायु, आकाश पाँच प्रपंच-पंचतत्त्व, की सृष्टि का राग, अस्ति (है), जायते (जन्म), वर्धते (वृद्धि) विपरिणमते (परिवर्तन), अपक्षीयते (क्षीण होता), विनश्यति (नष्ट होना) ये छह विकार, अस्थि, मांस, मेद मज्जा, रक्त, रस, वीर्य सप्त धातु निर्मित शरीर का ज्ञान अणिमा, लघिमा, गरिमा, महिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व वशित्व अष्ट सिद्धि (शक्ति), नव निधि-पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप मुकुन्द, कुन्द, नील, खर्व (सम्पत्ति) दशों प्राण ये सभी दुःख-खानि और भ्रम उत्पन्न करने वाले हैं। एकादश इन्द्रियाँ पाँच ज्ञानेंद्रिय पाँच कर्मेन्द्रियाँ एक मन, ग्यारह और बुद्धि मिलाकर बारह इन्द्रियाँ, चित्त लगाकर तेरह इन्द्रियाँ तथा अहंकार लगाकर चौदह इन्द्रियाँ और चौदहाँ त्रिपुटी (इन्द्रियों के विषय तथा उनके देवता) ये सब विषयों में रुचि लेकर दुःख देने वाले हैं। शूल, वात, कफ, पित्त सन्निपात, दाद कण्डु गरह, कुष्ठ ठमरुआ (गठिया) नेहरुआ (स्नायुज रोग) जलोदर, तिजारी, दो प्रकार के ज्वर ये पन्द्रह अथवा सोलह शारीरिक व्याधि तथा, काम, क्रोध, लोभ, मोह, विषय मनोरथ ममता, ईर्ष्या, हर्ष विषाद, दुष्टता, मन की कुटिलता, अहंकार तथा दम्भ (कपट, मद, मान) तृष्णा, त्रिविध ईषणा मत्सर और अविवेक ये सत्रह प्रकार की मानसिक आधियाँ महारोग तन-मन को जलाने वाले हैं ।।१२८।।

ऊन ऊनाइस बीस बिसे तजु बात सु एकइस एही।
बाय इबायस बचन बिलावो नलवावो जग नेही।।
आपा वारि रहो नामहिं पर बृथा वपुष खर खेही।
युगलानन्य नाम सुमिरत रहु गहु गुन भवन निरेही।।१२९।

अठारह उन्नीस अर्थात् न्यून कोटि के देवताओं को भलीभाँति छोड़कर बात इक्कीसवीं यही है कि एकनिष्ठ होकर रहिये बाईसवां है कि बायस-कौए के समान कठोर बचन को त्याग दो, जगत् के स्नेह को

जला दो। सम्पूर्ण अपनापन नाम पर ही न्यौछावर कर दो अन्यथा यह शरीर धूल और तृण के समान व्यर्थ है। घर परिवार से आसक्ति रहित होकर सद्गुणों को ग्रहणकर निरन्तर श्रीनाम स्मरण करते रहो ॥१२६।

सात्त्विक राजस तम गुनमय दश चीज बिचारा चहिए।
देशकाल त्यों प्रजा कर्म जस जन्म ध्यान गति गहिए॥
नीर ग्रन्थ सुचि संस्कार तिमि मन्त्र जाप विधि लहिए।
युगलानन्य सगुन अगुनहुँ पर नाम रमत घर रहिए॥१३०॥

सात्त्विक राजस तामस गुणमय त्रिगुणात्मक इन दस चीजों पर विचार करना चाहिये। जैसे देश, काल वैसे ही प्रजा, कर्म और जैसे जन्म ध्यान की गति देखिये अर्थात् तीनों गुणों से इनका परीक्षण करिये कि ये कौन गुण प्रधान हैं। जल ग्रन्थ, संस्कार और मन्त्र जप की पवित्रता का परीक्षण करके तब विधिपूर्वक उनका ग्रहण करिये। सगुण और निर्गुण में नाम की श्रेष्ठता जानकर नाम स्मरण करते हुये अपने स्थान पर स्थिर रहिये ॥१३०॥

बास यकांत बजार जुवा जुवती जमात विष बातें।
ब्रह्ममहूरत अर्धनिशा परदोष काल गुन गाते॥
नित्त-निवृत्ति दुखद व्यभिचारी भारी खल तन घाते।
युगलानन्य नित्य कामिक हननादि प्रतक्ष देखाते॥१३१॥

बाजार भ्रमण, जुआ, स्त्रीसंग, व्यक्ति समूह व व्यर्थ चर्चा को विष के समान समझकर उनका परित्याग कर नाम जापक एकांतवास करते हैं। ब्रह्म मुहूर्त प्रातःकाल, अर्धनिशा-रत्रि प्रदोष-संध्या इन पवित्र कालों में भगवन्नाम गुणगान करते हैं। शरीर को नष्ट करने वाले दुष्ट व्यभिचारी दुखद भावों को निवृत्त करते हैं। नित्य काम जन्य विकृतियों-प्रवृत्तियों का हनन प्रत्यक्ष दिखाते हैं इन सबका नाश करते हैं ॥१३१॥

जन्म वैष्णव शाक्त छुद्र तिमिध्यान विष्णु वर बामा।
छुद्र भैरवादिक ध्यावन जल गंगा सुचि सुख धामा॥
राजस समुझु गुलाब तमोगुन मद्य हरन अभिरामा।
युगलानन्य नाम जपिए तजि त्रिगुन कषाय कलामा॥१३२।

वैष्णव शाक्त या क्षुद्र कुल में जन्म हो और उसी प्रकार से विष्णु महाशक्ति लक्ष्मीदेवी आदि तथा छुद्र भैरवादिक का ध्यान किया जाय एवं पवित्र सात्त्विक सुखधाम गंगाजल, राजस गुलाब जलादि,

Scanned by CamScanner

तामस गुणसम्मन्न सौन्दर्य सद्‌गुणादि का हरण करने वाला मद्यादि (शराब) का पान या प्रयोग किया जाय किन्तु श्रीमहाराजजी कहते हैं सत्त्व, रज, तम तीनों गुण और विकारों की चर्चा (वषय चर्चा) का परित्याग करके केवल श्रीनाम जपिए ॥१३२॥

नित्य निवृत्ति प्रवृत्ति कठिन पाखंड चंड जिय जानो।
संस्कार मन तनागार जप प्रनवादिक पहिचानो ॥
काम्य छुद्र यक्षादि मन्त्र जप मलिन तजे मुद मानो।
युगलानन्य अनूप नाम रटि भरिए खैर खजानो ॥१३३॥

निवृत्ति, प्रवृत्ति पथ को कठिन तीव्र पाखण्ड समझो अथवा पाखण्डपूर्ण प्रवृत्ति–राग रहित होना अत्यन्त कठिन जानिये। मन व तन की शुद्धि के पश्चात्–प्रणवादिक वैदिक मन्त्रों के जप के काठिन्य को पहिचानो। सरलता से होने वाले सकाम–काम्य कर्श क्षुद्र यक्ष भैरवादिक के मन्त्रजप को मलिन जानकर त्यागने में प्रसन्नता मानो— त्याज्य समझो। अतएव अनुपम श्रीनाम का रटन करके कल्याण व मंगल के खजाने को भरो–कोषवृद्धि करो ॥१३३॥

त्रिगुनमयी सब सृष्टि-दृष्टि भीतर की खोल निहारो।
सीताराम नाम गुन लीला धाम भिन्न निरधारो ॥
इष्ट-मिष्ट अखिलेष्ट प्रदायक नाम निरंकुश धारो।
युगलानन्यशरण नामहिं पर सकल संपदा वारो ॥१३४॥

त्रिगुणात्मक सम्पूर्ण सृष्टि-संसार प्रपंच को अन्तर्दृष्टि खोलकर देखिये। श्रीसीताराम नाम गुण लीला धाम को त्रिगुण से भिन्न समझो। मधुर प्रियतम सम्पूर्ण इष्ट–मनोवांछित फल देने वाले (श्रेय-प्रेय प्रदायक) श्रीनाम को सर्वतन्त्र स्वतन्त्र जानिये। अतएव श्रीनाम पर ही समस्त विभूति सम्पदा को न्यौछावर कर दो ॥१३४॥

बरन मनोहर अमल युगल निज नाम जानकी जानी।
रहस रसाल रसिक वल्लभ रस वस्तु विलच्छन खानी ॥
परब्रह्ममय रेफ–रेफ बिन नाद अकार बखानो।
युगलानन्यशरण दीरघ सोइ हेतु सकल स्वर बानी ॥१३५॥

सुन्दर मनोहर अमल युगल वर्ण श्रीजानकी-जीवन श्रीराम का नाम रसिक वल्लभज् के रसपूर्ण विलक्षण वस्तु के खानि हैं। श्रीराम नाम का रेफ 'र' परब्रह्म स्वरूप हैं। रेफ रहित अकार नाद स्वरूप हैं दीर्घ अकार सम्पूर्ण स्वर व वाणियों का कारण–आधार है ॥१३५॥

Scanned by CamScanner

मध्य मकार छकार सप्त विधि जीव हेत हिय हेरी है।
व्यंजन हल मकार पावनतर प्रनव प्रकृति श्रुति टेरी है।।
अपर अमित रचना रमनीयुत नित नूतन छबि घेरी है।
युगलानन्यशरण अनुपम निज नाम ध्यान सुख ढेरी है ।।१३६।

मकार के मध्य अकार सात प्रकार के जीवों के (कारण हैं) कल्याण के लिए हृदय में अन्वेषण किया है। हलन्त व्यञ्जन मकार 'म' को वेदों ने पवित्रतर प्रणव की प्रकृति कारण 'म्' बिन्दु कहा है। ओंकार माया का कारण है। श्रीराम नाम की अन्य असीम रमणीय (वनिताओं-सखियों से युक्त) नित्य नूतन छबि से घिरी हुई हैं। अनुपम श्रीनाम का ध्यान सुख की राशि हैं ।।१३६।।

नाद स्वरूप मकार अर्ध सोइ बनत उकार बिचारे।
बहुरि विपर्यय करि दीरघ मिलि उभय ओकार निहारे।।
सबरन मानि मकार लीन स्वर प्रथम हिये मधि धारे।
युगलानन्यशरण बिंदुहि सह प्रनव सिद्ध लखु प्यारे ।।१३७।।

नादस्वरूप अर्ध-हृस्व अकार (राम में रेफ का अ) कारण व्याकरणशास्त्र से विचार कर निपातनात् उकार बनता है पुनः विपर्यय करके दीर्घ आकार को प्रथम (अ + उ) करके अ, उ दोनों मिलकर ओकार बन जाता है यह देखें तत्पश्चात् म को 'राम' में तथा 'ओम्' में समान वर्ण मानकर अथवा 'म' को श्रेष्ठ समान उसमें से अकार स्वर निकालकर प्रथम हृदय में विचार करें इस प्रकार 'म्' का बिन्दु बनाकर उस बिन्दु के साथ प्रणव को सिद्ध देखिये ।।१३७।।

अन्तरभूत होत रेफहुं तहं श्रीशंकर मत लीने।
अथवा रेफ उकार किए यक अक्षर प्रकट प्रबीने।।
तामें भेद अखेद भांति बहु फुरत चित्त लय कीने।
युगलानन्यशरण सर्वोपरि युगल बरन मत पीने ।।१३८।।

श्री शिवजी के मत से राम शब्द से प्रणव की सिद्धि में निपातनात् रेफ का लोप करके बनता है अथवा व्याकरण-सूत्र के अनुसार रेफ का उकार करके प्रवीणता-चतुरता से एकाक्षर ॐ प्रकट होता है। श्रीराम शब्द द्वारा भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रणव की सिद्धि की जाय तो इसमें कोई कठिनाई नहीं है। ध्यान देने से बहुत विधियाँ स्फुरित होती हैं। इसीलिये दृढ़तापूर्वक यह स्पष्ट है कि युगलवर्ण 'श्रीराम' ही सर्वश्रेष्ठ सिद्ध होते हैं ।।१३८।।

Scanned by CamScanner

सियवर नाम अंश अंशन में प्रगटत प्रवन पुनीता।
सो सब वेद मन्त्र कारन श्रुति सार उदार प्रनीता।।
ताते और उपाय जाय तजि भजिए रघुवर सीता।
युगलानन्यशरण दृढ़ता विश्वास धारि अविगीता।।१३९।।

श्रीसीताराम नाम के अंश–अंशों में पवित्र प्रणव प्रकट होते हैं वही प्रणव समस्त वेद मन्त्रों के कारण हैं श्रुतियों के सारभूत उदार प्रणव से ही सब प्रणीत–निर्मित हैं। अतएव अन्य सम्पूर्ण साधनों का त्यागकर प्रणव के कारण श्रीसीतारामजी का भजन करिये। विश्वास पूर्वक दृढ़ता से धारणकर विशेष रूपसे गीत-संकीर्तन करना चाहिए।१३९।

सोहं हंस प्रसंस योग ग्रंथन मधि कहुँ–कहुँ भासे।
सो पुनि अंश-अंश संभव तउ प्रीति न परम प्रकासे।।
तत्त्वमसी आदिक जेते बड़ वाक्य नाम अंशा से।
युगलनन्यशरण मन बच तहँ रमिए स्वास उसासे।।१४०।।

परमहंसों द्वारा प्रशंसित 'सोहम्' योग ग्रन्थों के मध्य में कहीं-कहीं दृष्टिगोचर होता है। वह भी पुनः भगवन्नाम के अंश–अंशों कला से संभव है–उद्भूत है तथापि उससे परा प्रीति का प्रकाश नहीं होता। "तत्त्वमसि" आदि जितने भी वेदों के महावाक्य हैं श्रीनाम के अंशों से प्रकट हैं। उन श्रीनाम में मन वाणी से श्वासोच्छ्वास (साँस उसाँस) द्वारा रमण करिये निरन्तर एकनिष्ठ हो नाम स्मरण करिये।।१४०।।

यावत बीज तन्त्र ग्रन्थन मधि मन्त्र सुयन्त्र बिचरनी।
रेफ बिंदु बिन सिद्धि होत नहिं देखिय विदित सुकरनी।।
जड़ पाषान तरे तिन के मिलि यथा सरित मधि तरनी।
युगलानन्य नाम भूपति मनि सुजस लसत तिहुँ धरनी।।१४१

तन्त्र ग्रन्थों के मध्य में जितने भी बीज, मन्त्र–यन्त्र बिचरण करते हैं वे सब रेफ और बिंदु के बिना सिद्ध नहीं होते अर्थात् बन नहीं सकते (इसकी सुकरनी चमत्कार देखिये) यह स्पष्ट रूप से विदित है।

जैसे नदी के मध्य नौकाएँ तैरती हैं उसी प्रकार जड़ पाषाण-पत्थर श्रीराम नाम के बल से मिलकर तैरने लगे। राजाधिराज भूपतिमणि श्रीनाम का सुयश प्रकाश तीनों लोकों में फैल रहा है।।१४१।

महिमा नाम अनंत आप रघुनायक कहि थकि हारे।
या में परम अनूप नामव्रत धारक हृदय बिचारे।।

Scanned by CamScanner

पाखंडी परपंच पगे ते बकत वृथा मति मारे ।
युगलानन्यशरण नामहि महँ रमि रहु सांझ सकारे ।।१४२।।

श्रीनाम की महिमा अनन्त है स्वयं नामी रघुनायक श्रीराम नाम महिमा कहते हुए थककर हार गये। नाम व्रतधारी नाम नैष्ठिक लोग इसमें अनुपम रहस्य का हृदय में बिचार करते हैं। प्रपंच में आसक्त पाखण्डी लोग बुद्धिहीनता के कारण बकते रहते हैं। अतएव सुबह शाम अखण्ड रूप से श्रीनाम में ही रमण करो ।।१४२।।

सुमिरन सेवन सुचि दरसन परसन पुनीत तम नामे ।
संभाषन सब तरह श्रवन मन मनन नाम अभिरामे ।।
नाम सनेह निरत नेही से सजना संग सदा मे ।
युगलानन्य कदंब काम से रहना नित निष्कामे ।।१४३।।

अत्यन्त पवित्र श्रीनाम का ही स्मरण, सेवन, पवित्र दर्शन और जिह्वा से स्पर्श-उच्चारण करें। सभी प्रकार से अभिराम श्रीनाम का ही सम्भाषण श्रवण और मनन करें। श्रीनाम स्नेह सिक्त नाम प्रेमियों का ही सदा संग करें। काम समूह से नित्य निष्काम होकर रहना अर्थात् कामना रहित होकर रहें ।।१४३।।

भजन सार है, भजन सार है, भजन सार है भाई ।
भजन करत सुख स्वाद सरत सब भजन सजन रसिकाई ।।
भजन भाव वल्लभ विनोद निधि वेद-पुरान बताई ।
युगलानन्य भजन नामहि को परम प्रमोद प्रदाई ।।१४४।।

भगवद् भजन ही एकमात्र जीवन का सार है भजन ही सब कुछ है भजन ही कल्याणकारी है। भजन करते ही सम्पूर्ण सुख स्वाद सिद्ध होते हैं। प्रियतम का भजन ही रसिकाई है। भजन भावना ही प्रियतम के मनोविनोद (प्रियतम को प्रसन्न करने) की निधि है ऐसा वेद-पुराणों ने बताया है। श्रीनाम का भजन ही परम-प्रमोद हर्ष प्रदान करने वाला है ।।१४४।।

आदि मध्य परिनाम अमल आनन्द अमन्द सुपावें ।
दश दिशि विश्व बिचित्र महा मुद मंगल तिन्हें देखावें ।।
जिनको लगन लगी नामहि से सो सुख सहज समावें ।
युगलानन्यशरण श्री सियवर नामहि से सरसावें ।।१४५।।

Scanned by CamScanner

भजन के प्रारम्भ और मध्य का यही निर्मल परिणाम–सुफल है कि भक्त अत्यधिक आनन्द को अच्छी प्रकार से प्राप्त करता है। दशों दिशाओं में तथा सम्पूर्ण विश्व में विचित्र अलौकिक महान् आनन्दमय मंगल उन्हें दिखाई देते हैं—अथवा चारों तरफ कल्याणमय मंगलमय विश्व का उन्हें दर्शन होता है। जिनको श्रीनाम से लगन लग गयी है वे सहज सुख-आनन्द में निमग्न हो जाते हैं। श्री सीतापति श्रीराम श्रीनाम से ही प्रसन्न होते हैं ।।१४५।।

चाहे जौन सुथल से सुमिरन सजे शरन सुखदाई को।
सहज सनेह सकाम हीन चाहिय सब बिधि सब ठाईं को।।
बोच-बीच बहु खींच-खांच मतवाले करहिं बड़ाई को।
युगलानन्यशरण समुझ्यो निज रीझन सिय रघुराई को ।।१४६

शरणागत वत्सल श्रीराम का स्मरण चाहे किसी भी स्थल में किया जाए किन्तु सभी स्थानों में सहज स्नेह पूर्वक सभी प्रकार से कामना रहित निष्काम होना चाहिए। मतवाले प्रमत्त लोग ही बीच–बीच में प्रतिष्ठा हेतु खींचतान करते हैं।

श्रीमहाराजजी कहते हैं हमने अपने प्रिया–प्रियतम श्रीसीतारामजी के रीझने प्रसन्न होने का उपाय नाम–स्मरण समझ लिया है ।।१४६

जमन किरात गयंद औगुनी गनिका गीध गनाए हैं।
प्रेम समेत पुकारि नाम श्रीराम प्रगट ह्वै आए हैं।।
सुर मुनीस गति अगम जौन अनयास परम पद पाए हैं।
युगलानन्यशरण बानी तिन कहु कब परा उठाए हैं ।।१४७।।

यवन, किरात, गजराज, गणिका, गीध आदि जो पतित गिनाये हैं उन सभी ने प्रेम सहित श्रीराम का नाम लेकर जब पुकारा तो श्री-राम प्रकट होकर–प्रत्यक्ष होकर सामने आ गये हैं। देवताओं एवं मुनियों के लिये भी जो अगम दुर्लभ स्थल है उस परम पद को इन लोगों ने अनायास (बिना प्रयास के सहज) ही प्राप्त कर लिया है। इन जीवों ने कब परा वाणी से नामोच्चारण किया है? ।।१४७।।

है सब चित मन भ्रांत वृथा अनुराग नाम में राखो।
सब साधन परिपाक खाक नापाक गुनत रस चाखो।।
बेपरवाह रहो सीतावर आस गहो गुन भाखो।
युगलानन्यशरण पावो अनयास खास अभिलाषो ।।१४८।।

Scanned by CamScanner

जो कुछ है सब मन और चित्त की व्यर्थ भ्रांति–भ्रम है अतः श्रीनाम में ही अनुराग रखो। सभी साधनों की परिपक्वता (फल) तुच्छ व अपवित्र है ऐसा समझकर नाम रस का रसास्वादन करो। चिन्ता रहित रहो तथा श्री सीताराम जी का आश्रय ग्रहण करो–भरोसा करो एवं उनके गुणों का गान करो अथवा श्री सीताराम जी के भरोसे निश्चिन्त होकर उनका गुणानुवाद करो। इस प्रकार सहज ही विशेष अभिलाषा (भगवत्प्रेम) प्राप्त करोगे ॥१४८॥

चाहे कोटि कथे कोई विज्ञान योग बर बाते।
दरसावै फल सद्य सकल पै मानो तुम उत्पाते॥
सावधान सुख खानि नाम प्रिय प्रान भजो तजि घाते।
युगलानन्य नाम सुमिरन बिन मोद नहीं दिन राते॥१४९॥

चाहे कोई करोड़ों बार योग और विज्ञान की विशेष चर्चा करे और शीघ्र ही उसकी फल प्राप्ति दिखा दे किन्तु तुम उसे उत्पात (उपद्रव विघ्न वाधा, हानि) ही समझना। सावधान (जागरूक) होकर छल त्याग कर सुखहानि प्राणप्रिय श्रीनाम का भजन करो। श्रीनाम स्मरण बिना अहर्निश-अखण्ड स्थायी प्रसन्नता प्राप्त नहीं होगी।१४९।

वेष असेष सदंभ कपट छल छिद्र जानि के छोरो।
पक्षपात निज नाम नेह चित बीच गहो विष बोरो॥
नाम परत्व महत्त्व श्रवन करि सब साधन तृन तोरो।
युगलानन्यशरण तोको मन बारहिं बार निहोरो॥१५०॥

सम्पूर्ण वेश–बाह्य वेशभूषा का चक्कर दम्भ, कपट, छल, छिद्र सहित हैं यह जानकर छोड़ दो विष में डूबे हुए पक्षपातों को दुराग्रह पूर्ण वृत्ति को त्यागकर हृदय के बीच में श्रीनाम स्नेह को ग्रहण करो। श्रीनाम के परतत्त्व महत्व का श्रवण करके सब साधनों को उनपर न्यौछावर कर दो। इस प्रकार हे मन ! मैं तुमसे बार--बार यही अपेक्षा करता हूँ ॥१५०॥

नाम निहायत नीक लगे पन पगे-जगे जस जानी को।
ताम निहायत तार तगे भव भगे भावना बानी को॥
आम इमारत दाह दगे नहि नेह–नेह मुदमानी को।
युगलानन्य सुधाम बसे रस रसे मौज सुख खानो को॥१५१॥

Scanned by CamScanner

जिन्हें श्रीनाम अत्यन्त प्रिय लगता है ऐसे दृढ़ संकल्प नामनिष्ठ साधकों के हृदय में प्रियतम श्रीराम का सुयश जागृत होता है—श्रीराम चरित्र प्रकट होते हैं। सम्पूर्ण रूप से श्रीनाम व नामी से जिनका पूर्ण सम्बन्ध है उनकी भावना एवं वाणी से संसार निवृत्त हो जाता है। सामान्य लौकिक भवन जो अग्नि से जल सकता है उस सांसारिक सम्पत्ति से उन्हें स्नेह न होकर उनका स्नेह सदा प्रसन्न रहने वाले श्री राम से होता है। ऐसे प्रेमी सुन्दर अवध धाम में निवास करके सुख राशि श्रीरामनाम के रस में आनन्द पूर्वक पगे रहते हैं ॥१५१॥

क्या मेरी-मेरी में सनमुख मरि-मरि नाहक नचते हो।
संगी कौन कहो प्यारे बेबूझ विषय बिच पचते हो॥
जाग उठो मद मोह रैन से सपनो सुख क्यों सचते हो।
युगलानन्यशरण सुमिरन श्रीनाम रहस नहिं रचते हो॥१५२।

क्या अपनेपन के महत्त्व में (सांसारासक्ति के सम्मुख होकर) मर-मर कर व्यर्थ का चक्कर खा रहे हो ? कहो इस संसार में तुम्हारा कौन साथी है ? बिना जाने बूझे विषयों के मध्य पच रहे हो—श्रमित हो रहे हो। उठो, इस मद मोह की महारात्रि से जागो, मिथ्या स्वप्न को क्यों सत्य समझ रहे हो। श्रीनाम स्मरण के रहस्य में क्यों नहीं रँगते हो ? ॥१५२॥

जौन नाम अनुराग हेत भूपेश राज सुख छोरे।
रंक समान बृत्ति धारन करि विषय वासना बोरे॥
सो सब सार नाम हासिल तोहि तू सठ नाता तोरे।
युगलानन्य जहान हानि निधि तिन सन डोरी जोरे॥१५३॥

जिस श्रीनाम स्नेह के कारण भूपतियों राजाओं ने राज्य सुखों का परित्याग कर रंक-दरिद्र की भाँति वृत्ति धारण करके अकिंचन होकर भिक्षाटन द्वारा जीवन निर्वाह करते हुए विषय वासना को समाप्त कर दिया है। वही सम्पूर्ण कल्याण का सार श्रीभगवन्नाम तुम्हें प्राप्त है किन्तु तुम उससे नाता तोड़ते हो और सांसारिक हानिप्रद्र सम्पत्ति से सम्बन्ध जोड़ते हो ॥१५३॥

मन मूजी मजबूत धूत रजपूत भूत सम बांका।
माने नेक नहीं कहना सब तौर विनय युत आंका॥
श्रीसद्गुरु श्रीनाम शरन लहि चले न तिसका डांका।
युगलानन्यशरण फाजिल फन किया कबूल सुफांका॥१५४।

Scanned by CamScanner

ये दु:ख देने वाला दुष्ट मन बहुत ही धूर्त राजपूत और भूत के समान उपद्रवी (पराक्रमी) व टेढ़ा है। कभी भी बात नहीं मानता है। हमने सभी प्रकार से विनय पूर्वक कहकर देख लिया है। श्रीसद्-गुरु के व श्रीनाम की शरण ले लेने पर इस मन की डकैती–जोर नहीं चलता है। मन के निरोध करने की कला में जो निपुण हैं उन्होंने मन को वश में करने के लिये सुन्दर उपवास करना स्वीकार किया है।१५४।

नाहक निखिल उपाय हायप्रद हेत जीव जड़ जहडे।
गाहक अगुन अमान ज्ञान निज भूल छारनिधि गहडे।।
दाहक दुरित दुरूह पूर उर नूर नाम नव नहडे।
युगलानन्यशरण कल्पन लगि नाम रहित जम कहडे।।१५५।

समस्त साधन व्यर्थ, दु:खप्रद हैं तथा अज्ञानी जीव के लिये धोखा-भ्रम है। निर्गुण मानरहित ब्रह्म ज्ञान के जो ग्राहक–ज्ञानपथ के पथिक हैं वे भी अपनी भूल से गहरे क्षारसमुद्र–संसार में मग्न हो जाते हैं। भयंकर पापों को जलाने वाले श्रीनाम नवीन प्रकाश से हृदय को पूर्ण प्रकाशित कर रहे हैं। अतएव श्रीनाम रहित जीव को कल्प कल्पान्तरों तक यमराज यातना देते हैं।।१५५।।

दुर्लभ जन्म अनेक धर्म करि जौन मुक्ति श्रुति गावें।
सो कलिकाल कराल कठिन मधि नाम बाहुबल पावें।।
सुमिरत नाम दयाल देर नहिं उचित पाव पल भावें।
युगलानन्यशरण बिनवत तउ अधम न नेह बढ़ावें।।१५६।।

अनेक जन्मों में विविध धर्म करके श्रुति प्रतिपादित जो दुर्लभ मुक्ति प्राप्त होती है वह इस कठिन कराल कलिकाल में श्रीनाम के बाहुवल प्रताप से प्राप्त हो जाती है। दयानिधि श्रीनाम के स्मरण करते ही बिना देर किये अविलम्ब क्षण भर में मनोवांछित उचित फल प्राप्त होते हैं। श्री महाराज जी कहते हैं कि हम इस मन से प्रार्थना करते हैं तो भी यह अधम मन श्रीनाम में प्रेम नहीं बढ़ाता है।।१५६।।

रसना नवल मिली केहि हित तोहि रे सठ सोइ समुझावो।
बाद-बिबाद करत हारत क्यों जनम महामनि दावो।।
संगी अपर कौन तेरे सँग सोउ अब विदित देखाओ।
युगलानन्यशरण नामहि बिन आया रतन बहावो।।१५७।।

Scanned by CamScanner

हे शठ मन ! तुम मुझे यह बताओ कि तुम्हें यह सुन्दर रसना किस लिये मिली है ? वाद-विवाद करते हुए क्यों जन्म रूपी महामणि को दाँवपर लगाकर हार रहे हो ? अब दूसरा और कौन सा साथी तुम्हारे संग है यह जानकर मुझे दिखाओ । समक्ष आया हुआ रत्न (जीवन रूपी प्राप्त रत्न) को श्रीनाम विहीन क्यों बहा रहे हो ॥१५७।

प्रथम बिचारि निहारि चहूँ दिशि सुदृग उघारि अभागे ।
किसके साथ सनेह सजत तू मोहि अचंभो लागे ॥
सुत तिय धन धर धाम धोख ही देत अंत तक पागे ।
युगलानन्यशरण नखरापन तजि नामहिं अनुरागे ॥१५८॥

अभागे मन ! प्रथम विवेक दृष्टि से विचार करके चारों दिशाओं में सुन्दर नेत्र खोलकर देखो कि किसके साथ तुम स्नेह कर रहो हो ? मुझे आश्चर्य हो रहा है—पुत्र, पत्नी सम्पत्ति, शरीर घर ये सब अन्त में धोखा ही देते हैं । आखिर इसमें क्यों पगे हो ? अत: इस नखरे विडम्बना को त्यागकर नाम में अनुराग करो ॥१५८॥

उदर विषाद बीच बरनी बहु बार करार कसाई ।
बाहर करिय कृपाल-कृपा करि परिहरि हिय निठुराई ॥
सुनत श्रवन रघुवीर प्रनतहित पीर हरत सुखदाई ।
युगलानन्यशरण आवत इत भूल्यो नाम अघाई ॥१५९॥

अरे निष्ठुर मन ! गर्भवास में जिस कष्ट का अनुभव हुआ तब तुमने बहुत बार दृढ़तापूर्वक प्रतिज्ञा करते हुए प्रार्थना की है कि हे कृपालु प्रभु हृदय की इस निष्ठुरता को त्यागकर अब कृपा करके हमें गर्भ से बाहर करिये। कर्ण कुहरों द्वारा यह सुनते ही शरणागतपालक श्रीरघुनाथ जी ने पीड़ा का हरण कर गर्भ से बाहर कर सुख प्रदान किया किन्तु तुम यहाँ आते ही संसारासक्त होकर पूर्ण रूप से श्रीनाम को भूल गये ॥१५९॥

महा अधम मल मूल शूल हित करत अहित नहि जाने ।
कौन कहौं करतब याको सब भांति विषमता ठाने ॥
श्रीसतगुरू शुचि संत संग सठ सजत आलकस आने ।
युगलानन्यशरण नामहिं भज तज बहु बाद बयाने ॥१६०॥

अत्यन्त मलिन महा अधम मन अपने कष्ट के लिए ही अपना अहित कर रहा है यह वह नहीं जानता है। कैसे क्या कहूँ इसके करतब

Scanned by CamScanner

करनी को कि इसने सब प्रकार से विषमता ही ठान रखी है-दुराग्रह ही करता है। श्रीसद्गुरु व सन्तों का पवित्र संग करने में शठ आलस्य करता है। बहुत से वादों की चर्चा भ्रामक बातों का त्याग करके श्रीनाम का ही भजन करो ।।१६०।।

कलिमलमथन व्यथन थिरताहन गहन गरूर गबांवन।
कलित कोटि कल्यान सदन आधार अपार प्रभावन ।।
पारावार पार कारन पर पोत विपक्ष परावन।
युगलानन्यशरण सावन घन सम सत नाम सोहावन ।।१६१।

कलि के मल का मथन करने वाले, व्यथा पीड़ाओं को शान्त करने वाले, करोड़ों कल्याण मंगलों के सुन्दर भवन के आधार, असीम प्रकाश युक्त श्रीनाम विघ्नों को दूरकर संसार सागर से पार करने वाली श्रेष्ठ नौका है। सावन के मेघ की भाँति सदा सुहावने श्रीनाम हैं।१६१।

मधुर मुमुक्षू सपदि चाह उत्साह सतत परधामहिं।
तिनके हित प्रिय पुष्ट सुष्ठु पाथेय परम अभिरामहिं ।।
पावन तर पावन पुनीत कबि बचन विशद विश्रामहिं।
युगलानन्यशरण सज्जन जन रंजन जीवन नामहिं ।।१६२।।

अत्यन्त शीघ्र परधाम प्राप्ति की सतत उत्साहपूर्ण इच्छा करने वाले मधुर रसोपासक मुमुक्षुओं के लिए श्रीनाम परम सुन्दर, रुचिकर, पौष्टिक सुस्वादु पाथेय-राह कलेऊ हैं। पवित्रों में पवित्रतम, कवियों की पुनीत वाणी-काव्य के लिए श्रीनाम व्यापक विश्राम स्थल हैं। सज्जनों को प्रसन्नता प्रदान करने वाले श्रीनाम उनके जीवन प्राण हैं ।।१६२।।

बीज विशेष समान धर्म धरनीधर प्रान समाना।
अकथ-अपथ पाखंड पलायक नाम सुधारस साना ।।
भूति बिभूति प्रसूति अभयप्रद परमानन्द खजाना।
युगलानन्यशरण संतत रुचि, बरधन सरस सोहाना ।।१६३।।

समस्त धर्मों के विशेष बीज श्रीनाम शेष के प्राण के समान हैं। अशास्त्रीय कल्पित कुपंथ पाखण्ड को भगाने वाले श्रीनाम अमृतरस से सिक्त हैं। श्रीनाम लौकिक पारलौकिक समस्त सम्पत्ति के जन्मदाता निर्भयता प्रदान करने वाले तथा परमानन्द के कोष हैं। निरन्त रुचि-वर्धक श्रीनाम सुन्दर रससम्पन्न हैं ।।१६३।।

Scanned by CamScanner

भक्ति बरेस विसेस मुक्ति कलकरन आभरन आछे ।
महामुनिन मानस विहंग सम पक्ष युगल छबि काछे ।।
मोह नदीश ईश तट इत उत नामि मगन मन पाछे ।
युगलानन्यशरण सुन्दर बिबि बरन विभव जन वांछे ।।१६४।

श्रेष्ठ भक्ति व विशेष मुक्ति स्त्री के श्रीनाम सुन्दर कर्णभूषण हैं। महामुनियों के मानस पक्षी के सुन्दर दो पंखों के समान शोभित हैं तथा मोह महासमुद्र के दोनों तटपर इस पार से उस पार जाने के लिए श्रीनाम ही सहारा हैं। ऐसे मगन मन प्रेमी के पीछे नामी प्रभु घूमते हैं। ये दोनों सुन्दर वर्ण जापकों को वांछित ऐश्वर्य प्रदान करने वाले हैं।१६४।

अगुन–सगुन के पार परम प्रभु सोउ श्रीनाम अधीना ।
नीच-ऊँच गृह गमन करत नहिं सकुचत प्रेम प्रवीना ।।
बारक बदत रदत अरिकुल रन अमन करन पन पोना ।
युगलानन्यशरण सद्गुरु बिनु लखि न परत गति झीना ।।१६५

अगुण–सगुण के पार परात्पर परम प्रभु श्रीसीतारामजी श्रीनाम के अधीन हैं। प्रेम प्रवीण श्रीनाम नीच-ऊँच किसी भी जन के गृहगमन घर जाने में संकोच नहीं करते हैं । एक ही बार नामोच्चारण करने से रणांगण में काम क्रोधादि शत्रुओं को नष्टकर शान्ति प्रदान करते हैं यह इनका दृढ़व्रत है। श्रीसद्गुरु कृपा के बिना नाम व नामी के सूक्ष्म रस–रहस्य दृष्टिगोचर नहीं हो सकते हैं ।।१६५।।

काम कुटिल कलिकाल ख्याल तम तोम हनत हिय हरषें ।
सहस सूर शशि सदृश बिलच्छन सुचि समर्थ पन परषें ।।
रैन ऐन संका बिहीन बल बिसद बूँद बर बरषें ।
युगलानन्यशरण नेहिन पर सपनेहू न अमरषें ।।१६६।।

श्रीनाम द्वारा कुटिल काम, कलिकाल जन्य विचार तथा अज्ञा–नान्धकार के समूल नष्ट होते ही जापकों का हृदय हर्षित हो जाता है। हजारों सूर्य, चन्द्रमा की भाँति विलक्षण पवित्र सामर्थ्य युक्त श्रीनाम को देखते हैं। श्रीनाम बल से दिन-रात शंका रहित निःशंक निश्चिन्त होकर श्रीप्रियतम के विरह में अश्रुपात करते हैं । ऐसे प्रेमियों पर श्रीनाम स्वप्न में भी कभी अप्रसन्न नहीं होते ।।१६६।।

जयति स्वच्छ सुखमा सोहाग सर सरस सीय सुठि नामा ।
अखिल अमित वित अमल असल दिन दून-दून प्रद सामा ।।

Scanned by CamScanner

श्रीरघुवीर धीर हित मानहु आकरषन अभिरामा ।
युगलानन्यशरण स्वामिनि श्रीनाम अमोल ललामा ।।१६७।।

स्वच्छ सुषमा सौभाग्य के सरस सरोवर रूप सुन्दर श्रीसीतानाम की जय हो। सम्पूर्ण असीम पवित्र वास्तविक शान्ति धन को दिन प्रति-दिन दूना करके प्रदान करने वाला श्रीसीता नाम धीर श्री रघुवीर के लिये सौन्दर्यपूर्ण आकर्षण है। ऐसा श्रीस्वामिनी जू का श्रीनाम सुन्दर व अनमोल हैं ।।१६७।।

कोउ यक कठिन कुचाल कलह करि कढ़्यो छुधा दुःख ही ते।
जहँ-तहँ फिरयो फजीहत सहि फल अंत परयो पथ रीते ।।
तहाँ बिचार उदार फुरयो संकट पट कहुँ निज सीते ।
युगलगानन्य कहत छूटयो तन पहुँच्यो धाम अभीते ।।१६८।।

कोई एक व्यक्ति किसी दुष्कारण से गृह कलह और भूख से पीड़ित होकर घर से निकल गया। परेशानियों को सहते हुए इधर उधर घूमता रहा, अन्त में थक गया पथ–मार्ग में पड़ा रहा। वहाँ उसके हृदय में विचार उत्पन्न हुआ कि इस संकट में कोई वस्त्र मिलता तो हम उसे सीते और पहनकर अपनी सीत-ठंडक की निवृत्ति करते।-इतना कहते हुए उसका शरीर छूट गया और वह 'सीते' इस श्रीनाम के बल से अभयप्रद धाम में पहुँच गया ।।१६८।।

द्विज यक रुज बहु भाँति ग्रसित तन पाय पाप अपुनीता ।
कृषीकार अति मंद महाखल पहुँच्यो खेत अभीता ।।
चहुँ दिशि हेरि हरहि पूछयो जन कित हिराय दइ सीता ।
युगलानन्य इहै अंतर आयुष पुनि तासु बितीता ।।१६९ ।

एक द्विज ने अपने पाप के कारण बहुत रोगों से ग्रसित शरीर पाया। कृषि कर्म करने वाला वह अत्यन्त अज्ञानी महादुष्ट द्विज निर्भय होकर अपने खेत में पहुँचा। वहाँ चारों दिशाओं में हल को खोजकर देखा और एक व्यक्ति से पूछा कि सीता (फाल) कहाँ खो दी। यह पूछते ही इसी बीच उसकी आयु समाप्त हो गयी मृत्यु का समय निकट आ गया ।।१६९।।

अंतक दूत कठिन आये मजबूत अस्त्र बहु धारे ।
लेन जान चाहे निज पुर प्रति पेखि अधर्म अपारे ।।
ताही समय दिव्य सीतावर परिकर पहुँचि निवारे ।
युगलानन्य सुनाय सुजस सिय नाम सुधाम पधारे ।।१७०।।

Scanned by CamScanner

उसी समय अनेक दृढ़ अस्त्र धारण किये हुए यमराज के भयंकर दूत आ गये। उसके अनेक अर्धम–पापों को देखते हुए यमपुरी में उसे ले जाना चाहते थे किन्तु इसी समय श्रीसीतारामजी के दिव्य परिकरों–पार्षदों ने पहुँचकर उन्हें भगा दिया। सुन्दर श्रीसाता नाम का सुयश महिमा सुनाकर पार्षद द्विज सहित सुन्दर धाम को चले गये ॥१७०॥

नामी नाम अभेद वेदविद वर्दाहि विशेष प्रचारी।
तामे रंचकहू संसय नहिं देखिय दृष्टि पसारी॥
द्वादस अंग–अनंग रंग हर रूप नाम छबि धारी।
युगलानन्यशरण नामहु मधि छहूँ मात्रा प्यारी॥१७१॥

वेदवेत्तागण श्रीनाम व नामी प्रभु का अभेद विशेष रूप से वर्णन करते हैं। इसमें रंच मात्र थोड़ा भी सन्देह नहीं है दृष्टि को फैलाकर विवेक दृष्टि से देखिये। श्रीविग्रह के बारहों अंग (नखशिख पर्यन्त) कामदेव की शोभा को लज्जित करने वाले श्रीनाम ही रूप सौन्दर्य को धारण किये हुए हैं ॥१७१॥

मिश्री कन्द सिता सकुचत शत सुधा मधुरता मीठी है।
युगल नाम आराम रामरस दाम अपर सुख सीठी है॥
वृथा बढ़ावत चाव भाव रस नीरस अनल अँगीठी है।
युगलानन्यशरण नामहि रमि दियो सकल जग पीठी है॥१७२

श्रीनाम की मिठास के आगे शक्कर, मिश्री कन्द सभी संकुचित हो जाते हैं। श्रीनाम का माधुर्य अमृत से सैकड़ों गुना अधिक है। सुख-प्रद युगलनाम धन श्रीराम रस के सम्मुख अन्य सभी सुख सीठी है। व्यर्थ ही इच्छाओं में रस की भावना को बढ़ाते हो। वह सब नीरस हुई आग की अँगीठी है। अतएव समस्त संसार से पीठ देकर विमुख होकर श्रीनाम में रमिये ॥१७२॥

तीरथ अमित दान कोटिन ब्रह्मांड योग जप जागा।
बिबिध भाँति व्रत नेम ध्यान तप त्याग असेष बिरागा॥
ज्ञान अनंत बिसद बिज्ञानहुँ संयुत अमन अदागा।
युगलानन्यशरण समता नहि नवल नाम अनुरागा॥१७३॥

करोड़ों ब्रह्मांड के तीर्थ, अमित दान, योग जप, यज्ञ, विविध व्रत, नियम, ध्यान, तप, त्याग, पूर्ण वैराग्य, असीम ज्ञान, व्यापक विज्ञान संयुक्त दोष रहित शांति नवल श्रीनाम के अनुराग से इन सबकी समता नहीं की जा सकती है ॥१७३॥

Scanned by CamScanner

ज्ञानी अमल अकार रटे धरि ध्यान धारना सांचो।
योगी जन रेफहिं ध्यावहिं नित गगन गुफा बिचराचो॥
जे सियराम सनेह सने सो जपैं बरन युग यांचो।
युगलानन्यशरण तिनही की छूटत कठिन पिसाची॥१७४॥

ज्ञानी जन सच्चे ध्यान धारणा पूर्वक अमल अकार का उच्चारण करते हैं। योगीजन गगन–गुफा के बीच में अनुरागपूर्वक नित्य रेफ का ध्यान करते हैं। जो श्रीसीतारामजी के स्नेह में सने हुए हैं वे रकार–मकार युगलवर्ण श्रीराम नाम का स्मरण करते हैं। उन्हीं की कठिन आशा पिशाची निवृत होती है॥१७४॥

नाम पियूष पान कीने हर सायत हाजिर झुकते हैं।
चाहै जहाँ जाय बेगम दिल अव्याहत नहिं रुकते हैं॥
सनमुख मार करे खल-दल-मल मुख छपाय क्यों लुकते हैं।
युगलानन्यशरण खाहिस दिसि बार-बार धिक थुकते हैं॥१७५

श्रीनामामृत का पान कर लेने पर श्रीसीताराम–नाम स्नेही जन हर समय मदमस्त रहते हैं। प्रसन्नतापूर्वक मन जहाँ चाहे वहाँ चल देते हैं। अव्याहत निर्बाध गति से चलते हैं कहीं रुकते नहीं अर्थात् निश्चिन्तता स्वतन्त्रतापूर्वक निर्भय विचरण करते हैं। क्रोधादिक दुष्टों पर ये सम्मुख होकर प्रहार करते हैं किन्तु क्रोधादिक मुख छुपाकर भागने (छिपने) लगते हैं तब उन्हें ललकारते हैं तथा इच्छाओं को बार–बार धिक्कार करके घृणापूर्वक त्यागते हैं॥१७५॥

नाम प्रसाद पाय पावन पद असद बासना कांपी।
काल कराल बिहाल भये छाया छलछिति छकि छापी॥
निर्भय निज निर्लेप लगन लहि आसा अमल न व्यापी।
युगलानन्य असोच चैन शरनागत चित बिच थापी॥१७६॥

श्रीनाम के प्रसाद से पुनीत पद की प्राप्ति हो गयी तब बुरी वासनायें काँपने लगती हैं, भयभीत हो जाती हैं। जब ऐसा कठिन समय आया कि सभी व्याकुल हो गये तथा छल प्रपंच से आच्छादित हो गये इससे घबड़ाकर लोग पृथ्वी में छिपने के लिए आश्रय ढूँढ़ने लगे तब जिन्होंने निर्भय एवं अनासक्त होकर श्रीनाम से लगन लगाई उनके पवित्र हृदयमें किसी प्रकार की आशा व्याप्त नहीं हुई। ऐसे श्रीनाम के शरणागतों के हृदय में शोकरहित शान्ति स्थापित हो गयी॥१७६॥

Scanned by CamScanner

रेफ अकार अनूप एकरस लखन राम रस राते हैं।
दीरघ स्वर श्रेयस विचित्रतर शत्रुसाल सरसाते हैं।।
मधुर मकार अकार भरत भवभान विहीन सोहाते हैं।
युगलनानन्यशरण व्यंजन बिच चेतन शक्ति सजाते हैं।।१७७।

श्रीनाम के रेफ में अनुपम एक रस अकार श्रीरामचरणारविन्द रस रसिक श्रीलखनलाल जी हैं। दीर्घ स्वर–अकार में परमार्थ स्वरूप अद्भुत श्रीशत्रुघ्नलाल जी शोभांयमान हैं। मधुर मकार के अकार में संसारातीत श्री भरतलाल जी शोभित हैं। अकार रहित व्यंजन 'म्' में चेतन शक्ति–जीव सुशोभित है ।।१७७।।

युगल किशोर स्वरूप अनूपम रेफ प्रेमप्रद प्रीतम हैं।
महिमा अगम अथाह महामुनि बर्दाहि विमल गुननीतम हैं।।
नाम अर्थ दुर्वार अनल हर अनरथ समन सुमीतम हैं।
युगलानन्यशरण नामहिं जो जपत सो साँच सुधीतम हैं।।१७८।

युगलकिशोर श्रीसीताराम स्वरूप अनुपम 'रेफ' प्रेम प्रदान करने वाले प्रियतम प्रेमास्पद हैं। स्मरण करने योग्य श्रीनाम की अगम अथाह निर्मल महिमा का वर्णन महामुनीन्द्रगण करते हैं। सुन्दर मित्र के समान दुःखदाह का हरण व अनर्थों का शमन करने वाले श्रीनाम का अर्थ जानना अत्यन्त कठिन है। वही सच्चे बुद्धिमान हैं जो श्रीनाम का जप करते हैं ।।१७८।।

इहै परम परमारथमय निज सार अर्थ सुखरूपं।
अपर जगत मुख कथन परावरनाथ बिमुख दुख धूपं।।
नाम अर्थ अनवद्य अलौकिक काढ़त जिय तम कूपं।
युगलानन्यशरण सुमिरन सिरमौर सबल मत भूपं।।१७९।।

श्रीनाम परमार्थमय व सुख स्वरूप है यही श्रीनाम के अर्थ का सार है। सबके स्वामी श्रीरामनाम से विमुख होकर अपर प्रपंच जगत् की चर्चा दुःख व संताप का कारण है। पवित्र व अलौकिक श्रीनाम के अर्थ जीव को अज्ञान कूप से निकालते हैं। निश्चित रूप से श्रीनाम का स्मरण भूप शिरोमणि–सर्वश्रेष्ठ हैं ।।१७९।।

मूल शक्ति तिमि प्रनव छीर निधि वासी विष्णु महाना।
रमानाथ गुन लीन जीव इत्यादिक अर्थ बखाना।।

Scanned by CamScanner

युगलाकिशोर युगल परिकर निज नित्य अर्थ सरसाना ।
युगलानन्यशरण समुझे सद सार रहस्य समाना ।।१८०।।

श्रीनाम के मूल शक्ति, प्रणव, क्षीरसमुद्रशायी महान् भगवान् विष्णु एवं रमानाथ नारायण के गुणों में तल्लीन जीव इत्यादि अनेक अर्थ कहे गये हैं किन्तु श्रीसीतारामजी एवं उनके परिकर ही नाम के नित्य सिद्ध सुन्दर अर्थ हैं । निरन्तर शाश्वत सार रस-रहस्य यही समझिये अर्थात् श्रीनाम का परिकर वृन्द सहित श्री सीताराम जी का अर्थ ही ग्राह्य है ।।१८०।।

जग मुख अर्थ अनर्थ ग्रहन करि बिमुख भए बहु प्रानी ।
सियवल्लभ सनमुख सुन्दर सुचि अर्थ रहित अभिमानी ।।
पंडितपनो प्रकाश करहिं पर परहिं काल मुख मानी ।
युगलानन्यशरण कहिए किमि कलियुग कठिन कहानी ।।१८१।।

संसारोन्मुख जीव (श्रीनामसे भोगादि प्राप्ति होती है) अर्थरूप अनर्थ का ग्रहण करके बहुत से प्राणी भगवद्विमुख हो गये । श्रीजानकी वल्लभज् के सम्मुख करने वाले श्रीनाम के सुन्दर पवित्र अर्थ से रहित (अर्थ को न ग्रहण करके) विद्या अभिमानी लोग अपने बुद्धि वैभव के अनुसार पांडित्य का प्रकाश प्रदर्शन करने लगे किन्तु वे मानी पण्डित काल के मुख में पड़ते हैं अर्थात् समयानुसार उनके अर्थ लुप्त हो जाते हैं अतएव इस कलियुग की कठिन कहानी (मनोनुकूल कल्पित मतों की कथा) का कैसे वर्णन करें अथवा संसारोन्मुख प्राणी अर्थ का अनर्थ करके श्रीसीताराम विमुख हो जाते हैं । अभिमान रहित होकर सिय-वल्लभ के सम्मुख होना ही पवित्र अर्थ है । मात्र वाचिक पाण्डित्य का प्रदर्शन करने से यह निश्चित है कि उनपर काल का प्रभाव पड़ता है । इस कलिकाल की कठिन कहानी (छलदम्भ का आश्रय लेने वाले लोगों) के विषय में क्या कहें ।।१८१।।

इष्ट स्वरूप अनूप मिष्ट निज नाम मांझ नित झांके ।
बार-बार बलिहार करत अनुराग सुधा रस छांके ।।
रसना रटत रहे आरत ह्वै सपनेहुं कबहुं न थाके ।
युगलानन्यशरण सुनाम से बिमुख खाक ही फांके ।।१८२।।

श्रीनाम के अक्षरों में झाँककर नामार्थ में ध्यानपूर्वक अपने अनुपम मधुर इष्ट स्वरूप श्री सीताराम जी को देखते हैं । बारम्बार उनपर

Scanned by CamScanner

स्वयं को न्यौछावर करते हुए स्नेह सुधारस में छके (तृप्त) रहते हैं। आर्त होकर रसना निरन्तर श्रीनाम का उच्चारण करती है स्वप्न में भी नहीं थकती है। जो श्रीनाम से विमुख हैं वे संसार में धूल ही फाँकते हैं–जीवन व्यर्थ गँवाते हैं उन्हें कोई लाभ प्राप्त नहीं होता।१८२।

श्वास उसास बिलास रास अभिलाष समेत उचारे।
कर्माकर्म बिकर्म धर्म तजि शरम सँकोच न धारे॥
चशमा नाम लगाय नयन निज नामी रूप निहारे।
युगलानन्यशरण बादी बद बाद बोच नहिं हारे॥१८३॥

श्रीसीताराम जी के रास विलास के दर्शन की अभिलाषा करते हुए प्रतिश्वास में श्रीनाम का उच्चारण करते हैं। विधि निषेधात्मक सम्पूर्ण कर्मों एवं सामान्य आदि धर्मादि व शर्म संकोच को त्याग देते हैं। नाम का चश्मा नेत्रों में लगाकर (नाम की सहायता से) नामी श्रीसीतारामजी के रूप का दर्शन करते हैं। कुतार्किक विपक्षियों के वाद–विवाद में कभी भी नहीं हारते अपने विश्वास में दृढ़ रहते हैं।१८३।

कोटिन बेद पुरान संहिता शास्त्र सन्त सुखदाता।
नाम महत्त्व परत्व करे मुद भरे रैन दिन जाता॥
नाम सेवाय अपर साधन सब अंतक बदन समाता।
युगलानन्य साँच बानीबर बदत नहिं अलसाता॥१८४॥

करोड़ों वेद, पुराण संहिता शास्त्र एवं सन्तगण प्रसन्नतापूर्वक दिन–रात सुखप्रद श्रीनाम के महत्त्व, परत्व का वर्णन करते हैं। श्रीनाम के सिवाय अन्य सभी साधन काल के मुख में समा जाते हैं। श्रीमहाराज जी कहते हैं हमें सच्ची श्रेष्ठ बात कहने में आलस्य नहीं आता॥१८४।

बर विज्ञान हेतु रेफज स्वर प्रथम सन्त श्रुति साखी।
ज्ञान अकार उकार दुतिय पुनि कारन अमल सुभाषी॥
परा भक्ति बर बीज मधुर मनहरन मकार सुराषी।
युगलानन्य नाम सुमिरन हित पल-पल मन अभिलाषी॥१८५

रेफ के प्रथम स्वर आकार श्रेष्ठ विज्ञान के कारण हैं वेद और सन्त इसके साक्षी हैं। पुनः द्वितीय आकार से बनने वाले उकार ज्ञान के निर्मल कारण कहे गये हैं। मधुर मनोहर मकार परा भक्ति के श्रेष्ठ बीज है। ऐसे श्रीनाम के स्मरण के लिये प्रतिणक्ष मन उत्कण्ठित रहता है॥१८५॥

Scanned by CamScanner

चारों महावाक्य अंतर निज नाम बरन अनुमानो।
अर्थ समर्थ मनन निशिदिन करि विषय भावना भानो ।।
शुद्ध स्वरूप विवेक अर्थ श्रुति वाग सिरोमनि मानो।
युगलानन्यशरण मत वादन मध्य नहीं उरझानो ।।१८६।।

वेद के चारों महावाक्य श्रीनाम के युगल वर्ण के अन्तर्निहित हैं ऐसा समझो। ऐसे समर्थ श्रीनाम के अर्थ का प्रतिदिन मनन-विचार करते हुए विषय भावना को त्याग दो। विवेक सहित नामार्थ के शुद्ध स्वरूप को वेद की श्रेष्ठ वाणी मानो। अन्य मतों व वाद-विवाद के मध्य मत उलझो ।।१८६।।

जीव ईश सम्बन्ध सनातन नाम कृपा से झलके।
साधन साधत जाय कलप तउ देस नहीं दिल दलके ।।
इष्ट नाम विश्वास विगत क्यों पावे प्रेम प्रबल के।
युगलानन्यशरण समझो सब तौर नाम गुन भल के ।।१८७।

ईश्वर और जीव का जो सनातन शाश्वत सम्बन्ध है वह नाम की कृपा से ही झलकता-दिखाई देता है। साधना करते हुए कल्प बीत जायें किन्तु दिव्य देश का हृदय में प्रकाश नहीं होता है। इष्ट नाम के विश्वास के बिना उत्कट प्रेम प्राप्त नहीं कर सकता। सब प्रकार से श्रीनाम के उत्तम गुणों को समझो ।।१८७।।

चारु चमत्कारी चिद्वाचक रसिक रकार बिचारो।
सुख सर्वेश वेश बोधक सत अमल अकार निहारो ।।
ममता मोह मदन मर्दन मुद मोद मकार प्रमानो।
युगलानन्यशरण सत् चित् आनन्द नाम ही जानो ।।१८८।।

सुन्दर चमत्कारपूर्ण, रसमय रकार को चिद्वाचक समझो। सुखमय सर्वेश्वर के स्परूप का बोध कराने वाले निर्मल सद्वाचक अकार का दर्शन करो। मोह ममता, काम को नष्ट करने वाले मुदप्रद मकार को आनन्द वाचक मानो। इस प्रकार सच्चिदानन्द स्वरूपनाम को ही जानिये ।१८८।

आशिक असल अजूब वही जो नाम पलक नहिं भूलें।
नामी लगन लगाय नाम अनुराग झूलना झूलें ।।
नाम हीन साधम सुपीनहूँ छीन दीन प्रतिकूलें।
युगलानन्यशरण नामहिं रमि रहिए सरजू कूलें ।।१८९।।

Scanned by CamScanner

वही सच्चा अलौकिक आशिक-प्रेमी है जो एक पल भी श्रीनाम को नहीं भूलता। श्रीसीतारामजी से लगन लगाकर-स्नेह सम्बन्ध जोड़-कर अनुराग रूपी झूले में झूलता है। नाम विहीन पुष्ट साधनों को भी क्षीण, तुच्छ व अपने प्रतिकूल समझता है। ऐसे नाम में रमण करते हुए श्रीसरयू तट पर रहिये ॥१८९॥

युगल बरन हिय हरन एक रस रटिये रगर लगाई।
वृथा वाक नापाक खाक परिपाक बराक बिहाई ॥
सतसंगति संतत सजि के सुख सर्बस लहो सदाई।
युगलानन्यशरण खाहिस खटका दिल दूर बहाई ॥१९०॥

मनोहर युगलवर्ण श्रीनाम की रगड़ लगाकर दृढ़तापूर्वक करिये। श्रीनाम से अतिरिक्त व्यर्थ वाक्य समुदायों का अपवित्र, धूल सम सिद्ध होने वाले तुच्छ वस्तु की भाँति त्याग करो। निरन्तर सत्संग करके सर्वदा सम्पूर्ण सुख प्राप्त करो। इच्छाओं और चिन्ताओं को हृदय से दूर बहा दो—पृथक् कर दो ॥१९०॥

रिद्धि-सिद्धि नवनिद्धि निहारत नैन रहे निज नामी।
सिर उठाय नहिं सकहिं तकहिं निर्देस बिगत बदनामी॥
मेहनत हीन-दीन दुनिया तिमि वेष सुनोन हरामी।
युगलानन्य नाम शरनागत भए प्राप्त पर स्वामी ॥१९१॥

जिनके नेत्रों में नामी प्रियतम प्रभु का निवास है उन्हें रिद्धि-सिद्धि व नवों निधि निहारा (देखा) करती है किन्तु वे श्रीनाम प्रेमी उन रिद्धि-सिद्धियों की ओर सर उठाकर (आँख उठाकर) नहीं देख सकते अपितु अपयश के भय से रहित निर्भय होकर अपने प्रभु के आदेश की प्रतीक्षा करते हैं। वे दीन दुनियाँ लोक-परलोक के लिये श्रम रहित होते हैं। उसी प्रकार उनका वेश भी अकृतज्ञ सा होता है अर्थात् वे ऋणत्रय की परवाह नहीं करते। श्रीनाम के शरणागत होने पर श्रेष्ठ स्वामी श्रीसीतारामजी प्राप्त होते हैं ॥१९१।

जिनको स्वाद विवाद बिगत निज नाम निरंतर प्यारे।
तिनको हरज मरज सम तम सुख गरज नेक नहि धारे॥
नाम बिना साधन अनन्त हितकारी रंच न प्यारे।
युगलानन्यशरण नामहिं रटि दोउ दिशि दफतर फारे ॥१९२।

Scanned by CamScanner

वाद-विवाद रहित होकर जिनको निरन्तर अपने प्यारे प्रियतम के प्रिय श्रीनाम में स्वाद आता है। उनको हानि, रोग की भाँति दुःख सुख की तनिक भी परवाह-गरज नहीं होती। अनन्त हितकारी साधन भी उन्हें श्रीनाम के बिना रंच मात्र (थोड़े) भी प्रिय नहीं लगते हैं। श्रीनाम का रटन करके उन्होंने दोनों ओर के पन्नों को फाड़ दिया अर्थात् जन्म-मृत्यु, स्वर्ग-नर्क के बन्धनों को तोड़ दिया ॥१९२॥

मस्तक लसत रकार रीति युत तेहि थल ताहि उचारे।
त्रिकुटी बसत अकार अनूपम रसत समेत उचारे ॥
युगल अधर मधि मधुर मानप्रद सुखद मकार सुधारे।
युगलानन्यशरण लोमन प्रति प्रसरत नाम बहारे ॥१९३॥

मस्तक में सुशोभित रकार को विधिपूर्वक उसी स्थल से उसका (मूर्धा से) उच्चारण करे। भ्रूमध्य में रहने वाले अनुपम अकार का रहस्य सहित उच्चारण करें। दोनों ओष्ठों के मध्य में मधुर सम्माननीय सुखद मकार को सुन्दर रीति से धारण करें, उच्चारण करें। इस प्रकार जप करने से रोम-रोम से श्रीराम की बहार फैलती है, नाम प्रस्फुटित होता है ॥१९३॥

ज्ञानी-ज्ञान लिये नामहिं लय लावत हित निर्बाना।
बर निर्बेद संग त्यागी जन योगी-योग समाना ॥
कर्मी-कर्म धर्म बरनी युत बरन रटत रसखाना।
युगलानन्य नवल नामी निज प्रेम अमल मस्ताना ॥१९४॥

ज्ञानी जन ज्ञान की दीक्षा लेनेपर भी निर्वाण (मोक्ष) की प्राप्ति के लिये श्रीनाम में ही चित्त को लगाते हैं। श्रेष्ठ वैराग्य युक्त संग त्यागी जन व योगी जन श्रीनाम के द्वारा ही योग में समाहित होते हैं। कर्म, धर्म एवं वर्णाश्रम युक्त कर्मकाण्डीजन रसपूर्ण युगल वर्ण श्रीनाम का रटन करते हैं। नाम जापक अपने सुन्दर नामी प्रियतम के प्रेम नशे में मस्त रहते हैं ॥१९४॥

योगेश्वर ज्ञानीश भक्तिवर अपर विकार बिसारे।
रटैं निरंतर नाम मननयुत जीवन जान विचारे ॥
निज-निज मत अनुकूल नाम शुचि अर्थ करत दुति धारे।
युगलानन्यशरण नामहिं बल अनायास भव पारे ॥१९५॥

Scanned by CamScanner

अन्य समस्त विकार रहित होकर योगेश्वर ज्ञानीश्वर भक्तवर— योगी, ज्ञानी, उपासक सभी श्रीनाम को अपना जीवन-प्राण समझकर निरन्तर मनन करते हुए रटन करते हैं। अपने–अपने विचारों के अनुकूल सभी श्रीनाम के पवित्र अर्थ की दिव्यता को धारण करते हैं। इस प्रकार श्रीनाम के बल पर अनायास–सहज में ही भवसागर से पार हो जाते हैं ॥ १९५ ॥

पांवर तर पशु हनन निरत बिन नाम सकल जन जापें।
नाम प्रताप ताप तारे तम रहित सुराग अलापें॥
इत उत खोज करे नाहीं कुछ कलिल कलंक कलापें।
युगलानन्यशरण नामी नर से मन मनमथ कांपें ॥१९६॥

पशु–हत्यादि पाप कर्मों में निरत अनेक पामर जीवों ने बिना नाम की महिमा जाने श्रीनाम का उच्चारण किया है वे सभी श्रीनाम के प्रभाव से दुःखों से तर गये, त्रिताप व तम अज्ञान से रहित हो गये और प्रेम विभोर होकर आलाप आनन्द पूर्वक नाम–गान करते हैं— आनन्द की परिपूर्णता का अनुभव करते हैं। फिर वे कलंक मुक्त दृष्टि से इधर–उधर कुछ नहीं खोजते अर्थात् दोष पूर्ण दृष्टि से नहीं देखते हैं प्रेमपूर्ण दृष्टि उन्हें प्राप्त हो जाती हैं नाम जापक नर से कामदेव का मन भी काँपता है ॥ १९६ ॥

करन कषाय बहाय नाम बर बिरह नार निधि मांही।
जीवत मरन कबूल करो परिहरो बिस्व छल छांही॥
चातक धरन धरो दायम दिल गहि श्रीसतगुरु बांही।
युगलानन्यशरण प्रीतम रस कहो न काहू पांही ॥१९७॥

श्रीनाम के श्रेष्ठ विरह समुद्र में कालुष्य के कारणों को बहाकर जीते हुए मरना स्वीकार करो। सम्पूर्ण आकांक्षाओं व देह–सुधि से रहित हो जाओ। विश्व–प्रपंच के छल कपट का त्याग कर दो। श्रीसद्‌गुरु का आश्रय लेकर चातक की धारणा (चातकवृत्ति) को सदा दिल में धारण करो। प्रियतम के इस रस को किसी के समक्ष न कहो ॥१९७।

तैल मधुर मधु धार सदृश नित नाम प्यार मन कीजे।
जो कोऊ कुछ कहे बैन दुःख दैन जानि तजि दीजे॥
नाम रंग जे रँगे सतत तिन संग सजत सुख लीजे।
युगलानन्यशरण सुमिरन से अखिल कलपना छीजे ॥१९८॥

Scanned by CamScanner

तैलधार एवं मधु की धारा सदृश निरन्तर अविच्छिन्न रूप से नित्य मन से श्रीनाम को प्यार करिये सतत श्रीनाम का चिन्तन करिये। यदि कोई कुछ कहे तो दुःख देने वाली वाणी समझकर उसका त्याग कर दीजिये। निरन्तर श्रीनाम रंग में रँगे हुये रसिक नाम जापकों का सहवास करके सुख प्राप्त करिये। श्रीनाम स्मरण से सम्पूर्ण पश्चात्ताप, पीड़ाएँ नष्ट हो जाती हैं ॥ १९८ ॥

सावधान व्यवधान हानि हरि हिरस हवा हनि हेरो।
नाम हरित हिय लाय भाय भल ज्ञान गरूरी गेरो॥
किसही से न करो सोहबत तजि तिरगुन मेरो तेरो।
युगलानन्यशरण सुमिरन सम्बन्ध सुसाजु सबेरो ॥१९९॥

सावधान होकर विघ्न–बधाओं की हानि को नष्ट करके तथा सूक्ष्म इच्छाओं की वायु चपलता को देखकर नष्ट करो। हरे-भरे प्रसन्न हृदय से श्रीनाम को सुन्दर भाव सहित हृदय में स्थापित करके ज्ञान के अभिमान को नष्ट करो। त्रिगुणात्मक मेरे–तेरे अपने–परायेपन को छोड़कर किसी का संग न करो। श्रीनाम स्मरण से प्रतिदिन सुन्दर सम्बन्ध स्थापित करो ॥ १९९ ॥

सुमिरन बिन पल आध व्याध भव बाध उपास सही है।
ताही ते अपराध नाम अभिराम प्रमोद मही है॥
नाम ललाम कृपाल चारु चित चितवन चहन चही है।
युगलानन्य नाम रमि कै नहिं सूरति बाम बही है॥२००॥

श्रीनाम स्मरण के बिना आधा पल (क्षणार्ध) भी सचमुच पीड़ा, भव बाधा देने वाला होता है यही उपासना सही है। इसलिए श्रीनाम की आराधना करो जो सुन्दर हर्ष भूमि है, प्रसन्नता प्रदान करने वाली है। ललित ललाम कृपालु श्रीनाम के सुन्दर कृपा कटाक्ष को मन से प्राप्त करने की चाह होनी चाहिए। इस प्रकार नाम में रमण करके वृत्ति विपरीत दिशा संसार में प्रवाहित नहीं होता है ॥ २०० ॥

गनपति गिरा गिरीश गौरि गुरु गोविंद जेहि जस छाके।
शेष महेश दिनेश वेश मुनि भूप सुगुन गनि थाके॥
जाको बिरद बिबित वैभव बर अंड कोटि लगि ताके।
युगलानन्यशरण करुनानिधि नाम शरन मन झांके॥२०१॥

Scanned by CamScanner

गणेश, सरस्वती, गौरी शंकर, गुरुबृहस्पति, श्रीकृष्ण जिसके यश में मगन रहते हैं । शेष, महेश, सूर्य उच्चकोटि के महामुनीन्द्र जिनके सुन्दर गुणगणों की गणना–प्रशंसा करके थक गये। जिसकी महिमा व श्रेष्ठ ऐश्वर्य करोड़ों ब्रह्माण्डों तक में प्रसिद्ध है ऐसे करुणानिधान श्रीनाम की शरण में जाने के लिये मन लालायित–प्रतीक्षारत है ॥ २०१ ॥

घूमत घन समान घायल घर द्वार न सूझत शोका ।
असी चार झूला झूलत झुकि परत खाय झट झोका ॥
हर यक तरह तलास तरन तनि उतरि न शक्यो अशोका ।
युगलानन्यशरण नामहिं रटि टूट्यो डोर अरोका ॥२०२॥

अज्ञानी जीव बादलों की तरह घूम रहा है और पीड़ित श्रान्त होकर उसे शोक के मारे घर द्वार कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है । चौरासी लाख योनियों के झूले में झूलता रहता है और झट से झोंका खाकर झुक पड़ता है गिर जाता है अर्थात् जन्म-मृत्यु के चक्कर में पड़ा रहता है । हर प्रकार से खोज की कि कोई हमें थोड़ा इस चक्र से उबार देता किन्तु किसी भी प्रकार से शोक रहित होकर इस झूले से उतर नहीं सका, पार नहीं हो सका अर्थात् ऐसा कोई निश्चित साधन नहीं मिला जो हमें पार उतार सके। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीनाम के रटन से ही यह श्रृंखला बिना रोक-टोक के सहज में टूट गयी ॥२०२।

भरतखंड के जीव जाहिं जमसदन जबहिं तजि देहा ।
अंतक हृदय होत भारी दुःख बोलत सहित सनेहा ॥
कर्म मही मधि जाय बहुरि तुम आये इत खर खेहा ।
युगलानन्यशरण सौगम नहिं रटे नाम सजि नेहा ॥२०३॥

भारतवर्ष के जीव जब देह त्याग कर यमपुरी में जाते हैं तब उन्हें देखकर यमराज के हृदय में भी भारी दुःख होता है और वे स्नेह सहित प्रेम पूर्वक कहते हैं–''कर्मभूमि भारतवर्ष में जाकर भी पुनः तुम यमलोक में आ गये क्या अभी तक धूल फाँकते रहे ? बार-बार खेद है कि तुमने स्नेहपूर्वक नाम रटन नहीं किया ॥ २०३ ॥

बार–बार धिक्कार करत श्री धर्मराज दृग भीने ।
अतिशय सुलभ पतित पावन प्रभु रामनाम नहिं लीने ॥
वृथा विविध बहु बाद बिषय बकि संत संग नहिं कीने ।
युगलानन्यशरण ताको फल भोगो भाग विहीने ॥२०४॥

Scanned by CamScanner

अश्रुपूरित नेत्रों से देखकर श्रीधर्मराज बार-बार उसको धिक्कारते हैं कि तुमने अत्यन्त सुलभ व पतित पावन प्रभु श्रीराम का नाम नहीं लिया। विविध वाद-विवाद तथा विषयों की व्यर्थ बकवास करते रहे किन्तु सन्तों का संग नहीं किया अतः भाग्यहीन ! अब इसका फल भोगो ॥ २०४ ॥

जेहि छिन नाम जपत प्रानी पन प्रीति प्रतीति सजाई।
वाही समे हरीश चतुरमुख मुनिगन करें बड़ाई ॥
सत्य-सत्य सत बार सत्य श्रीनाम विभव अधिकाई।
युगलानन्यशरण सुमिरन बिन निमिष-निमिष धिगताई ॥२०५

जिस क्षण प्रतिज्ञापूर्वक स्नेह सम्बन्ध सजाकर जो प्राणी श्रीनाम जप करने लगता है उसी समय ब्रह्मा, विष्णु व मुनिगण उनकी प्रशंसा करने लगते हैं। सच है सैकड़ों बार सत्य है निश्चित रूप से श्रीनाम के वैभव का बाहुल्य सत्य है कि श्रीनाम की महिमा नहीं कही जा सकती। श्रीनाम स्मरण के बिना जीवन के क्षणों के लिये बार-बार धिक्कार है।२०५

साधन धाम वपुष सुख साधक मानुष श्रुति सद भाषें।
सो सब भाँति पाय प्रीतम प्रिय नाम पियूष न चाषें ॥
सुरपति निरय नगर जो सुख तेहि हेतु चाह चित राषें।
युगलानन्य नाम भजु रे इह बात सुनत सठ माषें ॥२०६॥

मनुष्य शरीर साधन का धाम तथा सुख साधक है— कल्याण प्राप्त करने का उपाय है यह वेद और सद्ग्रन्थ कहते हैं। सब प्रकार से सुन्दर मनुष्य शरीर प्राप्त करके वह प्रियतम प्रभु के प्रिय नामामृत को नहीं चखते हैं किन्तु इन्द्रलोक के नरकतुल्य सुख के लिए चित्त में चाह करते हैं। श्रीमहाराज जी कहते हैं कि श्रीनाम का भजन करो इस बात को सुनकर शठ ! तुम नाराज-कुपित होते हो ॥ २०६ ॥

रसना नाम रटो आलस तजि बाद बितर्क बिहाई।
यामे कहा कलेश होत सोऊ कहिए समुझाई ॥
फेर समा दुर्लभ देखो दृग खोलि प्रपंच पराई।
युगलानन्यशरण नामहिं में रहो हमेश समाई ॥२०७॥

तर्क, कुतर्क एवं आलस्य को त्यागकर रसना से श्रीनाम रटो। इसमें तुम्हें क्या कष्ट है ? यह समझाकर बताइये। पुनः यह दृश्य (मानव जीवन प्राप्त होना) दुर्लभ है। प्रपंच त्यागकर आख खोल कर देखो और सदा श्रीनाम में ही समाये रहो ॥ २०७ ॥

Scanned by CamScanner

राम नाम शमशेर जेर जग करन कंज जब लेवोगे।
कोटिन रिपु कामादिक हर कर जीति मोदमन भेवोगे।।
अविचल राज साज अनुपम सुख, सरस असन नित जेवोगे।
युगलानन्यशरण भवनिधि में भूलि पांव नहि देवोगे ।।२०८।

भव बन्धन (संसार प्रपंच) को नष्ट करने के लिये श्रीरामनाम की तलवार जब करकमलों में लोगे तब करोड़ों कामादिक शत्रुओं को पराजित करके विजय प्राप्त करके सुखी होओगे—मन प्रसन्नता में डूब जाएगा। अविचल राज्य के सुन्दर अनुपम सुख एवं रसपूर्ण भोजन नित्य प्राप्त करोगे अर्थात् परमानन्द से परिपूरित रहोगे। फिर कभी भी संसार समुद्र में भूलकर नहीं जाओगे ।।२०८।।

खबरदार हरदम रहिए गहिए श्रीसतगुरु बानी को।
लोकरीति बिपरीत समुझि के त्यागो जगत कहानी को।।
ममता नाम श्याम सुन्दर छबि समता सहज जहानी को।
युगलानन्यशरण आसा हर सायत सिय ठकुरानी को ।।२०९।

सदा सावधान रहकर श्रीसद्गुरु की महावाणी को ग्रहण करिये। लोकरीति को विपरीत समझकर संसार की कथा–व्यर्थ चर्चा को त्याग दो। श्याम सुन्दर श्रीराम के नाम एवं सुन्दर रूप से ममता-अपनापन एवं संसार में सहज समता का भाव होना चाहिए। सदा सर्वदा स्वामिनी श्रीसिया जू की आशा–भरोसा होना चाहिये ।।२०९।।

बंधन विषय बाल बोधन बन बानी बिकल बितानी को।
छोड़े छल छाया छन सुख रस मोड़े बदन बिमानी को।।
जोड़े जिगर जान जीवन जस बोड़े गुमर गुमानी को।
युगलानन्यशरण थोरे में रीझत सारंग पानी को ।।२१०।।

विषयों का बन्धन बाल बुद्धि सम है अर्थात् विषयों की प्राप्ति मचलते हुये बच्चे को बहलाने के समान है। सांसरिक चर्चा व्याकुलता को बढ़ाने वाली है। विषय भोगों के क्षणिक सुख के रसास्वादन को छल की छाया (छलावा, धोखा) समझकर छोड़ दे और उससे अभिमानी बदन को मोड़ दे, विषयों से अन्यमनस्क होकर मुखमोड़ ले। जीवन प्राण श्रीसीतारामजी से हृदय को जोड़ें तथा उनके सुयश सिन्धु में अपने गर्व गुमान को बोर (डूबो) दे। शार्ङ्गपाणि प्रभु थोड़े में ही स्मरण मात्र से रीझ (प्रसन्न हो) जाते हैं ।।२१०।।

Scanned by CamScanner

आया फकत संग दोगर नहिं आखिर जाय अकेला ।
घड़ी चार बाजार देख ले नाता नेह सुमेला ॥
किसी समय तू होगा ऐसा जैसा मिट्टी ढेला ।
युगलानन्यशरण सुमिरन करु निशिदिन हेलमहेला ॥२११॥

इस संसार में केवल अकेला ही आया है कोई दूसरा साथी नहीं है और अन्त में भी अकेला ही जाएगा । सांसारिक आकर्षक बाजार को तथा सम्बन्धों के सुन्दर मेले को चार घड़ी तक देख ले । इसी बीच में किसी भी समय तू (प्राण त्याग के पश्चात्) मिट्टी ढेला–बेकार हो जाएगा । अतएव तीव्रता से प्रतिदिन श्रीनाम का स्मरण करो ॥२११॥

आफताब महताब मनोहर आदिहिं बास बिचारे ।
तिसके अकब कबूल सूल बिन आतस संग निहारे ॥
इसके बाद तीन एके करि महामोद मन धारे ।
युगलानन्यशरण सर्वोपरि नाम सनेह सँवारे ॥२१२॥

मनोहर सूर्य–चन्द्र का श्रीनाम में प्रथम विचार करें और उसके भी पूर्व दुःख रहित अग्नि के साथ देखकर उसे स्वीकार करें । अर्थात् श्रीराम नाम में रकार अग्निबीज अकार सूर्यबीज एवं मकार को चन्द्र-बीज जाने । इसके पश्चात् तीनों को एक करके रकार–अकार–मकार को एक करके श्रीराम नाम को हृदय में प्रसन्नता पूर्वक धारण करो । सर्वश्रेष्ठ श्रीनाम से ही प्रेम करो ॥ २१२ ॥

रसना रसिक रसीली निशदिन युगल बरन रस पीती ।
गति मति होश दोश देहज भ्रम फरामोश नित कीती ॥
सुधा सार सुखसार नाम लहि अपर सकल रस तीती ।
युगलानन्यशरण नाना बिधि स्वाद बाद बहु जीती ॥२१३॥

रसपूर्ण रसिक रसना रात–दिन श्रीराम नाम युगल वर्ण का रस पीती रहती है । समस्त चेष्टाएँ मति होश, दोष देह बुद्धि सबको सदा के लिए भूल जाता है । सुधा और सुख का सार श्रीनाम का रस प्राप्त कर लेने पर अन्य सभी रस तिक्त–कड़ुवे लगते हैं । श्रीनाम जापक नाना प्रकार के स्वाद और विवाद को जीत लेता है ॥ २१३ ॥

खौफ किसी का झुके न हरगिज निसि दिन नाम सुरंगी ।
काजी पंडित राजी निज घर रहे अचाह असंगी ॥

Scanned by CamScanner

मेहर मोबारक मुरशिद की यक खाहिस सहज सुचंगी।
युगलानन्यशरण लागरजी मरजी मिली उमंगी ॥२१४॥

अहर्निश श्रीनाम के सुन्दर रँग में रंगे हुए नाम जापक किसी भय से किसी के सामने कदापि नहीं झुकते। पण्डित हों या काजी हों अपने घर में राजी खुशी रहे उनसे नाम जापक को क्या लेना देना वह तो स्वयं निष्काम और निसंग है। गुरुकृपा की ही जिनके अन्दर एक मात्र स्वभाविक सुन्दर इच्छा है वे धन्य हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं हम तो बेपरवाह थे किन्तु अनचाहे गुरु की प्रसन्नता पूर्ण कृपा मिल गयी ॥२१४॥

रसना रंगमयो तबही भल अमल नाम जब लेवे।
रचना बचन बिकार छार सम जानि चित्त नहिं देवे॥
सरस सनेह सिन्धु संसृति हर बरन मनोहर सेवे।
युगलानन्यशरण भोजन रुचि सदृश सहस गुन जेवे ॥२१५।

जब जिह्वा से निर्मल श्रीनाम का उच्चारण हो तभी रसना को सुन्दर, रंगीली समझना चाहिए। वाणी के चातुर्य–वाग्विलास को विकार-युक्त हानिकारक एवं राख के समान जानकर मन नहीं लगाना चाहिये। संसार का हरण करने वाले रसपूर्ण स्नेह के सिन्धु मनोहर वर्ण श्रीनाम का सेवन करें। रुचिकर भोजन के समान हजारों गुना-अत्यधिक सेवन करें।२१५।

हे रसने श्रीराम नाम धुनि करत आलकस काहे।
जाने दियो अनूठो तव गति आदि अन्त निर्बाहे॥
याते मधुर स्वाद दूजो का जाको तू चित चाहे।
युगलानन्यशरण पाणी धो पानी जात बहा है ॥२१६॥

हे रसने ! श्रीरामनाम की ध्वनि उच्चारण करने में क्यों आलस्य करती हो ? जिसने तुमको अनुपम गति दी है और आदि अन्त सम्पूर्ण योगक्षेम का वहन करने वाले हैं। इससे अधिक मधुर–स्वाद दूसरा क्या है जिसको तुम चाहती हो। पानी बहता जा रहा है अतः बहते हुए पानी में हाथ धो लो। श्रीनाम का स्मरण करके जीवन का लाभ प्राप्त कर लो ॥ २१६ ॥

गहर गरक गंभीर धीर घन सघन नाम घन गरजे।
सुनत श्रवन नवनेह चारुचित चातक समहिय हरजे॥
जागत जोत दामिनी दमकत काम कोह कुल लरजे।
युगलानन्यशरण विनोद बहु बरसि व्यर्थ बन बरजे ॥२१७।

Scanned by CamScanner

गहरे काले जल से लथपथ जल पूरित (जल की गहराई में डूबे हुए) धीर गम्भीर सघन मेघ के समान श्रीनाम मेघ गर्जन कर रहे हैं। ऐसी श्रीनाम ध्वनि को कर्ण कुहरों से सुनते ही नूतन स्नेह से युक्त सुन्दर चित्त वाले नाम जापकों का हृदय चातक के समान हर्षित हो जाता है। हृदय का प्रकाश (ज्योति) बिजली के समान दमकता है तथा काम क्रोध समूह भयभीत होते हैं। विविध प्रकार के मनोविनोद (मनोरंजन) रूप वर्षा के व्यर्थ जल को रोक देते हैं— नहीं करते ग्रहण करे ॥ २१७ ॥

रसना ललित लाडली छबिफबि कादंबिनी बिराजी।
बिसद व्योम बर बदन अनूपम मधुर मोहब्बत ताजी ॥
नूतन नाम श्याम सुन्दर सुचि सुधा सीर छबिछाजी।
युगलानन्य सुनाम रहस रसि उदित मुदित रति राजी ॥२१८।

व्यापक श्रेष्ठ मुखाकाश में सुन्दर लाडिली रसना अद्भुत मधुर नवीन प्रेम छवि से संयुक्त होकर मेघमाला के समान सुशोभित है। वह रसना रूपी कादम्बिनी श्याम सुन्दर श्रीराम के सुन्दर पवित्र श्रीनाम की शीतल सुधा छवि से युक्त है। नूतन श्रीनाम के रहस्य रसोदय से जिह्वा हर्ष व अनुराग से शोभित होती है प्रेमानन्द की प्राप्ति होती है ॥२१८॥

लागी लगन अगन अंतर उर ठगन मगन को त्यागी।
भगन भावना धारि हृदय दृढ़ नगन विकल्प विरागी ॥
मगन माह मन मगन करत जग जगन दशा द्रूम दागी।
युगलानन्य नाम रमि के मति मलिन रगन गति भागी॥२१९

हृदय के अन्दर लगन की अग्नि लगी हुई है प्रेम की ज्वाला जल रही है अतः सांसारिक (धोखा देने वाले) मार्ग को एवं खण्डित भावना को त्यागकर तुच्छ विकल्प से विरक्त होकर हृदय में दृढ़ भावना धारण करते हैं। इस दिव्यानन्द में मन को मगन करके संसार से जागृत होकर संसार वृक्ष को जला देते हैं श्रीनाम में रमण करके बुद्धि की मलिनता का राग निवृत्त हो गया है ॥ २१९ ॥

सगन सुभाव सुचाव समुझि सत शोक जोक जिय जागे।
तगन तमक तकरार तार तजि त्रिगुन पार प्रिय पागे ॥
पगन प्रीति निज नाम संग सजु भजु भावना सुभागे।
युगलानन्यशरण सुमिरन से सकल सौज सुख आगे ।२२०॥

Scanned by CamScanner

अपने सगे (प्रेमास्पद) के स्वभाव व सुन्दर रुचि को समझकर मिलनोत्कण्ठा की सैकड़ों इच्छाएँ हृदय में जागृत होती हैं। लज्जा, क्रोध, विवाद के समूह को त्यागकर त्रिगुणात्मक प्रकृति से परे प्रियतम में पग जाते हैं। अपने प्रियतम की प्रीति में निमग्न होने के लिए श्रीनाम का संग करके भावना पूर्वक भजन करें यही सौभाग्य है। श्रीनाम स्मरण से सम्पूर्ण सुख सामग्रियाँ प्रत्यक्ष उपस्थित हो जाती हैं ॥२२०॥

परम परेश सुदेश दाम दुति दुर्लभ दरक कराए से।
सगुन अगुन बर बीज बिबोधन सोधन सत्त्व सराए से ॥
अनिर्वाच्य अवितर्क्य रूप सो सुगम नाम सुमिराए से।
युगलानन्यशरण सुमिरन से संसृति सिंधु तराए से ॥२२१॥

श्रीनाम से पृथक होने पर (कराने से) परात्पर प्रभु श्रीराम के सुन्दर दिव्य धाम का स्वर्णिम प्रकाश प्राप्त होना दुर्लभ है। सगुण निर्गुण का विशेष बोध कराने में श्रीनाम श्रेष्ठ बीज–कारण हैं तथा सत्त्व का शोधन एवं सम्पादन करुने वाले हैं। श्रीनाम के स्मरण से अकथ-नीय तर्कातीत प्रभु का स्वरूप–दर्शन सुलभ हो जाता है तथा नाम स्मरण से संसार–सिन्धु से पार हो जाते हैं ॥ २२१ ॥

वेद कदंब मुनीश ईश अवलंब नाम का कीए हैं।
श्रीसुखसागर नाम अंस सीकर प्रभाव से जीए हैं ॥
अन्तक त्रास समन दुश्मन मन दमन नाम रस पीए हैं।
युगलानन्यशरण सुनाम बल भुक्ति-मुक्ति नहिं छीए हैं ॥२२२॥

वेद समूह, मुनीश्वर एवं ईश्वर ब्रह्मा, विष्णु, महेश श्रीनाम का अवलम्ब–आश्रय लिये हुए हैं। सुख समुद्र श्रीनाम के लघु अंश–कणांश के प्रभाव से जीवन प्राप्त करते हैं। जिन्होंने श्रीनाम का रस पिया है उन्होंने यमराज के भय को शमन एवं शत्रुरूप (कठिनाई से शमन होने वाले) मन का दमन कर दिया है। सुन्दर नाम के बल से भुक्ति–मुक्ति को नहीं छुआ है, भोग–मोक्ष की कामना रहित हैं अथवा भुक्ति–मुक्ति क्षीण नहीं हुई उनके अधीनस्थ है ॥ २२२ ॥

धन्य सन्त अति मान मन्य गुन गन्य नाम रस छकते हैं।
नाम हीन पल पाव निरय सम समुझि व्यर्थ नहिं बकते हैं॥
चित चष गगन चढ़ाय नाम बल किस ही तरफ न तकते हैं।
युगलानन्य नाम मारग से सपनेहुँ कभी न थकते हैं ॥२२३॥

Scanned by CamScanner

जो श्रीनाम के रस में छके-तृप्त रहते हैं वे अत्यन्त सम्माननीय गुणवानों में अग्रगण्य सन्त धन्य हैं। श्रीनाम स्मरण रहित एक क्षण को भी नरक के समान समझकर व्यर्थ चर्चा-बकवास नहीं करते हैं। श्रीनाम के बल से चित्त के नेत्र को (आकाश में चढ़ाकर) ऊर्ध्व मुख (प्रभु की ओर) करके फिर किसी ओर नहीं देखते हैं। श्रीनाम मार्ग में चलने (नाम स्मरण) से स्वप्न में भी कभी नहीं थकते, श्रम का अनुभव नहीं करते हैं ॥ २२३ ॥

सब सम सुद्ध दसा धारे निज नाम स्वरूप समाते हैं।
सम सन्तोष पोष पाए कर धोए संतत माते हैं ॥
नाम रहित साधन अनंत दुखवंत बिचारि बहाते हैं।
युगलानन्य नाम रसिया रस पीवत अति अलसाते हैं ॥२२४॥

सर्वत्र सम बुद्धि की स्थिति में रहकर (दशा को धारण करके) श्रीनाम के स्वरूप में समाहित रहते हैं। बराबर सन्तुष्टि व पुष्टि प्राप्त करके हाथ धोकर सतत् श्रीनाम स्मरण में मस्त रहते हैं। नामहीन (नाम से अतिरिक्त) अनन्त साधनों को दुःखप्रद समझकर बहा देते हैं, त्याग देते हैं। श्रीनाम रसिक नामरस का पानकर अत्यधिक मदमस्त हो जाते हैं ॥ २२४ ॥

जिसको चसका लगा नाम का तिसकी गति मति न्यारी है।
बरनाश्रम कुल धरम करम दुःख दिल ते दूरि निकारी है ॥
जागे मोह निशा में निशिदिन विषय वासना बारी है।
युगलानन्य नाम सुमिरन पर रीझत अवध बिहारी हैं ॥२२५॥

जिसको श्रीनाम का चस्का लग गया है, स्वाद प्राप्त हो गया है ऐसे रसिकों की गति मति (चेष्टा व बुद्धि) निराली है। वर्णाश्रम, कुल–धर्म, कर्मकाण्ड के दुःख को हृदय से दूरकर दिया है। मोहरात्रि से जागकर निरन्तर विषय वासनाओं को लुटा दिया, त्याग दिया है। श्रीनाम स्मरण करने पर श्रीअवध बिहारी श्रीरामभद्र जू मुग्ध हो जाते हैं ॥ २२५ ॥

भजन भाव भल भाँग बिलच्छन मिरिच मोहब्बत प्यारी है।
सहज सफाई सौंफ सार सुचि शरनागत बर बारी है ॥
पथरो परम प्रतीति प्रानपति लगन लकुट लयकारी है।
युगलानन्यशरण रग-रग निज नेह निशा निरधारी है ॥२२६॥

Scanned by CamScanner

श्रीनाम की भजन भावना विलक्षण सुन्दर भाँग है और प्रेम ही प्यारी मिर्च है। सहजता ही सफाई है एवं पवित्रता का सार ही सौंफ है। शरणागत होना प्रपत्ति उत्तम जल है। परम विश्वास ही पत्थर की कुड़ी है तथा प्राणपति प्रियतम प्रभु से लगन ही यष्टि डण्डे की लयकारी घर्षण है। रोम-रोम में श्रीनाम प्रेमरूप भाँग का नशा चढ़ा हुआ है ॥ २२६ ॥

श्री प्रहलाद विभीषन श्रीहनुमान नाम रस नेही।
वालमीकि मुनिराज कुम्भसुत शिव शुक सुमुनि बिदेही ॥
नाम प्रताप पाय पटुतर अनिमेष निदरि निरनेही।
युगलानन्य नाम सुमिरन सजु तजु तम तार तनेही ॥२२७॥

श्रीप्रह्लाद जी श्रीविभीषण एवं श्रीहनुमान जी श्रीनाम रस के स्नेही-रसिक हैं। मुनीश्वर वाल्मीकि अगस्त्य जी श्रीशंकरजी तथा महा-मुनि शुकदेव व विदेहराज श्रीजनक जी ये सब श्रीनाम के प्रबल प्रभाव को जानकर निरन्तर स्नेह रहित संसार का निरादर त्याग कर दिया है। अतः शारीरिक अज्ञान समूह का त्याग कर श्रीनाम स्मरण से सम्बन्ध जोड़े ॥ २२७ ॥

सत्त नाम सिद्धांत सिरोमनि सार सुधा सुख सागर है।
सर्वोपर सर्वेश शेष शिव सनकादिक उर नागर है ॥
सुखमा सिद्ध सकल संपूरन सोहत सान उजागर है।
युगलानन्यशरण जीवन जिय जाहिर जड़ित जवाहर है॥२२८

सत्य श्रीनाम सिद्धान्त शिरोमणि, सुख सिन्धु एवं सुधासार हैं। सर्वश्रेष्ठ विष्णु, महेश, शेष एवं सनकादिकों के हृदय नगर में निवास करने वाले हैं। सम्पूर्ण सुषमा सिद्ध अर्थात् अपार सौन्दर्यशाली श्रीनाम शोभा प्राप्त कर रहे हैं, उनका यश सर्वत्र प्रकट है। सभी के जीवन प्राण श्रीनाम जवाहर जड़ित प्रकट रत्न है ॥ २२८ ॥

नाम निशान बजाय जाय तजि जाय अजूब समावेंगे।
रहस रफीक रजाय भाल धरि धीरज ध्यान जमावेंगे ॥
हर एक तरफ हरफ फानी हर देखत दिलहि रमावेंगे।
युगलानन्यशरण इस जग में फेर न आवें जावेंगे ॥२२९॥

श्रीनाम का डंका बजाकर व्यर्थ प्रपंच को त्याग कर अद्‌भुत वस्तु श्रीनाम प्रेम में समाहित हो जाएँगे। एकान्त में प्राणधन प्रियतम

प्रभु की इच्छा–आज्ञा को शिरोधार्य करके धैर्यपूर्वक ध्यान लगाएँगे। चारों ओर अविनाशी अक्षरों (रकार–मकार) को देखकर श्रीसीताराम-मय जानकर हृदय को आनन्दित करेंगे। इस प्रकार पुनः इस संसार में नहीं आएँगे–जाएँगे। अर्थात् जन्म मृत्यु आवागमन के चक्कर से मुक्त हो जाएँगे ॥ २२९ ॥

कोई संगी रंगी अंगी इस देही का नाहीं है।
फकत अकेला आया अव्वल आखिर एक सदाही है ॥
चार दिना की झलक चाँदनी फेर अँधेरी छाँही है।
युगलानन्यशरण नामहिं भजु जनि डूबे भव खाही है ॥२३०।

इस शरीर का संसार में कोई भी सगा–सम्बन्धी, साथी नहीं है। केवल अकेला ही यहाँ आया है तथा पहला और आखिर जन्म व मृत्यु के समय सदा एक अकेला ही है। चार दिनों की चाँदनी की झलक है फिर तो अन्धकार की ही छाया है। अतएव श्रीनाम का ही भजन करो इस संसार रूपी खाँई–गड्ढे में मत डूबो ॥ २३० ॥

बंदौं बार सहस्र सहित सत सरस सनेह समेता।
खटक रहित हित बिहित अहित हर षट शुचि भक्त सुनेता ॥
श्रीबलि बिमल बिभीषन तीषन-सुब्रत भीष्म जग जेता।
प्रीतम प्रिय प्रहलाद, ध्येय धन ध्रुव नारद बर वेता ॥२३१।

चिन्तारहित, कल्याणकारी, अकल्याण का हरण करने वाले भक्तों में अग्रगण्य पवित्र छह भागवतों निर्मल मति वाले बलि, प्रभु प्रेम में आतुर–तीक्ष्ण विभीषण, विश्वजित् बालब्रह्मचारी सुव्रत भीष्म, प्रियतम प्रभु के प्यारे प्रह्लाद, ध्यान करने योग्य ध्येय इष्ट सम्पत्ति सम्पन्न ध्रुव एवं परम तत्त्व वेत्ता नारद की सच्चे रसपूर्ण हृदय से स्नेह सहित हजारों बार वन्दना करता हूँ ॥ २३१ ॥

प्रात पुनीत प्रसाद प्रेम हित जो जन नाम उचारे।
भक्त शिरोमणि अमल अनुग्रह बिग्रह बिगत बिचारे ॥
रहे न शेष रेख द्वेषादिक वेष विशेष सुधारे।
युगलानन्यशरण दश बिधि अपराध महानिधि पारे ॥२३२।

पुनीत प्रातः काल में प्रसन्नता व प्रेम सहित जो जीव श्रीनाम उच्चारण करते हैं। वे लोग भक्त शिरोमणि उपर्युक्त भागवतों के निर्मल अनुग्रह से वैर विग्रह रहित हो जाते हैं ऐसा समझें। उनके हृदय में

Scanned by CamScanner

द्वेषादिक की रेखा भी शेष नहीं रहती तथा अपने वेश-स्वरूप को विशेष रूप से सुधार लेते हैं तथा दस प्रकार के नामापराध महासिन्धु को पार कर जाते हैं ।। २३२।।

षट रितु रंग रहस वैभव षट लीला ललित ललाई ।
षटधा अमल अनन्य महाव्रत राग लाग सुखदाई ।।
नाम नेह अन्तर अनंत मुद मोद बिनोद बधाई ।
युगलानन्यशरण नामहिं रमु सजि शुभ सजन सगाई ।।२३३।

छहों ऋतुओं के एकान्तिक विलास वैभव एवं ऋतुओं के अनुकूल अत्यन्त सुन्दर छह लीलायें (होली, फूलबंगला, झूलन, महारास, साँझी, विवाह) नाम, रूप, लीला, धाम, प्रसाद एवं भगवत्कथारस (भगवत्संबंध-रस) इन छह प्रकार के सम्बन्धों की निर्मल अनन्यता रूप महाव्रत से सुखदायक राग हो गया है इस प्रकार श्रीनाम स्नेह से हृदय के अन्दर अनन्त प्रकार के आनन्द, प्रसन्नता, विनोद व बधाई की तरंगें उठती हैं। अतएव प्रियतम प्रभु से शुभ सम्बन्ध जोड़कर श्रीनाम में रमण करो ।२२२

आसन मारि रहो आसन बिन कमल विकास न होवे ।
दासन विस्वासन बिहाय निज नाम बीज बर बोवे ।।
अभिलासन भासन भवेश भल लाय सेज सुख सोवे ।
युगलानन्यशरण प्यासन प्रिय पानिय पानि सुजोवे ।२३४।।

आसन लगाकर बैठे रहो किन्तु भगवत्कृपा की आशा के बिना हृदय कमल विकसित नहीं होता है । शिष्य सेवकादिकों का विश्वास त्यागकर श्रीनाम का श्रेष्ठ बीज हृदय में बोना चाहिए। प्रकाश स्वरूप संसार के स्वामी परम प्रभु प्राप्ति की अभिलाषा हृदय में लेकर सुखपूर्वक शय्या पर सोए अर्थात् परम निश्चिन्त होकर संसार से बेफिक्र हो जाये। जिस प्रकार प्यासे को प्रिय लगने वाले पानी ही पानी की तलाश होती है उसी प्रकार भगवत्प्रीति-भगवत् प्राप्ति की अभिलाषा होनी चाहिए।२३४।

नामी नाम एकता सब विधि मरम मुनीश पछाने ।
गुन स्वभाव सत सीत समन संसृति कृपालुता छाने ।।
भेद बदे ते बिना बूझ बालकन देश जिय जाने ।
युगलानन्यशरण जापक जन जीवन युगल प्रमाने ।।२३५।।

नामी प्रभु व उनके नाम की एकता के मर्म को सब प्रकार से मुनीश (महर्षि वाल्मीकि) जानते हैं । संसार का शमन करने वाले श्रीनाम व नामी के अत्यन्त शीतलगुण स्वभाव और कृपालुता का अनुसंधान

Scanned by CamScanner

करे। बिना समझे-बूझे नामी नाम का भेद कहने वालों की बात को बाल-जगत् की चर्चा समझे। नाम जापकों के जीवन धन नामी नाम युगल को प्रमाण माने ॥ २३५ ॥

नित्य वस्तु निर्गुन निरुपम निज नाम रमत सत स्वादी हैं।
सगुन अगुन संयोग युगल कारन विचित्र अहलादी हैं ॥
रसना रटत रमत पावत परमेश प्रेम प्रतिपादी हैं।
युगलानन्यशरण सर्वोपरि शहर सनेह सुसादी हैं ॥२३६॥

उपमा रहित अप्राकृत शाश्वत वस्तु श्रीनाम में रमण करने वाले सच्चा स्वाद प्राप्त करते हैं। श्रीनाम प्रभु के सगुण निर्गुण युगल रूप के संयोग के कारण स्वरूप तथा अद्भुत आह्लाद देने वाले हैं। जिह्वा से श्रीनाम का रटन एवं मन से रमण करने पर परमेश्वर का प्रेम प्रदान करने वाले हैं। श्रीनाम स्नेह एवं प्रसन्नता के सर्वश्रेष्ठ नगर है।२३६।

नाम रूप दोऊ अनूप तिल बिलग वदे ते झूठे हैं।
श्रुति संहिता सन्त सम्मत सद समुझहिं सुजन अनूठे हैं ॥
तारक तीन झीन नाना भव भान दमन अनरूठे हैं।
युगलानन्य सुजीवन धन प्रिय सरल नेह पर तूठे हैं ॥२३७॥

प्रभु के अनुपम श्रीनाम रूप दोनों को जो तिलभर भी भिन्न (थोड़ा भी अलग) कहते हैं वे लोग मिथ्याभाषी हैं। श्रुति, संहिता, सन्त सम्मत सत्य है कि श्रीनाम नामी अभिन्न है इसको कोई बिरले सज्जन ही समझते हैं। सत्त्व, रज, तम तीन गुणों से तारने वाले तथा प्रसन्नता पूर्वक अनेक प्रकार के सूक्ष्म रूप से सांसारिकता के बोध को दमन करने वाले हैं। अथवा श्रीनाम जापकों पर प्रसन्न रहते हैं। सुन्दर जीवन धन प्राण प्रियतम श्रीनाम सरल स्नेह से ही सन्तुष्ट होते हैं ॥२३७॥

नामहीन कहनी रहनी बहनी अहनी हिय हेरी है।
साधन सकल सरोग सोग मय मोह मार मद मेढ़ी है ॥
प्रबल प्रताप परेश बरन बिधि बिबिध रंग रस ढेरी है।
युगलानन्यशरण सुनाम सम्बन्ध समेत उजेरी है ॥२३८॥

श्रीनाम के बिना कथनी एवं आचरण अग्नि और सर्पिणी के समान है यह हृदय में विचार करके देखा है। समस्त साधन रोग एवं दुःख से भरे हैं। मोह, काम, अहंकार से युक्त हैं। युगल वर्ण श्रीनाम

Scanned by CamScanner

प्रबल प्रभाव से सम्पन्न परेश एवं विविध रंगरस की ढेरी समूह हैं। सुन्दर श्रीनाम से सम्बन्ध होने पर सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश है अर्थात् मंगल ही मंगल है ॥ २३८ ॥

कर्माकर्म कषाय कलित कायर सब विश्व भुलाना है।
धर्माधर्म रहित उज्जवल निज परम-धरम नहिं जाना है॥
बरनाश्रम श्रमरहित करत पै मिलत न मौज ठिकाना है।
युगलानन्य कृपाल नाम जपि अनुपम परख पछाना है ॥२३९

कर्म–अकर्म और और कषाय युक्त कायर लोग संसार में आसक्त हो गये हैं। धर्म–अधर्म को नहीं समझ सके। वर्णाश्रम धर्म के अनु–पालन से विश्राम की प्राप्ति तो हो सकती है पर परमानन्द (मौज मस्ती) पूर्ण स्थान नहीं प्राप्त हो सकता। हमने अच्छी तरह से परखकर जान लिया है कि अनुपम कृपालु श्रीनाम का जप करना चाहिये। अथवा कृपालु श्रीनाम का जप करके हमने अलौकिक वस्तु को परखकर जान लिया है ॥ २३९ ॥

होत कहा किस्सा गाए औ सुने बिचारे भाई।
जौ लौं लगे न नाम माधुरी माँझ नेह दृग जाई॥
मौन रहे मन मारि एकरस तजि जगजाल सगाई।
युगलानन्यशरण पहुँचे पुर प्रीतम बंब बजाई ॥२४०॥

जब तक श्रीनाम की मधुरिमा प्राप्त न हो तथा नाम के प्रति स्नेहपूर्ण-आदरणीय दृष्टि न हो तो हे भाई! मात्र वाचिक कथा कहानी कहने सुनने और विचार करने से क्या होता है? जगतिक सम्बन्धों का त्यागकर तथा मन का शमन करके (संकल्प विकल्प रहित होकर) मौन रहकर एकरस, निरन्तर श्रीनाम का जप करे तो नगाड़ा बजाकर हर्षोल्लास के साथ प्रियतम प्रभु के श्रीधाम पहुँचेंगे ॥ २४० ॥

क्रिया कलाप तरफ ताके नहिं बिना नेह निधि नामा।
वृथा अलाप भजे अन्तर तिहुँ काल न दुःख परिनामा॥
मदन दाप दाबे सबहीं बिधि कांपे नहिं कोउ कामा।
युगलानन्यशरण सुमिरन से समुचित मन बसु जामा ॥२४१॥

श्रीनाम स्नेह सम्पत्ति के बिना किसी भी अन्य क्रिया कलाप की तरफ न देखे। व्यर्थ चर्चा को त्यागकर हृदय से श्रीनाम का भजन करे तो तीनों काल में दुःख नहीं होता यही इसका परिणाम (फल) है।

Scanned by CamScanner

काम विकार को सभी प्रकार से दबाये तो किसी भी प्रकार की कामनायें तरंगायित नहीं होंगी श्रीनाम स्मरण से आठों पहर सदा-सर्वदा मन प्रमुदित रहेगा ॥ २४१ ॥

हानि हुलास हास त्रासादिक सहज अभेद बिचारा है।
मनोराज मन सुवन दवन करि साजन शोक सँवारा है॥
परमानन्द पाय प्रीतम पथ बिकल बिनोद बिसारा है।
युगलानन्यशरण सुधाम बसि वल्लभ बचन बिहारा है।२४२

हानि, उल्लास, प्रसन्नता या कष्ट सभी में सहजता से अभेद समभाव विचार कर लिया है। मनोराज्य व मानसिक चिन्ता सन्तति का दमन करके एकमात्र प्रियतम से स्नेह लगाया है। परम प्यारे प्राणधन प्रभु के प्रेम पथपर चलकर सुख (विषयानन्द) को भूलकर परमानन्द को प्राप्त किया है। सुन्दर अवधधाम में निवास करके जीवन धन प्रभु के मधुर श्रीनाम में विहार किया है ॥ २४२ ॥

दृढ़ विश्वास नाम अन्दर करि तुच्छ पुरंदर जाने।
गिरि मंदर सम समुझ अचल सतसंग भली बिधि ठाने॥
गोरख ज्ञान मछंदर मग ठग रुज गुनि नेक न माने।
युगलानन्य कहरकारी गति कठिन कलंदर भाने॥२४३॥

श्रीनाम के अभ्यन्तर दृढ़ विश्वास करके इन्द्र को भी तुच्छ समझे। मंदराचल पर्वत की भाँति बुद्धि को दृढ़ करके भली प्रकार से सत्संग करे। मछन्दर (मत्स्येन्द्रनाथ) के सिद्धान्त (योग-मार्ग) और गोरखनाथ के ज्ञान को धोखा (भ्रान्ति) व रोगप्रद समझकर उनपर तनिक भी ध्यान न दे,उचित न माने। इसे कष्टकारी कठिन गति एवं जादूगरी समझे।२४३।

रोदत हँसत बबत बाउर जिमि लोक नाम कुल त्यागी।
गोदत प्रीति गोदना मन मधि छकि छबि निधि बड़भागी॥
अनुमोदत गुन ग्राम नाम अभिराम रंग रस रागी।
युगलानन्यशरण नोदत नित मन मति बिमल बिरागी॥२४४

लौकिक काम-समूह का (लोक लाज का) त्याग करके अनन्य श्रीराम रस-रसिक कभी रोते हैं कभी हँसते हैं पागलों की भाँति बोलते हैं, चेष्टाएँ करते हैं। श्रीराम रूप समुद्र में निमग्न होकर सौभाग्यशाली लोग श्रीनाम प्रीति के गोदना को मन में गोदते हैं, श्रीनाम प्रेम के चिह्न से हृदय को चिह्नित करते हैं। सुन्दर श्रीनाम रस रंग में रंगे

Scanned by CamScanner

हुए प्रेमी भगवन्नाम व उनके गुण–ग्राम का समर्थन करके प्रसन्न होते हैं। निर्मल वैराग्य युक्त मन और बुद्धि को नित्य प्रभु के श्रीनाम की ओर प्रेरित करते हैं ॥ २४४ ॥

जै श्री सर्वेश्वर सीताबर नाम प्रान प्रिय मेरो।
सकृत शरन सम्पन्न होत हिय हरत अशेष अँधेरो ॥
अनुभव अमल असल पूरन कर प्रेम प्रकाश उजेरो।
युगलानन्यशरण सुमिरत नहिं कीजे तिल अवसेरो ॥२४५॥

मेरे प्राणप्रिय सर्वेश्वर श्रीजानकी वल्लभ जू के श्रीनाम की जय हो। एकबार शरणापन्न होते ही हृदय के सम्पूर्ण अज्ञानान्धकार का हरण कर लेते हैं तथा वास्तविक निर्मल अनुभव पूर्णप्रेम के प्रकाश का उजाला करते हैं अतएव श्रीनाम स्मरण में तिलभर का (थोड़ा) भी विलम्ब न कीजिये ॥ २४५ ॥

रसना रसिकराज राघव नव नाम नेह रस लावै।
प्रीति परा पावस प्रवेश करि बिरह बूँद बरसावै ॥
तुच्छ-रुच्छ तृन सम हृषीक गन मूर्छित तिनहिं जिवावै।
युगलानन्यशरण दम्पति सम्पति सनेह सरसावै ॥२४६॥

रसिकराज श्रीराघवेन्द्र के नूतन श्रीनाम के स्नेहरस से रसना को सिक्त करे। परा प्रीति की पावस (वर्षा) ऋतु में प्रवेश करके बिरह बूँद बरसावें अर्थात् श्रीनाम स्मरण से उत्पन्न मिलनोत्कण्ठा के के कारण अविरल अश्रुपात करें। क्षुद्र शुष्क तृण के समान विषय वासना में मूर्छित (बेहोश) इन्द्रिय समूह को पुन: जीवित करे अर्थात् प्रियतम प्रभु के उन्मुख करे। युगल दम्पत्ति श्रीसीतारामजी की स्नेह सम्पत्ति से सुशोभित करें ॥ २४६ ॥

हे रसने द्विज बीच बास तव अधर बसन प्रिय प्यारो।
ताहू में सुन्दर सवाद सुचि रुचि प्रसन्नता न्यारो ॥
सज्यो समूह समाज साज शुभ कसर एक कटु खारो।
युगलानन्यशरण सीतापति नाम न लेत गँवारो ॥२४७॥

हे जिह्वे ! दाँतों के बीच तुम्हारा सुरक्षित निवास है तथा ओष्ठ रूपी सुन्दर वस्त्र से आच्छादित तुम अत्यन्त प्यारी लगती हो। उसमें भी तुम सुन्दर स्वाद, रुचि और अद्भुत प्रसन्नता से युक्त हो। तुम सभी प्रकार के समस्त सद्गुण साज सामग्री से सुसज्जित हो केवल एक कसर

Scanned by CamScanner

(कमी) है कि कड़ुवा और खारा बोलती हो तथा श्रीजानकी–जीवन प्रभु के श्रीनाम का उच्चारण न करके अपने गँवारपने को प्रकट करती हो ॥ २४७ ॥

आसक नाम उपासक सांचे ऐब ऐन दिल लाना ।
जिनते नाम अनूप जहूरा जगत बीज बिखराना ॥
सहे कहो कैसे दिलजानी नाम सनेह समाना ।
युगलानन्य प्रथम दश मधि इह अति अपराध बखाना । २४८।

अपने दोषों को जो हृदय नेत्र से देखकर स्वीकार करते हैं अर्थात् आत्मालोचन (आत्मनिरीक्षण) करते हैं वही श्रीनाम के आशिक सच्चे उपासक हैं । ऐसे जो नामोपासक हैं जिनके द्वारा संसार के बीच में अनुपम श्रीनाम की प्रसिद्धि प्रचार–प्रसार हुआ है । प्राणप्यारे श्रीनाम के स्नेह में जो समाये (डूबे) हुए हैं उन सच्चे सन्तों की निन्दा को श्रीनाम महाराज कहो कैसे सह सकते हैं । दश नामापराध में यह प्रथम (सन्त निन्दा) महान् अपराध कहा गया है ॥ २४८ ॥

श्रीशंकर–शंकर रघुवर–बर भेद खेद बतलाना ।
परम प्रीयतम नाम सनेही सर्बस स्वाद समाना ॥
तुच्छ-रुच्छ दिन रैन बखानत मूरख अज्ञ अजाना ।
युगलानन्य विचारि वस्तु अपराध दूसरो जाना ॥२४९॥

कल्याणप्रद श्रीशंकरजी एवं श्रेष्ठ रघुनन्दन श्रीराम में खेदजनक भेद बतलाना यह दूसरा नामापराध है । परम प्रियतम श्रीनाम के स्नेहीजन इन दोनों को अपना सर्वस्व समझते हैं तथा श्रीराम एवं श्री शंकरजी के श्रीनाम का समान रसास्वादन करते हैं अथवा परम प्रियतम प्रभु श्रीराम एवं उनके नाम स्नेही श्री शंकर जी दोनों एक दूसरे के सर्वस्व हैं दोनों में समान समरसता है । वे लोग अज्ञानी मूर्ख और अनजान हैं जो श्रीराम एवं शंकरजी में भेद रूप छोटी एवं रूखी बात दिन–रात कहते रहते हैं। इन विषय वस्तु पर विचार पूर्वक देखिये ये दूसरा नामापराध है ॥ २४९ ॥

परम सार रसमयी दशा बर वल्लभ प्रगट लखावें ।
जेहि हित नित तरसत योगीजन सो स्वरूप झलकावें ॥
आरत हरन शरन सुख सम्पति सहज स्वाद सरसावें ।
युगलानन्यशरण तीजो गुरु आज्ञा भंग गनावें ॥ २५० ॥

Scanned by CamScanner

श्रीसद्‌गुरुदेव परम सार रसमयी अवस्था को प्राप्त कराते हैं जिसमें श्रेष्ठ प्रियतम प्रभु का प्रत्यक्ष दर्शन होता है। जिसके लिए योगीगण निरन्तर तरसते हैं, प्रतीक्षारत हैं उस स्वरूप को स्पष्ट प्रकाशित करते हैं। पीड़ाओं का हरण करने वाले शरणागतों की सुख सम्पत्ति श्रीनाम में सहज स्वाभाविक–स्वाद (प्रीति) उत्पन्न करते हैं। ऐसे पूज्य चरण श्री सद्‌गुरुदेव की आज्ञा का उल्लंघन करना तीसरा नामापराध है ॥ २५० ॥

बेद पुरान संहिता सत मत सुनि मिथ्या जो भाषें।
बिना वस्तु विज्ञान बिगोए सार स्वाद नहिं चाषें ॥
शबोरोज आलसी साहसी बाद विवाद न नाषें।
युगलानन्य तुरीय प्रबल अपराध हरन अलिभाषें ॥२५१॥

वेद, पुराण, संहिता आदि के सत्य सिद्धांत को सुनकर भी जो उसे मिथ्या (झूठ) कहते हैं। किसी वस्तु के विशेष–ज्ञान के बिना (अर्थात् वेद–शास्त्र संहिता का विशिष्ट–ज्ञान न होने से) अपनी अयोग्यता को छिपाते हैं और उसके स्वाद सार का रसास्वादन नहीं करते हैं किंतु वाद–विवाद में साहस (दुराग्रह) करते हैं उसे समाप्त नहीं करते अर्थात् अन्तहीन विवाद करते हैं। वेद शास्त्रों की निन्दा यह चौथा प्रबल अपराध है इसे नष्ट करने की इच्छा करें ॥ २५१ ॥

अर्थवाद बकवाद व्यर्थ बद सांच सनेह न साने।
नीरस नीच कीच चपटे चित नाम महत्त्व न माने ॥
जपे न आप ताप तालिब तम औरन हूं दुःख दाने।
युगलानन्य प्रपन्न संग बिनु पंचम पाप प्रमाने ॥२५२॥

श्रीनाम महिमा को अर्थवाद कहकर व्यर्थ बकवास करते हैं श्रीनाम में सच्चे स्नेह से युक्त नहीं होते। रसहीन तुच्छ विषय वासना के कीचड़ में सने हुए हृदय वाले श्रीनाम महत्त्व को स्वीकार नहीं करते हैं। अज्ञान एवं ताप के इच्छुक लोग स्वयं भी श्रीनाम का जप नहीं करते और दूसरों को भी दुःख देते हैं। प्रपन्न (श्रीनाम जापकों) के संसर्ग एवं सत्संग के बिना यह अर्थवाद रूप पाँचवा अपराध समझें ।२५२।

नाम ललाम श्याम सुन्दर जपि कर्म अधर्म कमावें।
रतन अमोल अतोल त्यागि जड़ कौड़ी गांठि बँधावें ॥
अधम अलायक असत संग यूत जीवन जान जलावें।
युगलानन्यशरण षष्ठम अपराध सन्त श्रुति गावें ॥२५३॥

Scanned by CamScanner

श्याम सुन्दर श्रीराम के अभिराम श्रीनाथ का जप करके पुनः अशुभ कर्म द्वारा जो अधर्म करते हैं वे अर्थात् नाम के बल पर पाप करते हैं बुद्धिहीन अज्ञानी जन श्रीनाम रूप अमूल्य, अतुलनीय रत्न को त्याग करके कौड़ी को गाँठ में बाँधते हैं, संसारासक्त हो जाते हैं। नासमझ अधम, दुष्ट संग से युक्त लोग अपने जीवन-प्राण को जलाते रहते हैं, जीवन को व्यर्थ बरबाद करते हैं। एतावता नाम के बलपर पाप कर्म करना छठवाँ अपराध वेद और सन्तगण बताते हैं ॥२५३॥

बिन बिस्वास रटे रसना रस रहस स्वरूप न भासे।
खर्ब पदारथ जर्ब जिगर प्रद तिन हित हीय हुलासे॥
सद्गुरुशरन गरीय गहे बिन शुद्ध होत नहिं आसे।
युगलानन्य प्रतीति सहित जपु परतम प्रेम प्रकासे ॥२५४॥

बिना विश्वास के रसना द्वारा श्रीनाम का रटन करने से न तो श्रीनाम रस की प्राप्ति होती है न ही प्रभु के रहस्यमय स्वरूप का दर्शन होता है। हृदय पर आघात करने वाले संसार के तुच्छ पदार्थों की प्राप्ति के लिये हृदय में प्रसन्नता का अनुभव करते हो किन्तु श्रेष्ठ श्रीसद्गुरु की शरण-ग्रहण किये बिना शुद्ध होने की आशा नहीं है अर्थात् सद्गुरु शरणापन्न होने से ही हृदय की शुद्धि (विश्वास की प्राप्ति) सम्भव है। विश्वास के साथ श्रीनाम जप करने से प्रभु प्रेम प्रकट (प्रकाशित) होता है। अतः बिना विश्वास के नाम जप करना सप्तम अपराध है ॥ २५४ ॥

सहज सत्त्वगुनमयी रसीली श्रद्धा रहित अभागी।
सुने न श्रवन लगाय भाय करि अन्तर मलमति पागी॥
तिन सठ को उपदेश नाम श्रीराम दर्व्य हित लागी।
युगलानन्य इहै अष्टम अपराध जान अनुरागी ॥२५५॥

सहज सात्त्विक रसीली श्रद्धा से रहित अभागी बुद्धि सन्तों के सदुपदेशों को भावपूर्वक मन लगाकर श्रवण नहीं करती ऐसे श्रद्धा विरहित मूर्खों को जो लोग केवल धनोपार्जन के लिए श्रीराम नाम का उपदेश करते हैं यही आठवाँ अपराध श्रीनाम प्रेमियों को जानना चाहिये ।२५५।

कर्म धर्म व्रत योग ज्ञान तप साधन अमित बिचारो।
जो जाने श्रीनाम विभव सम सो अति अघ भ्रम भारो॥
कहाँ सूर परकाश कहाँ खद्योत जोत लखि धारो।
युगलानन्य नाम समता निज नाम माँझ निरधारो ॥२५६॥

Scanned by CamScanner

विचार करने से कर्म, धर्म, व्रत, योग, ज्ञान, तप आदि अनेक साधन हैं इनके समान जो श्रीनाम के महत्त्व को समझते हैं यह अत्यन्त भ्रमपूर्ण महान् अपराध है। कहाँ सूर्य का प्रचंड प्रकाश और कहाँ जुगनू की टिमटिमाहट ? इसे देखकर निश्चय करिये अर्थात् श्रीनाम के प्रबल प्रताप के समक्ष अन्य साधनों की तुच्छता को समझो। अतएव श्रीनाम को (अनुपम) ही समझिये इस प्रकार अन्य साधनों के समान श्रीनाम को समझना नवम नामापराध है ॥ २५६ ॥

सुनि श्रीनाम प्रताप परम तम ताप बिनासन हेतू ।
करें न प्रीति प्रतीति रटन मधि आलस मगन अचेतू ॥
अहं ममादि देह ममता बिच पचे रचे पथ प्रेतू ।
युगलानन्यशरण दुस्तर तर दशम अघोघ निकेतू ॥२५७॥

अज्ञान व पाप-ताप को विनष्ट करने वाले श्रीनाम के महान् प्रभाव को सुनकर भी जो विश्वास पूर्वक स्नेह सहित श्रीनाम का रटन नहीं करते अपितु आलस्य में निमग्न व अचेत रहते हैं। और मेरापन तथा शरीर को आसक्ति में रचे-पचे हुए प्रेतयोनि— अधोयोनियों के मार्ग की ओर जा रहे हो।

इस प्रकार श्रीनाम महिमा का श्रवण करके भी श्रीनाम स्मरण न करना अत्यन्त यह दुस्तर पाप समूह का निवास स्थल दसवाँ श्रीनामापराध है ॥ २५७ ॥

त्यागे दश अपराध नाम आराधै जिकर जमाई ।
पागे प्रेम नेम अन्तर अनुरागे विषय बिहाई ॥
जागे जगत रैन से अनुछन तन मन भवन भुलाई ।
युगलानन्यशरण खाँगे नहिं रंचक वस्तु बड़ाई ॥२५८॥

इन दस नामापराधों का त्याग करके दृढ़तापूर्वक श्रीनाम की ही चर्चा (कथा) करते हुए श्रीनाम की आराधना करें। विषयों के अनुराग को छोड़कर हृदय को श्रीनाम प्रेम के व्रत में सराबोर कर दे। तन, मन, भवन अर्थात् देह गेह को मन से भुलाकर प्रतिक्षण संसार रात्रि में जागृत रहें, विषयों से सदा सावधार रहें ॥ २५८ ॥

सावधान सन्तत रहि के अपराध असाध बिसारे ।
असत संग दुर्वास बीज जलवाय निदान निसारे ॥
जल्दी नेक करे नाहीं श्री सतगुरु पाय इसारे ।
युगलानन्यशरण सपने मत कीजे काम किसारे ॥२५९॥

Scanned by CamScanner

असाध्य दस नामापराधों का त्याग करके निरन्तर सावधान होकर असज्जनों का संग तथा दुर्वासना के बीज को जला करके उसका उपचार निकाले, उपाय खोजे। साधन की सिद्धि में शीघ्रता नहीं करनी चाहिए श्रीसद्गुरुदेव के संकेत प्राप्त कर उनके निर्देशानुसार साधन करना चाहिए। स्वप्न में भी काम की चर्चा न करिये ॥ २५९ ॥

नाना मत बरनत झगरत नित बिगरत मति-रति साधू।
रहित सार भव भार असद गुनि निदरो निपट उपाधू॥
सुन्दर शाहराह सीतापति भजन बिगत दुख बाधू।
युगलानन्यशरण साबित दिल कै सियराम अराधू॥२६०॥

विविध प्रकार के मत मतान्तरों की चर्चा तथा वाद-विवाद के झगड़े से सज्जनों की दृढ़ निष्ठा में विक्षेप उत्पन्न होता है। सार रहित संसार के भार को असत्य समझकर सम्पूर्ण उपाधियों को त्यागो। दुःख और बाधाओं से रहित श्रीसीतापति का भजन सुन्दर राजमार्ग है। पूर्ण हृदय से श्रीनाम द्वारा श्रीसीतारामजी की आराधना करिये॥ २६० ॥

शेष गणेश महेश एकरस जपत निरन्तर रामैं।
गिरिजा गिरा गिरापति रति नति करहिं महेश प्रनामैं॥
जाको नाम काम भूरुह सतकोटि कहत घन घामैं।
युगलानन्यशरण सर्वोपर नाम अनूप कलामैं॥२६१॥

शेष, गणेश एवं भगवान् शिव निरन्तर एकरस श्रीराम नाम का जप करते हैं। यह प्रमाणित है कि श्री पार्वती, सरस्वती, ब्रह्मा, रति सदा श्रीराम नाम की वन्दना करते हैं। श्रीनाम शतकोटि कल्पतरु के समान संसार के घोर घाम से पीड़ित लोगों को शान्ति प्रदान करने वाले कहे जाते हैं। अनुपम अद्भुत श्रीनाम सर्वश्रेष्ठ शब्द महामंत्र है।२६१।

यारी नाम साथ कीजे छल छीजे छन नहिं लागे।
प्यारी प्रीति प्रतीति पाय दृढ़ प्रेम पाग प्रिय पागे॥
रोम-रोम सुख सीर बहे दिन-दिन दुःख दुर्मति दागे।
युगलानन्यशरण प्रति पद मुद जो मन नामहिं लागे॥२६२॥

श्रीनाम के साथ मित्रता कीजिये क्योंकि इनकी मित्रता से छल प्रपञ्च को नष्ट होने में क्षण भर भी कहीं लगता। सुन्दर प्रेम विश्वास को प्राप्त कर प्रियतम के दृढ़ स्नेह रस में निमग्न हो जायें। दिनोंदिन दुःख और दुर्मति दग्ध होती जाती है तथा रोम-रोम से सुखानुभूति की

Scanned by CamScanner

शीतलता प्रवाहित होती है । यदि मन श्रीनाम में लग जाये तो पग-पग पर प्रसन्नता प्राप्त होती है ॥ २६२ ॥

चित्रमित्र सम सकल नकल साधन निज अकल बिचारे ।
सुनि नाना मत कुमत गहो मत असत मानि द्रुत बारो ॥
सन्त समूह सराहत जेहि तेहि शरन सजत सुख सारो ।
युगलानन्यशरण चतुराई चटक कुचाल निकारो ॥२६३॥

चित्र में बने हुए सूर्य के समान समस्त साधनों को बुद्धि से विचार करके देखो कि सब नकली (झूठे) हैं अर्थात् चित्र में बना हुआ सूर्य जैसे अन्धकार को दूर नहीं कर सकता वैसे से सभी साधन आत्म शांति प्रदान करने में असमर्थ हैं । अनेक मतों को सुनकर दुर्बद्धि को मत ग्रहण करो तथा असत्य मानकर शीघ्रता पूर्वक त्याग करो । सन्तगण जिसकी (श्रीनाम की) प्रशंसा कर रहे हैं उनकी शरण में जाकर समस्त सुखों का प्राप्त करो । अधिक चतुराई और बुरी आदतों को तेजी (शीघ्रता) से निकाल दो ॥ २६२ ॥

रसना रसी रहे बरनाधिप बीच बिरह दव लहरे ।
आकस्मात प्रभात रहित तम उदित सुरबि अठपहरे ॥
रटत रमत आनन्द जमत जिय बसे नेह निधि गहरे ।
युगलानन्यशरण सुनाम बल बांह पाय सत सहरे ॥२६४॥

वर्णाधिप (वर्णों के राजा) श्रीनाम में रसना रसी रहे अर्थात् रसना से श्रीनाम का सतत उच्चारण होता रहे तथा हृदय में विरहाग्नि प्रज्वलित रहे। प्रातःकाल (सूर्योदय) होते ही अनायास अन्धकार दूर हो जाता है किन्तु यहाँ तो हृदय में सुन्दर श्रीनाम सूर्य आठों पहर उदित हैं, सदा श्रीनाम का प्रकाश बना रहता है। संसार रात्रि की सम्भावना नहीं है। श्रीनाम के रटन व श्रीनाम में रमण करने से हृदय में स्थायी आनन्द की प्राप्ति होती है तथा गहरे प्रेम सिन्धु में मन निमग्न रहता है । इस प्रकार श्रीनाम के बाहुबल का आश्रय प्राप्त कर नित्य धाम में निवास करता है ॥ २६४ ॥

हैं सब ज्ञान ध्यान इतनो जो नाम न पलक बिसारे ।
छय बासना बिलंब मंद मन द्वन्द दुरूह निसारे ॥
कै सम सब विस्व विभूति लखो सपने मधि मोह न सारे ।
युगलानन्यशरण लय बेशक होय प्रमोद पसारे ॥२६५॥

Scanned by CamScanner

बस सम्पूर्ण ज्ञान ध्यान इतना ही है जो क्षणभर के लिए भी श्रीनाम का विस्मरण न करे। श्रेष्ठता एवं हीनता रूप मन के द्वन्द की कठिनता को निकाले एवं विषय वासना को नष्ट करे। वमन के समान समस्त विश्व वैभव को देखे स्वप्न में भी मोह नहीं करे। निस्संदेह श्रीनाम में लीन होकर प्रसन्नता को प्रसारित (अत्यधिक आनन्द को प्राप्त) करे ॥ २६५ ॥

जै जिसकी सब तरह गिरह बिन बिरह लिए जो जापै।
बार–बार उमगाय हृदै सुचि सुमिरि सुनाम प्रतापै॥
शांति नितांत एकांत निलय सजि तजे त्रिगुन तम तापैं।
युगलानन्यशरण ऐसे सन्तन से अन्तक कांपैं॥२६६॥

ग्रन्थि मुक्त होकर विरह सहित जो श्रीनाम का जप करते हैं उनकी सभी प्रकार से जय है। सुन्दर पवित्र श्रीनाम के प्रभाव का स्मरण करके बारम्बार हृदय उमंग से भर जाता है। पूर्णतः एकान्त स्थान में निवास करके जो त्रिगुणात्मक अज्ञान जन्य त्रिताप का त्याग करते हैं ऐसे सच्चे सन्तों से यमराज भी काँपते हैं ॥ २६६ ॥

मुद्दा मजेदार मकसद मालूम उसी को होवै।
जौन जान जागत जसनिधि निज नाम निसे में सोवै॥
पल-पल प्रति महबूब नाम गुन गाय हँसे औ रोवै।
युगलानन्यशरण परपद के तरफ न सपने जोवै॥२६७॥

सुन्दर लक्ष्य बिन्दु का ज्ञान उसी को होता है जो ज्ञानपूर्वन संसार से जागता हुआ यश समुद्र श्रीनाम की रात्रि में सोता है, निश्चिन्त रहता है अथवा श्रीनाम के नशे में मदहोश रहता है। प्रतिक्षण प्रियतम प्राणधन के नामगुण का गान करके कभी हँसता है और कभी रोता है। स्वप्न में भी मोक्ष की कामना नहीं करता है ॥ २६७ ॥

गोतेखोर कहाय भली बिधि मुक्तानाम निकारे।
पैठ जाय अलमस्त सीस बिन सतसंगति निधि प्यारे॥
फरामोश अफसोस करे जिय जोस बढ़ाय हजारे।
युगलानन्यशरण खामोसी गहे अजूब बहारे॥२६८॥

निश्चिन्तता पूर्वक प्राणों की परवाह किये बिना सत्संग समुद्र में बैठकर गोताखोर कहलाने वाले श्रीनाम जापक भली प्रकार से श्रीनाम मुक्ता को निकालते हैं। प्रथम नाम विमुख होने के कारण अकृतज्ञता

Scanned by CamScanner

के लिये पश्चाताप करते हैं तत्पश्चात् अत्यधिक उत्साह के साथ श्रीनाम स्मरण करते हैं। मौन होकर अद्भुत आनन्द का अनुभव करते हैं।२६८।

हे रसने निर्लज्ज लबारिनि कलह कटुक कृत कानो।
बकवादिनी बृथा बोलति बहु बिना बिचार अयानो ।।
निन्दादाम पहिरि हिय निशिदिनि सजत न नाम निशानो।
युगलानन्य समुझु बौरी अब भजु श्रीप्रद धनु पानो ।।२६६

हे जिह्वे ! तुम निर्लज्ज, मिथ्याभाषिणी, कलहप्रिया, तुच्छ तथा कटु बोलने वाली हो बिना बिचारे व्यर्थ में बहुत बोलने वाली बकवास करने वाली गँवारिन नासमझ हो। अहर्निश निन्दा की माला हृदय में धारण करती हो किन्तु श्रीनाम चिह्न से स्वयं को नहीं सजाती। हे बावरी ! अब तो समझो और श्री प्रदायक धनुर्धारी श्रीराम का भजन करो ॥ २६६ ॥

मंजुल मधुर मनोहर मुक्ता माल लाल गुन नामहिं।
छलकत छटा छबीलो चहुँ दिशि ताहि धारु सब जामहिं ।।
जागृत दसा दिमाग गरूरी रटत बरन बर बामहिं।
युगलानन्यशरण सुन्दर मुख माँझ नाम अभिरामहिं ।।२७०।।

श्रीलालजू (प्रभु) के मधुर गुण नाम सुन्दर स्वच्छ मनोहर मुक्ताहार (मोती की माला) है। जिसकी सुन्दर छटा चारों ओर छिटक रही है उस मुक्ताहार को आठों याम (सर्वदा) धारण करे। श्रेष्ठवर्ण श्रीनाम के रटन में अपनी जागृत अवस्था अर्थात् सावधान (विरक्त) होने का अभिमान प्रतिकूल है। अतः निरभिमान होकर सुन्दर मुख में अभिराम श्रीनाम विराजमान है ॥ २७० ॥

राज रकार बिकार बिहंडन मंडन शिव श्रुति सेषा।
बीज अमल कल अनल सकल मल खलदल दलन परेसा ।।
योगी ध्येय ज्ञेय ज्ञानिन को कारन ब्रह्म बरेसा।
युगलानन्य सुनाम धाम मय बिस्व कदम्ब हृदेसा ।।२७१।।

शिव, शेष तथा श्रुतियों द्वारा मंडित तथा बिकार निवारक 'रकार' श्रीनाम में सुशोभित हैं तथा सुन्दर निर्मल अग्निबीज हैं। जो समस्त मल विक्षेप काम क्रोधादि दुष्ट समूह को नष्ट करने वाले परेश 'रकार' योगियों को ध्यान करने योग्य, ज्ञानियों के जानने योग्य श्रेष्ठ कारण ब्रह्म हैं। सुन्दर नाम के प्रकाशमय 'रकार' विश्व समूह के हृदय-प्रदेश (हृदयेश्वर) हैं ॥ २७१ ॥

Scanned by CamScanner

आमय हरत भरत सुख सम्पति करत प्रभाव प्रकासा ।
अतिहिं अमोल अडोल बोल लायक सब बिधि रसरासा ।।
बिशद बीज वर भानु वासुदेवादि स्वरूप प्रभासा ।
युगलानन्यशरण मोहन भ्रम नाशक स्वर संकासा ।।२७२।।

श्रीराम नाम के 'अकार' रोगों का हरण कर सुख सम्पत्ति प्रदान कर अपने प्रभाव का प्रकाश प्रकट करते हैं। अत्यन्त अनमोल, स्थिर, सरल सुमधुर तथा सभी प्रकार से रससिक्त हैं। 'अकार' विशद श्रेष्ठ सूर्यबीज हैं एवं वासुदेवादि भगवदवतारों के स्वरूप का ज्ञान कराने वाले हैं। मनमोहक 'अकार' श्रम व भ्रम का नाश करने वाले समस्त स्वरों के प्रकाशक हैं ।। २७२ ।।

मधुर मकार सार सुन्दर सुख सागर अमल अनूपा ।
प्रिय पियूष राकापति कारन तारन तम कलि कूपा ।।
ताप साप संसृति तिमिरादिक तिरस्कार कृत धूपा ।
युगलानन्यशरण शोभा सत साजत रस गुन भूपा ।।२७३।।

श्रीराम नाम के मधुर 'मकार' सौन्दर्य सार, सुख के सागर अनुपम एवं निर्मल हैं। सुस्वादु अमृत पूर्ण मकार चन्द्रमा के कारण अर्थात् चन्द्रबीज हैं। तम प्रधान कलिकाल के कूप से तारने वाले, भवकूप से उद्धार करने वाले हैं। त्रिताप जन्य पीड़ा व संसार के अज्ञानादि का तिरस्कार करने के लिए प्रकाश किरण के समान हैं। समस्त रसों एवं गुणों के अधिपति 'मकार' अत्यधिक शोभा सम्पन्न हैं ।। २७३ ।।

षट् उद्वेग बेगि नासन करि तेग नाम कर गहिए ।
मन बानी तिमि जठर कोह अभिलाष सिश्न ज्वर जहिए ।।
रसना रटन लगाय नाम मुख से कटु कहर न कहिए ।
युगलानन्यशरण सुशान्त रहि शीश परे सुख सहिए ।।२७४।।

काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य इन छह मनोवेगों को शीघ्रता पूर्वक नष्ट करने के लिए हाथ में श्रीनाम रूप तलवार ग्रहण करिये, सतत श्रीनामोच्चारण करिये। इस प्रकार मन वाणी के दोषों की भाँति ही पर्वत सम कठिन अभिलाषा (वासना) तथा इन्द्रियों के ज्वर को समाप्त कर दीजिये। जिह्वा से श्रीनाम की रटन लगाकर कभी भी मुख से कड़वे और दुखद वचन मत कहिये, कटुवाणी न बोलिये। भलीभाँति शान्त रहकर सिरपर जो विपत्ति आये सुखपूर्वक उसे सहन करिये ।। २७४ ।।

Scanned by CamScanner

श्रीरघुवीर नाम पंकज मधु पान मधुप ह्वै करिए।
इत उत बिपिन बिकार खार सम समुझि नहीं अनुसरिए ।।
पीके परम पियूष नाम सब स्वाद दूरहीं धरिए।
युगलानन्यशरण जी के जुग-जुग मंगल मुद भरिए ।।२७५।।

रघुवीर श्रीनाम के नामारविन्द मधु रस का पान रसिक भ्रमर बनकर करिये। इधर-उधर के संसारारण्य विकारों को कण्टक सदृश समझकर उनका अनुगमन न करिये अर्थात् संसार वन में मन को भटकने मत दीजिये। श्रीनाम के परमामृत को पीकर अन्य सब स्वादों को दूर ही रहने दीजिये। इस प्रकार श्रीनाम के प्रभाव से युग-युगों तक जीवन को मंगलों व हर्ष से भर लीजिये ।। २७५ ।।

सावधान संतत रहिए श्रीनाम महत्त्व मनाए।
आबदान सब तरह रहे पुर प्रेम सनेह जवाए ।।
नाबदान दुःख खान भान गुनवान सुसंत मनाए।
युगलानन्यशरण तानो तन नाहक नोच तनाए ।।२७६।।

श्रीनाम के महत्त्व को स्वीकार करके सावधान रहिये। श्रीनाम के स्नेह से हृदय को जलपात्र की भाँति भरा रखकर सब तरह से श्रीधाम में प्रेम पूर्वक वास करें। समझदार सन्तों का कथन है कि दुःख खानि संसार का आभास गन्दी नाली के समान है। व्यर्थ में तुच्छ तन को ऐंठकर चलते हो, अभिमान करते हो एक दिन यह नश्वर शरीर स्वयं ही तन जाएगा, मृत्यु को प्राप्त होगा ।। २७६ ।।

जागे जो जन नाम मधुर डोरी मनमांझ सम्हारे।
तिनहीं को संकट कोटिन नहिं निकट होय हिय हारे ।।
बिमल बोध अविरोध सोध सुख सौगुन अनुदिन धारे।
युगलानन्यशरण प्रीतम प्रिय बरन बिचित्र बिचारे ।।

जो साधक जन जागृत होकर हृदय में मधुर श्रीनाम की डोरी रस्सी को संभाल कर पकड़ लेते हैं। करोड़ों संकट मन में हार मान कर उनके समीप नहीं आते अर्थात् दूर से ही सम्पूर्ण कष्ट उनका दर्शन कर भाग जाते हैं। निर्मल ज्ञान एवं निर्विघ्न अत्यधिक विशुद्ध सुख को प्रतिदिन धारण करते हैं। वह आनन्द निरन्तर सौगुना होकर वर्धमान होता रहता है। इस प्रकार प्रभु के प्यारे युगल वर्ण श्रीनाम की विचित्रता (चमत्कार) का हृदय में विचार करें ।। २७७।

Scanned by CamScanner

नाम नेह गुन गेह बिना जो बना बिरागी योगी ।
तिनको मना नहीं अंतक पुर सना शोक सत सोगी ।।
चना समान भुने जित तित सठ कना बटोरत रोगी ।
युगलानन्यशरण चौरासी बीच बिबिधा विष भोगी ।।२७८।

गुणागार गुणखानि श्रीनाम स्नेह के बिना जो बैरागी (विरक्त) और योगी बनने का दम भरते हैं (दम्भ करते हैं) उनके लिए यमपुर में आने की मनाही नहीं है अर्थात् नरक के द्वार खुले हैं । वे सैकड़ों चिन्ताओं, शोक में निमग्न अत्यन्त दुःखी हैं । नाम स्नेह रहित वह शठ चने के समान इधर-उधर भुनता रहता है अर्थात् ताप से तप्त होकर विलाप करता है । भव रोग से युक्त होकर कण-कण बटोरता रहता है, विषय भोगों के स्वल्प आनन्द के लिये भटकता रहता है । चौरासी लाख योनियों में विविध प्रकार के विषय रूप विष का भोग करता रहता है ।। २७८ ।।

ज्ञान बिरति रति रीति हेतु श्रीनाम मनोहर मानी ।
युगलकिशोर लखन पोषन कर भरत शत्रुहन जानी ।।
परिकर निकर नेह बरधन सब सौंज नाम मधि ध्यानी ।
युगलानन्यशरण सुनाम से भिन्न न वस्तु बखानी ।।२७९।।

मनोहर श्रीनाम को ज्ञान, वैराग्य भक्ति का कारण मानकर युगलकिशोर श्रीसीताराम जी, श्रीलक्ष्मण कुमार, पोषणकर्ता श्रीभरत-लाल जी एवं शत्रुघ्न कुमार को नामार्थ में जानना चाहिए । परिकर समूह एवं उनके स्नेह वर्धन की समस्त सामग्री का श्रीनाम के मध्य में ध्यान करना चाहिये । सुन्दर श्रीनाम से भिन्न किसी वस्तु का वर्णन (चर्चा) न करें ।। २७९ ।।

वाचक बोध विहीन वाच्य अपरोक्ष होत क्यों प्यारे ।
चाहो पचो मचो साधन समुदाय बीच बजमारे ।।
नाम प्रताप प्रकास भए बिन संशय टरत न टारे ।
युगलानन्यशरण सुनाम रट परिहर बाद बिकारे ।।२८०।।

हे प्यारे ! वाचक बोध विहीन श्रीनाम के ज्ञान का बिना अर्थ का श्रीनामी का प्रत्यक्ष कैसे होगा ? चाहे अनेकों साधन करके पचकर मर जाओ किन्तु सब व्यर्थ है । श्रीनाम के प्रताप का प्रकाश हुए बिना हृदय के संशय मिटाने पर भी न मिटेंगे, सन्देह निवृत्त नहीं होंगे । अतएव वाद-विवाद व विकारों का त्याग करके सुन्दर श्रीनाम का रटन करो ।२८०।

Scanned by CamScanner

चारों युग अन्दर बन्दर सम चपल विषयरत बाँमी ।
संकेतिक बहु बिबस नाम जपि पार भए बदनामी ।।
नाम प्रभाव चाव चातक चित चाव गहे आरामी ।
युगलानन्य बिमुख इनते तेहि सम को नोनहरामी ।।२८१।।

चारों युगों के अन्दर बन्दर के समान चंचल व विषयासक्त भगवत्प्रतिकूल अनेक जीव विवश होकर सांकेतिक अन्य किसी के व्याज से श्रीनाम जप करके भव सागर से पार हो गये श्रीनाम ने उनकी बुराइयों पर ध्यान नहीं दिया और कृतकार्य कर दिया । श्रीनाम के प्रभाव को चातक की चाह के समान चाह करके दृढ़निष्ठ होकर ग्रहण करने से विश्राम आनन्द की प्राप्ति होती है । ऐसे श्रीनाम से जो विमुख हो उसके समान कौन नमकहराम अकृतज्ञ होगा ? ।। २८१ ।।

राम नाम सम मीत नहीं कोउ तीन लोक के अन्तर ।
प्रगट पुरान पुकारत आरत शमन नाम निज मन्तर ।।
बेनाहक बेकूफ फजीहत सहे गहे जमयन्तर ।
युगलानन्य सुनाम महामहिमा सब तौर स्वतन्तर ।।२८२।।

तीनों लोकों के अन्दर श्रीराम नाम के समान कोई सच्चा मित्र नहीं है । दुःखों का शमन करने वाले श्रीनाम स्वयं मन्त्र हैं ऐसा पुराण स्पष्ट रूप से कह रहें हैं । श्रीनाम विहीन मूर्ख लोग व्यर्थ में परेशानियाँ सहकर यमदण्ड प्राप्त करते हैं। सुन्दर श्रीनाम की महान् महिमा सभी प्रकार से सर्वतन्त्र स्वतन्त्र है ।। २८२ ।।

एक बार सुखसार नाम रसधार उचार किए से ।
सब बिधि सपदि स्वच्छ साहेब सम सेवनीय सुधिए से ।।
श्री मुख मधुर बाग बरधन मुद मोद बिचार हिए से ।
युगलानन्य नाम सुमिरन करु तरु तम मरन जिए से ।।२८३।।

एकबार सुखसार रसधार श्रीनाम का उच्चारण करने से शीघ्र सखी प्रकार से स्वच्छ निष्पाप होकर प्रभु के समान बुद्धिमान सज्जनों के द्वारा सेवनीय-पूजनीय हो जाता है यह प्रभु के श्रीमुख से निःसृत हर्षवर्धक मधुर बचन हैं प्रसन्नता पूर्वक हृदय में विचार करके देखो । अतएव ऐसे श्रीनाम का स्मरण करके अज्ञान जन्य जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त हो जाओ ।। २८३ ।।

Scanned by CamScanner

ब्यास बिमल अभ्यास नाम अभिराम समादर साजे।
भास रास अनयास उदय उर अफुर रहत तर ताजे ।।
घास हेत अभिलाष वृथा चित रचत पचत बिन काजे।
युगलानन्य उदास होय निज नाम रमत भव भाजे ।।२८४।।

अभिराम श्रीनाम का समादर पूर्वक विस्तार से दीर्घकाल तक निर्मल अभ्यास करे जिससे अस्फुरित रास–रहस्यों का प्रकाश अनायास हृदय में उदित होता है उस स्फुरण से नाम जापक सदा तरोताजा (हमेशा प्रसन्न) रहते हैं। नाम बिहीन तुच्छ पदार्थों के लिए व्यर्थ चित्त में अभिलाषा करके बिना काम उसमें रचता–पचता है। अतः उससे उदासीन होकर श्रीनाम में रमण करते ही संसार-निवृत्त हो जात है।२८४।

कोटिन करामात करतल कमनीय नाम दिशि देखे।
कोटिन हीन दीन दुनियाँ दुचिताई पीर परेखे ।।
खोटिन किसब कनात कहर कुल पुल तोड़त पद पेखे।
युगलानन्यशरण पोटिन प्रिय प्रेम लहे अनिमेखे ।।२८५।।

कमनीय श्रीनाम की ओर दृष्टि जाते ही करोड़ों चमत्कार हस्तगत हो जाते हैं करोड़ों दीन-हीन सांसारिक लोगों के दुःख द्वन्द को देखते हैं। नाम जापक सिद्ध सन्तों के श्रीचरणों का दर्शन बुरे कर्मों के घेरे तथा दुःख समूह के सेतु को तोड़ देता है, विवृत्तकर देता है। सदा प्रियतम के स्थिर प्रेम की पोटली (प्रेम–खजाना) प्राप्त होती है।२८५।

द्वार दशम दिलदार बसे योगीजन जतन जतावें।
प्रानापान मिलान हेत बहु बात बिचित्र बतावें ।।
होत नहीं कीन्हे पर सुख तउ नाहक जीव सतावें।
युगलानन्य नाम जपिके अभिअन्तर चेत चेतावें ।।२८६।।

दसवें द्वार–ब्रह्मरन्ध्र में प्रियतम प्रभु निवास करते हैं। उनकी प्राप्ति का यह प्रयत्न उपाय योगीजन बतलाते हैं। प्राण और अपान को मिलाने के लिए बहुत सी विचित्र बातें बताते हैं। इन सब प्रयत्नों के पश्चात भी सुख प्राप्त नहीं होता किन्तु व्यर्थ में स्वयं को सताते हैं, कष्ट उठाते हैं। श्रीमहाराज जी कहते हैं, श्रीनाम जप करके जापक आन्तरिक ज्ञान को जागृत करते हैं ।। २८६ ।।

ऐसी कौन कठिन कीमत जो नाम जपत नहिं पावें।
सकल ईश सिरताज राज राजेश भुवन बस आवें ।।

Scanned by CamScanner

वैभव महामधुर लीला लहरी तेहि बीच समावें।
युगलानन्यशरण शर्बत सौन्दर्यवर्य छकि जावें ।।२८७।।

ऐसी कौन सी दुर्लभ और मूल्यवान् वस्तु है जो श्रीनाम जप के द्वारा प्राप्त नहीं होती ? सम्पूर्ण ईश्वरों के ईश्वर चक्रवर्ती नरेश श्रीदशरथ नन्दन श्रीराम भी वश में हो जाते हैं। ऐश्वर्य व महा माधुर्य की लीला–तरंगों के बीच समाहित करते हैं। श्रेष्ठ सौन्दर्य शर्बत को पी करके तृप्त हो जाते हैं ।। २८७ ।।

ले लीने भल लाह ललित रसना श्रीनाम धेआके।
दे दीजै मन-तन बानी श्रीबरन राज छबि ल्याके।।
तेतो जे तिल मिल प्यारे पय पीते रहिये प्याके।
युगलानन्यशरण भीजे उर उज्ज्वल रस जस स्याके ।।२८८।

रसना में श्रीनाम को धारण करके भलीभाँति सुन्दर लाभ प्राप्त कर लीजिये । वर्णराज श्रीनाम की अनुपम छवि का ध्यान करके तन मन वचन से समर्पित हो जायें। जितना भी थोड़ा सा समय प्राप्त हो श्रीनाम रस को ही मिलकर पीते–पिलाते रहिये। दूसरों को पान करा-कर स्वयं भी पान करते रहिये। जीवन के लघु से लघु अंश का लाभ प्राप्त करिये। प्रभु के यश को सुनकर उज्ज्वल (मधुर) रस से हृदय भींग जाता है ।। २८८ ।।

वेद पुरान बखान अमित उपखान बयान विचारोगे।
खेद अनेक पाय प्यारे फिरि हाय लिए हिय हारोगे।।
सन्त समाज समीप जाय जो रहस सांच निरधारोगे।
युगलानन्यशरण केवल श्रीनाम परत्त्व प्रचारोगे ।।२८९।।

वेद–पुराणों द्वारा वर्णित अनेक उपाख्यानों कथाओं के वचनों पर विचार करोगे तो प्यारे ! अनेक प्रकार का कष्ट प्राप्त करके फिर हाय–हाय करते हुए हृदय में पश्चात्ताप करोगे। यदि सन्त समाज में उनके सन्निकट जाकर उनके उपदेशों को स्वीकार करके सच्चे रहस्य का निश्चय करोगे तब एकमात्र श्रीनाम परत्त्व की विशेष चर्चा करोगे ।२८९।

दम-दम दाना नाम मधुर दुति दाम जपत छकि छाकोगे।
रम–रम रंग रूप रौशन तम रहित सकल से थाकोगे।।
जम–जम जिकर जलूस जान-जीवन जन अनुभव आंकोगे।
युगलानन्यशरण हम-हम तजि अजब झरोखा झांकोगे।।२९०।

Scanned by CamScanner

श्वास–प्रश्वास के दाने (मनिका) की प्रकाशमयी मालापर मधुर श्रीनाम का जप करके पूर्णरूप से तन्मय हो जाओगे । अन्धकार रहित उसके रंग रूप के पूर्ण प्रकाश में रमकर सम्पूर्ण प्रपंच से निवृत्त हो जाओगे । जमकर दृढ़ता पूर्वक प्राणधन प्रियतम की चर्चा सभी के बीच में करोगे तथा उनके अनुभव को प्राप्त करोगे । अहंकार को त्यागकर दिव्य दृष्टि प्राप्त करोगे, अद्भुत दृश्य देखोगे ॥ २९० ॥

श्रीसीता संजुत सुनाम सुचि सकृत जोन जन लेवें ।
परम प्रमोद पुनीत पाय परमेश धाम सुख सेवें ॥
तिन बर बिमल कंज कर में अवधेश बिके दुति देवें ।
युगलानन्यशरण स्वामिनहू कृपा कलित रस भेवें ॥२९१॥

श्रीसीता नाम से संयुक्त श्रीराम के सुन्दर श्रीनाम (श्रीसीताराम नाम) का जो व्यक्ति एकबार उच्चारण कर लेता है वह परम पवित्र प्रसन्नता को प्राप्त करके प्रभु के श्रीधाम का सुखपूर्वक सेवन करते हैं। उन श्रीयुगल नाम जापकों के निर्मल श्रेष्ठ करकमलों में अवधेशनन्दन श्रीराम बिक जाते हैं और प्रकाश प्रदान करते हैं। स्वामिनी श्रीसियाजू भी उसे अपने सुन्दर कृपारस से भिगो देती हैं ॥ २९१ ॥

युगल नाम अभिराम युगल लीला गुन धाम सम्हारो ।
युगल स्वरूप अनूप महा मोदायन नैन निहारो ॥
युगल केलि कमनीय रसिक सतसंग रंग अवधारो ।
युगलानन्य युगल बरनन पर तन धन मानस वारो ॥२९२॥

युगल श्रीसीतारामजी के सुन्दर युगलनाम उनकी युगल लीला, गुण और धाम को धारण करो, निरन्तर मन को उन्हीं में लगाये रहो। अतीव हर्ष सम्पन्न युगल स्वरूप का नेत्रों से अवलोकन करो। श्रीयुगल सरकार की सुन्दर रसमयी क्रीड़ाओं के रंग को रसिक सन्तों के सत्संग से प्रेमपूर्वक धारण करो । युगलवर्ण श्रीसीतारामजी पर तन, मन, धन सब न्यौछावर कर दो ॥ २९२ ॥

केवल भजत सजे नाहीं सुख स्वाद प्रसाद बिहीने ।
तुच्छ रुच्छताई अन्तर झलकत बाहिर दृग दीने ॥
प्रिया प्रेम परतन्त्र श्याम क्यों रीझें रसिक रंगीने ।
युगलानन्यशरण अनुरागी बड़भागी युग भीने ॥२९३॥

श्रीसीता नाम से विहीन केवल रामनाम का स्मरण सुख, स्वाद व प्रसन्नता से रहित शोभा नहीं देता। श्री जू की कृपा के बिना हृदय के अन्दर और बाहर तुच्छ नीरसता दिखाई देती है रस का संचार नहीं होता है। श्रीप्रिया प्रेम परतन्त्र रसिक रंगीले प्रियतम श्यामसुन्दर श्रीरामप्रिया नामोच्चारण के बिना भला कैसे रीझ (प्रसन्न हो) सकते हैं ? इसीलिए सौभाग्यशाली अनुरागीजन श्रीयुगलनाम में भीगे रहते हैं।२९३।

अमल अभेद खेदहारी रसकारी जीवन जोरी।
अकथ सुपथ प्रतिपाद्य एकरस नीरस समन करोरी ।।
बदन बीच बिलगात बस्तु अद्वैत उबोत तनोरो।
युगलानन्यशरण दोऊ पद पंकज मांझ सनोरी ।।२९४।।

कष्टों का हरण करने वाली रसदायिनी निर्मल अभिन्न श्रीजानकी जीवन की सुन्दर जोड़ी हैं। अकथनीय, सुन्दर वेदशास्त्रों व सन्मार्गी ऋषिमुनियों द्वारा एकरस प्रतिपादित युगल सरकार करोड़ों नीरसताओं का शमन करने वाले हैं। मुख में श्रीनाम द्वारा दोनों भिन्न प्रतीत होते हैं किन्तु वास्तव में युगल दम्पत्ति एक रूप अभिन्न प्रकाशमय स्वरूप हैं। अतएव श्रीसीतारामजी उभय के चरणाविन्द में मन को लगा दीजिये।२९४।

सीताराम नाम जाहिर जगजीवन जगत बिलोको।
हिन्दू मुसलमान काफिर कुलकहे लहे सुख थोको ।।
सीखे बिना स्वभाविकहीं रसना उच्चारत तोको।
युगलानन्यशरण सीतावर नाम रटो अविसोको ।।२९५।।

श्रीसीतारामजी का नाम लोकजीवन एवं जगत् में स्पष्ट रूपसे दृष्टिगोचर होता है, देखिए हिन्दू, मुसलमान, नास्तिक सभी ने श्रीनाम का उच्चारण करके अतीव सुख प्राप्त किया। तुम्हारे सीखे बिना स्वाभात्रिक ही सुगमता पूर्वक रसना श्रीनाम का उच्चारण कर लेती है। शोक रहित हो श्रीसीताराम नाम का रटन करो ।। २९५ ।।

सातो कांड प्रबन्ध अंधतम तरुन तरनि जिय जानो।
सो सब सरस सुधेस चरित श्रीरामनाम से मानो ।।
रमु क्रीड़ा बिहार बोधन वैभव बरधन पहिचानो।
युगलानन्यशरण सूक्षम शुचि समरथ अर्थ प्रमानो ।।२९६।।

श्रीमद्रामायण के सातों काण्डों को हृदय में अज्ञानाधन्कार के लिए प्रचण्ड सूर्य समझो। वह सम्पूर्ण सरस सुधासार परमेश का चरित्र

Scanned by CamScanner

श्रीनाम से स्वीकार करिये । रमु क्रीड़ार्थक धातु युगल विहार वैभव का बोध एवं वर्धन करने वाले हैं ऐसा जानो। रमणथर्क श्रीराम शब्द के इस सूक्ष्म पवित्र, समर्थ–प्रबल अर्थ को प्रमाण समझो ॥ २६६ ॥

श्रीरघुवंश विभूषन जस पोयूष परम पद दाता हैं ।
कोटिन अघ पल पाव माँझ मरदन कारन जन त्राता हैं ॥
नाना भाँति महामुनिगन जहँ रमत निरन्तर ध्याता हैं ।
युगलानन्यशरण परिपूरन परतम प्रभा प्रमाता हैं ॥२६७॥

रघुवंश विभूषण श्रीरामभद्र जू का सुयशामृत–चरितामृत परमपद प्रदान करने वाला है। करोड़ों पापों को पलभर में नष्टकर जीवों को सुख देने वाले हैं । महामुनीन्द्रगण विविध प्रकार से जिनमें रमणकर निरन्तर उनका ध्यान करते हैं । परिपूर्ण परमोत्कृष्ट प्रकाश को प्रमाणित करते हैं ॥ २६७ ॥

सुन्दर रूप अनूप बाल पौगंड कुमार निहारी ।
वात्सल्य रस रसिक रमे जेहि माँह सतत मन वारी ॥
प्रीतम प्रजा प्रान तम गुनि नित रमँहि निमेष निवारी ।
युगलानन्य सुनाम अर्थ रुठि समुझत शोक सुधारी ॥२६८॥

बाल, पौगंड तथा कुमार अवस्था में श्रीराम के अनुपम सुन्दर रूप का अवलोकन करके वात्सल्य रस–रसिक उस रूप में निरन्तर मन को न्यौछावर करके रमण करते हैं । प्यारी प्रजा श्रीराम को नित्य प्राण के समान समझकर निर्निमेष दृष्टि से अपलक नित्य रमण करती हैं । रुचिपूर्वक अभिराम श्रीनाम के सुन्दर अर्थ को समझते हैं ।२६७।

विश्वामित्र पवित्र तपोधन रमि गये संग लेवाई ।
विद्या विविध दान दीन्हें बिन याँचे रमन निकाई ॥
पंथ निवासी रमे अमित ताड़का रमी गति पाई ।
युगलानन्य रमे आश्रमबासी अग जग समुदाई ॥२६९॥

पवित्र तपस्वी महर्षि विश्वामित्र प्रभु को साथ ले जाते समय उनमें रम गये । श्रीराम के सौन्दर्य में रमणकर महर्षि ने बिना माँगे उन्हें विविध विद्याओं को दान दिया । अनेक मार्ग निवासी मनुष्य श्रीराम रूपमें रम गये तथा राक्षसी ताड़का ने सौन्दर्य से आकृष्ट होकर श्रीराम रूप में रमण करने से सद्गति प्राप्त कर ली। आश्रमवासी ऋषि-मुनि एवं संसार के सभी लोग श्रीराम रूप में रम गये ॥ २६९ ॥

Scanned by CamScanner

श्रीगंगा रसरंग तरंगा रमो रमन रुचि ठानी।
गौतम बाम रमाय भली विधि विदित बिचित्र कहानी।।
नेह निधान निषाद रम्यो गति लही ललित रसखानी।
युगलानन्यशरण सुनाम निज अर्थ प्रबल पहिचानी।।३००।।

रसरंग तरंगा श्रीगंगा श्रीराम दर्शन करके (रमण) चरणस्पर्श करने की इच्छा से भगवच्चरणारविन्द में रमण करने लगीं। महर्षि गौतम की पत्नी-अहल्या को श्रीरामचन्द्रजी ने चरणस्पर्श द्वारा भलीभाँति रमण कराया यह विचित्र कथा सर्वविदित है। स्नेहनिधान निषाद ने श्रीराम में रमणकर पूर्ण रसमयी सुन्दर गति प्राप्त की। अपने प्रियतम के सुन्दर श्रीनाम के प्रबल सशक्त रमु क्रीड़ार्थक अर्थ को हमने पहिचान लिया है ।। ३०० ।।

याही भाँति रमावन मन मगवासी श्रीरसरासी।
विश्वामित्र संग शोभित अनुराग अदाग बिलासी।।
तारे अमित तमीचर तारक अर्थ परत्त्व प्रकाशी।
युगलानन्यशरण पहुँचे श्रीमिथिलानेह निवासी।।३०१।।

इसी प्रकार रसराशि रसिक शिरोमणि श्री रघुनन्दन मार्ग में निवास करने वालों के मन को रमण कराते हुए प्रेम के विलासी इच्छुक श्रीराम महर्षि विश्वामित्र के साथ शोभायमान हैं। अनेक राक्षसों को तारने वाले श्रीराम तारक अर्थ के परत्त्व का प्रकाश कराने वाले हैं इस प्रकार प्रेम में निवास करने वाले श्रीराघवेन्द्र मिथिलापुरी में पहुँचे।३०१।

श्रीमिथिलापुर बिसद बाटिका प्रथम रमाय रमे हैं।
श्रीमिथिलेश किशोरी पद प्रिय अंकित जानि जमे हैं।।
श्रीमिथिलेश परेश प्रभा परिपूरन तिल न कमे हैं।
युगलानन्यशरण आए सुनि-मुनि आगमन समे हैं।।३०२।।

सर्वप्रथम मिथिलापुर की विशाल वाटिका में रमण कराके रमे हैं, अर्थात सभी को अपने रूप से आकृष्ट करके स्वंय भी नगर सौंदर्य से आकर्षित हुये हैं। मिथिलेश किशोरी श्रीजानकीजी के प्रिय श्रीचरण चिह्नों से अंकित–संस्पृष्ट जानकर वहाँ ठहरे हैं। मिथिलाधिप राजा जनक के परमेश निर्गुण ब्रह्म के प्रकाश से परिपूर्ण श्रीराम थोड़े भी कम नहीं हैं। ब्रह्मानन्द सदृश परमानन्द दायक हैं। मुनि विश्वामित्र के आगमन का समाचार सुनकर उसी समय मिथिलेश आये हैं ।।३०२।।

Scanned by CamScanner

सुन्दर रूप अनूप छटा छबि छकि-छकि होश बिसारे।
कहे कौन कौसिक कहिए किन कोटि कला उजियारे ॥
व्यापक अगुन ब्रह्म अद्भुत आनन्द सुछीनन बारे।
युगलानन्य अरूप बोध बिसराय रमे छबि धारे ॥३०३॥

सुन्दर अनुपम रूप छटा की छबि का पानकर तृप्त होकर जनकराज बेसुध हो गये। अधीर होकर पूछने लगे-महर्षे विश्वामित्र! कहिए, करोड़ों कलाओं से प्रकाशित ये कौन हैं? अथवा कौन इनका वर्णन कर सकता है। व्यापक निर्गुण ब्रह्म के अद्भुत आनन्द को भली प्रकार से (छीनने) अपहृत करने वाले हैं। निराकार ब्रह्म के ज्ञान का विस्मरण कर श्रीमिथिलेश छबिनिधि श्रीराम में रम गये ॥ ३०३ ॥

परम प्रतापवान परसा पानी प्रीतम पद पेषी।
रमि रहे रूप रसेस रंग सब संग त्यागि अनिमेषी॥
सातों दीप प्रदीप महीपति रमे सुभग अवरेषी।
युगलानन्य रमायो अग जग जनकनगर सुबिसेषी ॥३०४॥

परम प्रतापी परशुराम प्रियतम प्रभु के चरणारविन्द का दर्शन करके समस्त संग अन्य विषयों का त्याग करके निर्निमेष दृष्टि से रसेश्वर के रूप रंग में रम गये। सातों दीपों के श्रेष्ठ प्रकाशमान राजागण श्रीराम सौन्दर्य का अवलोकन कर वहीं रम गये। श्रीराम ने सम्पूर्ण जगत् को रमण कराया तथा जनकपुर वासियों को विशेष रूप से सम्यक् रमण कराया ॥ ३०४ ॥

सास-ससुर सज्जन साला साली सम्बन्धी जेते।
लखि-लखि रूप अनूप भूप प्रिय प्रान रमे तहँ तेते॥
निज-निज रस अनुकूल रमे छबि छकि-छकि छंलछरेते।
युगलानन्य नाम अन्तर सब लीला लहर निकेते ॥३०५॥

श्रीरामजी के सास, ससुर, साला, साली व अन्य जितने भी गुरुजन सम्बन्धी थे वे सभी जनकराज के प्रियतम प्राणधन श्रीरघुनन्दन के अनुपम रूप को देख-देखकर वहीं रम गये। अपने-अपने भाव, रसानुकूल सभी सर्वश्रेष्ठ छँटे हुए सौन्दर्य सम्पन्न रूपनिधानजन भी श्रीराम छबि में छक-छककर रम गये। श्रीनाम के अन्दर ही समस्त रसमयी लीला तरंगे तरंगायित हो रही है ॥ ३०५ ॥

Scanned by CamScanner

आए अवध रमाए रसनिधि नेही निखिल जहाँ लौं।
छाये छबि बाटिका बीथिका बिसद बजार जहाँ लौं ।।
कहो कौन नहि रमे रूप मनमोहन निरखि तहाँ लौं।
युगलानन्य नाम महिमा मति मेरी कहे कहाँ लौं ।।३०६।।

श्री अवधपुरी में आकर रसनिधि श्रीराघवेन्द्र ने जहाँ तक प्रेमी समाज था सभी को रमण कराया। जहाँ तक गली, बाजार, वन उपवन थे सर्वत्र अपने रूप साम्राज्य से श्रीराम छा गये। कहिये कहाँ तक कौन ऐसा है जो मनमोहन श्रीराम की अपार रूप सुषमा को देखकर मुग्ध न हो जाये। श्रीराम के श्रीनाम की महिमा का वर्णन मेरी बुद्धि कहाँ तक करे ।। ३०६ ।।

चित्रकूट रमनीय सुमग मधि जेते अगजग जोनी।
केवटपति गुह ज्ञाति पाँति छाये छन-छन छल छोनी ।।
तिन सबको मन मलो भाँति रमबाय सकाँति सलोनी।
युगलानन्य रमे बहुधा मुनि मोहे लहि अनहोनी ।।३०७।।

रमणीय श्री चित्रकूट के सुन्दर मार्ग में जितनी भी जगत की योनियाँ थीं। केवटपति निषादराज गुह एवं उनके सजातीय तथा संबंधी जन एकत्र होकर सभी श्रीराम दर्शन करके क्षणभर में तत्काल सम्पूर्ण छल कपट का परित्याग करके निष्कपट पवित्र हो गये। उन सभी के हृदय को श्रीराम ने अपनी सुन्दर कांतिमयी साँवली सलोनी सूरत (श्रीविग्रह) से भलीभाँति रमण कराया। बहुत प्रकार से ऋषि मुनिगण श्रीराम रूप पर मोहित होकर रम गये। यह अनहोनी घटना (पुरुष विग्रह को देखकर वीतराग तपस्वी महापुरुषों का विमोहित होना) हुई ।।३०७।।

श्रीकामद गिरिराज रमन रस रहस समेत रमावन।
नाम परम अभिराम अर्थ सब सदन समीप समावन ।।
बिपिन बिनोद बिहार बिलच्छन बिह्वल बिरह बहावन।
युगलानन्यशरण श्रीरसनिधि कौतुक केलि छकावन ।।३०८।।

पर्वतराज श्रीकामदगिरि पर रमण करने वाले श्रीजानकीरमणजू ने रसपूर्ण रास–रहस्य सहित सभी को रमण करया। श्रीनाम का रमु क्रीड़ार्थक परम सुन्दर अर्थ धाम, लीला आदि में सर्वत्र घटित होता है। चित्रकूट के कामदगिरि व प्रान्त का विलक्षण विनोद बिहार सम्पूर्ण व्याकुलता व विरह को समाप्त करने वाला है। रससागर श्रीराम ने रसमयी क्रीड़ा कौतुक से सभी को तृप्त किया ।। ३०८ ।।

Scanned by CamScanner

चित्रकूट के आस-पास जे बसे महामुनि नायक ।
अत्री आदि स्वाद भेदी सो रमे छोड़ि मन मायक ।।
खगमृग कोल किरात ब्रात रमि रहे निरखि रघुनायक ।
युगलानन्य नाम महिमा गुन कहे कौन कबि लायक ।।३०९।।

श्रीचित्रकूट के आस-पास निवास करने वाले भगवत् स्वाद के मर्मज्ञ अत्रि आदि जो महामुनीन्द्रगण थे वे मायामय मन का परित्याग करके (स्वर्गादिफल से उपरत होकर) श्रीनाम में रम गये । पशु, पक्षी, कोल, किरात समूह श्रीरघुनायक को देखकर उन्हीं में रम गये । श्री महाराजजी कहते हैं श्रीनाम महिमा के गुण को कौन सा सुयोग्य कवि कह सकता है ।। ३०९ ।।

आये भरत मनाय लेन हित रमि रहे सुध बुध डारी ।
पद पंकज पादुका पाय प्रिय प्रीतम पुर पगधारी ।।
श्री रमु अर्थ समर्थ मनन मन करत रहत श्रमहारी ।
युगलानन्य नाम सुमिरन बल बिरही जियत बिचारी ।।३१०।।

श्रीभरतजी चित्रकूट में श्रीराम को मनाकर श्रीअवध ले चलने के लिये आये किन्तु सुधबुध खोकर उन्हीं में रमण करने लगे। प्रियतम प्रभु के चरणारविन्द की प्रिय चरणपादुका प्राप्तकर श्रीअवधपुर के लिये प्रस्थान किया । सर्व समर्थ रमु अर्थ प्रधान श्रम का हरण करने वाले श्रीसीतारामजी के श्रीनामार्थ का सदा मन में मनन-चिन्तन करते रहते हैं। श्रीराम वियोगी श्रीभरत लालजी की भाँति विरहियों को श्रीनाम स्मरण का ही बल-आश्रय है यह समझना चाहिए ।। ३१० ।।

श्री रघुबीर धीर बांधे धनु तोर गंभीर छनोखे ।
सुन्दर श्याम शरीर बीर जुत चितवन चलन सुचोखे ।।
तमचर प्रबल बिराध बध्यो मद अंध कबंध अधोखे ।
युगलानन्य रमायो दोउ मन भली भाँति संतोषे ।।३११।।

अलबेले धीर गम्भीर श्री रघुबीर कन्धे पर धनुष बाण बाँधे हुए पराक्रमी, चितवन, सुन्दर तिरछे कटाक्ष चलाने में निपुण सुन्दर श्याम शरीर वाले श्रीराम ने राक्षस प्रबल विराध का वध किया तथा मदान्ध कबन्ध को छल रहित-पवित्र किया । इस प्रकार दोनों के मन को भलीभाँति रमण कराके संतोष प्रदान किया ।। ३११ ।।

Scanned by CamScanner

कहौ कौन श्रीराम नाम मुद देन महा गुन भारी ।
चहौं चरित्र पियूष चखन पै हौं अतिमंद अनारी ।।
मेरी मलिन कुमति करुना करि दीजे नाम सुधारी ।
युगलानन्यशरण अनुपम अनुराग अदाग बिहारी ।।३१२।।

श्रीनाम के समान आनन्ददायक महान् उत्कृष्ट गुण सम्पन्न कहो अन्य कोई है ? श्रीराम चरितामृत का पान करना चाहता हूँ किन्तु अत्यन्त अयोग्य और मंदबुद्धि हूँ। दिव्य निष्काम प्रेम में विहरण करने वाले प्रभो ! करुणा करके मेरी मलिन दुर्बुद्धि को सुधार कर श्रीनाम में लगा दीजिये ।। ३१२ ।।

रिपु भगिनी ठगनी आई मनमथ मद च्याई दौरी ।
दुष्ट रुष्ट भावना बिलग करि निरखि रूप भइ बौरी ।।
खरदूषन त्रिशिरादि महाखल रमे रूप बरजोरी ।
युगलानन्यशरण कहिए किमि नाम कला सिरमौरी ।।३१३।

काम के मद में उन्मत्त मायाविनी, शत्रु रावण की बहन शूर्पणखा श्रीरामचन्द्र के समीप आयीं किन्तु दर्शन करते ही मलिन दुष्ट भावना का परित्याग कर श्रीराम रूप में बावरी (पागल) हो गयी। खर, दूषण और त्रिशिरा आदि महादुष्ट भी जबरन श्रीराम रूप में रम गये । समस्त कलाओं के शिरमौर श्रीनाम महाराज के सम्बन्ध में क्या कहा जाय? ।३१३।

बिपिन बिचित्र बीच बिहरत बर वल्लभ रसिक रसीलो ।
तरु तृन मृगगन मनहिं रमावत नाम सदर्थ सजीलो ।।
खल मारीच नीच साग्यो कलि कीच मीच मद पीलो ।
युगलानन्य रमायो तेहि सब भांति चारु चटकीलो ।।३१४।।

रसिक रसीले श्रीजानकी वल्लभ श्रीराम विचित्र वन के बीच में बिहार करते हुए अपने सुन्दर सत्य श्रीनामार्थ के अनुसार तरु, तृण मृग गणों के मन को रमण कराते हैं। पाप पंक में सना हुआ (निमग्न) मृत्यु मद का पान किये हुए दुष्ट और नीच मारीच को भी अपने सुंदर आकर्षक रूप से सभी प्रकार से रमण कराया ।। ३१४ ।।

पंपासर पंकज प्रकास कर अमल नीर छबि छाई ।
ताहि रमाय दियो दृग भरि श्रीनारद मुनि सरसाई ।।
श्रीसबरी भँवरी सनेह सतपत्र रमी जस छाई ।
युगलानन्य नाम क्रीड़ा पर अर्थ बिचित्र बनाई ।।३१५।।

Scanned by CamScanner

निर्मल नीर छबि सम्पन्न पंपासर के कमलों को प्रकाशित कर और अपने नेत्रों से देखकर उसे भी रमण करा दिया तथा श्री नारद मुनि को प्रसन्नता प्रदान की। श्रीराम दर्शन करके अनुरागमयी भ्रमरी श्री शबरी श्रीराम विग्रह कुञ्ज वन में रम गयी और उनका यश त्रैलोक्य में छा गया। इस प्रकार रमु क्रीड़ार्थक धातु पर श्रीनाम का विचित्र अर्थ निर्मित किया ॥ ३१५ ॥

श्रीसमीरसुत सकल गुनाकर आय रमे छबि माँहीं।
कपट सुपट को दूर निपट करि परिहरि छिति छल छाँहीं ॥
श्री कपिराज रम्यो बाहुन बिच भय बिसराय अदाँहीं।
युगलानन्य रमायो सुरपति सुवन जाइ तेहि पाँहीं ॥३१६॥

सकलगुण निधान पवनपुत्र श्रीहनुमानजी विप्र वेष बनाकर आये और श्रीराम की अलौकिक छवि में रम गये। कपट पूर्वक धारण किये हुए सुन्दर वेष को पूर्ण रूप से दूरकर (त्यागकर) उस छलयुक्त भूमि को छोड़कर आगे प्रस्थान किया और कपिराज श्रीसुग्रीव ने भय और ताप से मुक्त होकर प्रभु श्रीराम की भुजाओं के बीच रमण किया (अर्थात् प्रभु ने सुग्रीव को गले लगा लिया था।) तत्पश्चात् इन्द्रपुत्र बालि के समीप जाकर उसे रमण कराया ॥ ३१६ ॥

ऐसो रम्यो प्रबल बाली अजरामर तन नहिं लीनो।
पाय प्रसाद प्रसन्न होय परधाम गमन तेहि कीनो ॥
तारादिक बामा श्यामा रमवाय महामुद दीनो।
युगलानन्यशरण बन घन द्रुम दियो रमाय प्रबीनो ॥३१७॥

प्रबल बाली इस प्रकार श्रीराम में रम गया कि उसने अजर अमर शरीर भी नहीं लिया निष्काम हो गया। श्रीराम के अनुग्रह से प्रसन्न होकर परधाम गमन किया। श्रीराम ने बाली पत्नी तारा आदि सुन्दरी रमणियों को रमण कराके (मुग्ध करके) उन्हें अत्यन्त हर्ष प्रदान किया। सघन वन की वृक्षावलियों को भी परम प्रवीण श्रीराम ने रमण कराया ॥ ३१७ ॥

बानर रिच्छ अनन्त रमावनहारो नाम रसायन।
भक्त विभीषन हूँ रमाय सुख छाय उछाह समायन ॥
सागर सपदि रमाय सेत सिजवाय पुनीत परायन।
युगलानन्यशरण सीमा सुख नाम हमेश समायन ॥३१८॥

Scanned by CamScanner

अनन्त वानर रीछों को रमण कराने वाले श्रीराम नाम रसायन हैं। भक्त विभीषण को भी रमण कराके उन्हें एसा सुख प्रदान किया कि वे परम आनन्द में समा (डूब) गये तत्काल सागर को भी रमा करके सेतु निर्मित करके उसे पुनीत कार्य परायण किया। ऐसे सुख की सीमा श्रीनाम में हमेशा समाये रहना चाहिये ॥ ३१८ ॥

तमचर निकर निहारि नैन भरि रमि रहे होश बिसारी।
श्री रघुवीर धीर लीला युत जंग किये हिय हारी ॥
नाम परम अभिराम उचारन करि परिनाम सम्हारी।
युगलानन्यशरण पहुँचे अनयास सुधाम खरारी ॥३१९॥

राक्षस समूह नेत्र भरके श्रीराम रूप को निहार करके व सुधबुध खोकर उनमें रम गये। परम धीर श्रीरघुबीर ने लीलापूर्वक मनोहारी युद्ध किया। राक्षस गण परम अभिराम अत्यन्त सुन्दर श्रीनाम का उच्चारण कर जीवन के अन्तिम परिणाम को संभाल (जीवन का फल प्राप्त) करके बिना प्रयास श्रीराम के सुन्दर धाम में पहुँच गये ॥३१९॥

अमर अनन्त आय सीतापति निकट बिनय बहु भाषी।
निज विभूति बिसराय दीन ह्वै रमे रूप अभिलाषी ॥
श्रीस्वामिनी मिलाप मनोहर रमि रमाय श्रुति साखी।
युगलानन्यशरण पुष्पक असवार सुपथ रस चाखी ॥३२०॥

तत्पश्चात् अनेक देवगण सीतापति श्रीराम के समीप आकर विनम्रता पूर्वक बहुत प्रकार से उनकी स्तुति करने लगे। अपनी श्रेष्ठता (वैभव) का विस्मरण करके वे दीनतापूर्वक रूप के अभिलाषी (इच्छुक) श्रीराम रूप में रम गये। स्वामिनी श्रीसीता जू का श्रीराम से मनोहर मिलन व उनसे रमण करके प्रभु ने उन्हें भी रमण कराया इसकी वेद साक्षी दे रहे हैं। पुष्पकारूढ़ श्रीसीता रामजी सुन्दर मार्ग के रस का रसास्वादन करने लगे अथवा भक्तों को रसास्वादन कराने लगे ॥३२०॥

भरद्वाज मुनिराज सदन सुचि निकट निवास सजाई।
महामुनीस मनोरथ सिधि कर रमवाए रस प्याई ॥
श्री अनुरागसिंधु भेंटे बर बंधु सनेह समाई।
युगलानन्यशरण पुरजन परितोषे तोष बढ़ाई ॥३२१॥

मुनिराज भरद्वाज के पवित्र आश्रम के समीप पहुँचकर निवास किया तथा महामुनीश्वर के मनोरथ को सफल करके उन्हें अपने रूपरस

Scanned by CamScanner

का पान कराके रमण कराया। स्नेह समुद्र प्रभु श्रीराम परम स्नेही भरतलाल जी से मिले और उनके प्रेम में मग्न हो गये। पुरवासियों से मिलकर उनके सन्तोष को बढ़ाकर पूर्ण तुष्टि व आनन्द प्रदान किया ॥ ३२१ ॥

परितोषी जननी कदंब अवलंब अनंत बधाई।
नाना भाँति चरित कीन्हे मनमोहन मोद बढ़ाई ॥
भूपासन अभिषेक विभव उत्साह कह्यो क्यों जाई।
युगलानन्यशरण तेहि मधि सचराचर हरष जगाई ॥३२२॥

श्रीराम ने समस्त माताओं को सन्तोष प्रदानकर उन्हें अनेक प्रकार से आश्वस्त किया। मनमोहन श्रीराम ने विविध प्रकार के मनमोहक चरित्र करके सभी को अत्यधिक आनन्द प्रदान किया। अवध–राज के सिंहासन पर अभिषेक अर्थात् श्रीराम राज्याभिषेक के वैभव व उत्साह का वर्णन कैसे किया जा सकता है? उस सुन्दर राज्याभिषेक महोत्सव ने सम्पूर्ण चराचर जगत् में हर्ष को जागृत किया, विशेष प्रसन्नता प्रदान की ॥ ३२२ ॥

रामबिलास प्रकास अमित अवकास समेत सोहावन।
रसिकराज सम राज किए मुनि मानस मधुर मोहावन ॥
रमु क्रीड़ा कमनीय कला आश्चर्य सुचित्त सोहावन।
युगलानन्यशरण अद्भुत अनुराग सुलोभ लोभावन। ३२३॥

सुहावने रामविलास का अमित प्रकाश अवकाश प्राप्त होने पर समय–समय पर प्रकट होता है। मुनियों के मानस को अपने माधुर्य से मोहित करने वाले रसिकराज श्रीराम ने समतापूर्वक राज्य किया। 'रमु' क्रीड़ार्थक धातु की आश्चर्यमयी कृपामयी कमनीय कला (करतब) सुन्दर चित्त को अद्भुत अनुराग व सुन्दर लोभ से लुभा लेती हैं ॥३२३।

आलस नेक नहीं लायक रघुनायक नाम सुजपिए।
होय हमेश शौक स्वादी बादिन बिच खेद न खपिए ॥
बिरह अनल अति सबल बारि अंतर पल-पल प्रति तपिए।
युगलानन्यशरण सुनाम बिन बिलग थाप नहि थपिए। ३२४।

किञ्चित् भी आलस्य उचित नहीं निरालस्य होकर रघुनायक श्रीराम का श्रीनाम भली प्रकार से जपिये। हमेशा उत्साह व रुचि

Scanned by CamScanner

बनाये रहिये वाद-विवाद करने वालों के बीच में दुःख प्राप्ति हेतु न फँसिये। अत्यन्त सशक्त विरह अग्नि को हृदय में प्रज्वलित करके प्रतिक्षण उसमें तप्त होइये। सुन्दर श्रीनाम के बिना अन्यत्र किसी स्थान पर स्थिर न होइये अर्थात् और विश्वास न करिये ॥ ३२४ ॥

जो कछु कला कलित मेरे मन मांझ फुरत क्या कहिए।
लिखे लिखाए पढ़े पढ़ाए बनत न तन चुप होय रहिए॥
नाम सुधासागर अपार मझधार बीचहीं बहिए।
युगलानन्यशरण सीमा सुख स्वाद लाह लय लहिए ॥३२५॥

मेरे मन में जो कुछ सुन्दर कलायें स्फुरित हो रही हैं उसके उसके लिए क्या कहें ? लिखने-पढ़ने से कुछ नहीं बनता बस मौन रहिये। श्रीनाम के अपार सुधा समुद्र की मुख्य धारा के बीच में बहिये। इस प्रकार सुख और स्वाद की सीमा का लाभ प्राप्तकर लीजिये।३२५।

दिव्य भव्य नित नव्य नेह निधि नाम नेहायत नीको।
सव्य तथा अपसव्य सदृश सुख सौंपत अधिक अमी को॥
हव्य-कव्य बरजित पूजन चाहत यक प्रीति सुठी को।
युगलानन्य उदार अभयप्रद नाम सजीवन जी को। ३२६॥

दिव्य भव्य नव नवायमान स्नेह के समुद्र श्रीनाम बहुत अच्छे लगते हैं। किसी प्रकार उल्टा या सीधा श्रीनाम का उच्चारण समान सुख प्रदान करता है तथा अमृत से भी अधिक मधुर है। श्रीनाम (यज्ञ सामग्री हव्य तथा पिण्डादि की सामग्री कव्य) देव पितरों जैसे पूजन सामग्री की अपेक्षा रहित एकमात्र सुन्दर प्रीति चाहते हैं अर्थात् पूजन सामग्री अथवा किसी आराधना पूजन की आवश्यकता श्रीनाम में अपेक्षित नहीं है। उदार व अभय श्रीनाम प्राणों के प्राण-जीवन के भी सुन्दर जीवन धन हैं ॥ ३२६ ॥

सपने में बरराय नाम जो गाय उठे मद पीए।
अथवा काय कलेश दंभ अपवाद हांस रस लीए॥
भावाभाव नहीं निरखत श्रीनाम सुगुन मन दीए।
युगलानन्यशरण बिसरत मत पलक पावहूँ जीए ॥३२७॥

चाहे स्वप्न में बड़बड़ाता हुआ जो व्यक्ति श्रीनाम का उच्चारण करले अथवा सुरापान कर नशे में श्रीनाम का गान करे अथवा शारीरिक कष्ट से पीड़ित होकर नामोच्चारण करे। कपट दम्भपूर्वक,

Scanned by CamScanner

निन्दापूर्वक या हास्यरस लेने के लिये परिहासपूर्वक श्रीनाम उच्चारण कर ले किन्तु श्रीनाम भाव–कुभाव को नहीं देखते केवल उसके सुन्दर गुणपर ध्यान देते है कि उसने नामोच्चारण किया। अतएव ऐसे श्री-नाम का जीवन में पलभर के लिये भी विस्मरण न करें ॥ ३२७ ॥

सकल मतन में निर्विरोध श्रीनाम उचारन सांचो।
पक्षपात की बात नहीं दृढ़ धारि मोहब्बत मांचो ॥
जो कोऊ कुछ कहे नई कल्पना गनो तेहि कांचो।
युगलानन्य नाम जपि पटुतर पांच आंचते बांचो ॥ ३२८ ॥

समस्त मत मतान्तरों में श्रीनाम जप की सत्यता को निर्विरोध रूप से स्वीकार किया है। इसमें पक्षपात की बात नहीं है। दृढ़तापूर्वक श्रीनाम प्रेम में तन्मय हो जाओ। यदि कोई श्रीनाम के विपरीत कुछ कहता है तो उसे आर्ष परम्परा न मानकर नवीन कच्ची कल्पना समझो। प्रपंच की ज्वाला से स्वयं को बचाकर अति कुशलता सहित श्रीनाम जप करो ॥ ३२८ ॥

विमल विज्ञ वेदान्त विनोदी बदे सुरेख खंचाए।
सनकादिक मुनिराज जपे रस रीति रहस्य रचाए ॥
श्रीशंकर सिरमौर नाम बल हालाहलहिं पचाए।
युगलानन्यशरण कुंभज मुनि, निधि अंजुली अचाए ॥ ३२९ ॥

वेदान्त तत्त्व चिन्तन में मनोविनोद करने वाले पवित्र ज्ञाननिष्ठ दृढ़तापूर्वक कहते हैं कि सनकादिक मुनि, भगवान् शंकर व महर्षि अगस्त श्रीनाम जप के उदाहरण हैं मुनिराज श्रीसनकादिक भाव सहित रस–रहस्य रीति से श्रीनाम का जप करते हैं। भगवान् श्रीशंकर जी ने श्रीनाम के बल पर हलाहल भयंकर विष का पान करके पचा लिया और सर्वश्रेष्ठ हो गये। मुनिश्रेष्ठ श्रीअगत्स्यजी ने श्रीनाम के प्रभाव से समुद्र को अञ्जलि में भरकर आचमन कर लिया ॥ ३२९ ॥

जेते सिद्ध हुए होवनहारे हैं सो सब प्यारे।
श्रीबरनेश ध्यान अन्तर रखि पाए प्रमुद अपारे ॥
अहो भाग अनुराग जाग जाके जिय बिसब बहारे।
युगलानन्य नाम महिमा बल पाय न कैसेहुँ हारे ॥ ३३० ॥

जितने सिद्ध हुए और होने वाले हैं वे सब प्रभु के प्रिय हैं। वर्णों के ईश (वर्ण श्रेष्ठ रकार मकार) श्रीनाम का हृदय में ध्यान

Scanned by CamScanner

करने से ही उन्होंने अपार आनन्द को प्राप्त किया है। जिनके हृदय में श्रीनाम के प्रति अनुराग जागृत हो गया तथा असीस प्रसन्नता है वे सौभाग्यशाली हैं। श्रीनाम महिमा का बल प्राप्तकर वे किसी भी प्रकार से पराजित नहीं होते ॥ ३३० ॥

खुशी समेत हमेश रहे अनिकेत निकेत बनावें।
घुसी सुघर बर रीति-प्रीति तेहि पाय सनेह सनावें ।।
भुसी समान ज्ञान योगादिक जानि न तान तनावें।
युगलानन्य उसी अन्तर रमि रहे न जगत जनावें ।।३३१।।

सदा प्रसन्नता पूर्वक भवन के बिना रहकर (घरबार छोड़कर) वीतराग होकर परधाम में अपना भवन बनाते हैं नित्य लीला कैंकर्य प्राप्ति हेतु परलोक बनाते हैं। सुन्दर श्रेष्ठ रघुवर की प्रीति की रीति जो हृदय में बैठ गयी है उसे प्राप्तकर स्नेह में सराबोर हो जाते हैं। ज्ञान, योगादि को भूसी के समान समझकर उसका विस्तार न करें। उसी श्रीनाम प्रेम के अन्दर रमण करता रहे किन्तु जगत् में उसका प्रदर्शन न करे संसारिक लोगों को ज्ञात न होने दे ॥ ३३१ ॥

नाम अधार यार धारो इसहीं से कारज सरना है।
काम कलाप बदन कारो करि काल त्रास नहिं करना है।।
जाम आठहूं लाय रटन सबहीं बिधि जग से मरना है।
युगलानन्यशरण हर सायत बिरह ज्वलन बिच जरना है।३३२।

हे मित्र ! श्रीनाम का ही आश्रय ग्रहण करिये इन्हीं से कार्य सिद्ध होगा। वासना समूह का बदन काला करके काल से भयभीत नहीं होना है। आठों पहर श्रीनाम की रटन लगाकर संसार से हर प्रकार से जीवित रहते हुये मरना है अर्थात् निरासक्त रहकर सबका परित्याग करना है तथा हर समय नामी की विरह ज्वाला के बीच जलाना है ।।३३२।

मधुर मन्जुमाला आला रस-रहस रसाला जानी।
जो जन जीवन-जान रसिक सो धारे रुचि सुचिठानी ।।
नाना भाँति सीयवल्लभ गुन रूप सुनाम कहानी।
युगलानन्यशरण सुनिए सुख मानि विषमता मानी ।।३३३।।

मधुर मन्जु-माला को उत्तम रस एवं रहस्य रस सम्पन्न समझो। जो लोग प्राणवल्लभ प्रभु के रसिक हैं वे लोग दृढ़तापूर्वक पवित्र रुचि से इसको धारण करें। इसमें अनेक प्रकार से श्रीजानकी

Scanned by CamScanner

वल्लभ जू के गुण, रूप और सुन्दर श्रीनाम की कथा है जिसे विषमता को दूर करके सुख मानकर आनन्दपूर्वक सुनिये ॥ ३३३ ॥

सियवल्लभ गुन दिशि देखो पेखो मत मेरी करनी ।
नाविक नोच-कोच सान्यो पर पुष्ट सुष्ठ तरु तरनी ॥
जैसे नापित दीप हरत तम गम श्रुति स्मृति बरनी ।
युगलानन्य मञ्जु माला तिमि तारत दुखनिधि जरनी ॥३३४॥

श्रीजानकी वल्लभजू के गुणों की ओर देखिये मेरी करनी की ओर दृष्टिपात न करिये । नौका चलाने वाला नाविक गन्दे-कीचड़ से ही सना रहता है (पर कोई हानि नहीं होती) किन्तु पार करने वाली नौका अत्यन्त सुन्दर व पुष्ट है तो व्यक्ति उसी पर बैठकर पार हो जाता है । जसे नाई द्वारा जलाया गया दीपक अन्धकार का हरणकर लेता है नाई की अयोग्यता का प्रभाव दीपक पर नहीं होता है । उसी प्रकार श्रुति स्मृति में वर्णित सांसारिक क्लेशों की चर्चा है, उस संसाररूपी दुःख समुद्र की जलन से यह मधुर मञ्जु-माला तार देती है । अर्थात् श्रीमहाराज जी कहते हैं कि इस ग्रन्थ में हमारी काव्यकला या कृतित्व का दर्शन न करिये अपितु भगवन्नाम रूप गुण लीला धाम का दर्शन करिये जिसके समस्त दुःख दावानल की निवृत्त होती है ॥ ३३४ ॥

मधुर मञ्जु माला झलकत अवलोकत बरन उचारे ।
अनायास रस-रास नाम गुन रूप परत्व प्रचारे ॥
भाषा विविध भाँति या मधि बुध बूझहिं मुद मन धारे ।
युगलानन्य नाम करुना बल आस हमेश हमारे ॥३३५॥

श्रीनाम के वर्णों के उच्चारण से ही मधुर मञ्जु-माला का प्रकाश दिखाई देता है । सहज ही रस-रास, नाम, गुणरूप का परत्व प्रकट हो जाता है । इसमें प्रयुक्त विविध प्रकार की भाषाओं को विद्वान लोग हृदय में प्रसन्नता पूर्वक समझेंगे । श्री महाराज जी कहते हैं हमें सदा श्रीनाम के करुणा बल का ही भरोसा है ॥ ३३५ ॥

बिनय कांति सतसंग बिरति बर बोध भक्ति दुति प्यारी ।
धाम कांति गुन रूप सुरस शुचि रहस इश्क सुखकारी ॥
नाम कांति कमनीय कला कर परम प्रमोद बिहारी ।
युगलानन्य मंजु-माला मधि द्वादश कांति संवारी ॥३३६॥

Scanned by CamScanner

विनय कान्ति, सत्संग कान्ति, श्रेष्ठ वैराग्य कान्ति, ज्ञानकान्ति, मधुरप्रकाशमयी भक्तिकान्ति, धाम कान्ति, गुणकान्ति, रूप कान्ति, सुन्दर रस–कान्ति, पवित्र रहस्य कान्ति, सुखदायिनी इश्क कान्ति तथा नाम कान्ति की कमनीय कला किरणें परमानन्द प्रदायिनी हैं। इस प्रकार मधुर मञ्जु–माला के अन्तर्गत यह बारह कान्तियाँ सज्जित की गयीं, रचना की गई ॥ ३३६ ॥

संवत सुचि अद्वैत भक्ति पुनि प्रान समेत निहारो।
श्रीदिनकर सुत दिवस रैन तिथि नौमी बिशद विचारो ॥
श्रीसरयू तट कुण्ड निर्मली निकट हृदय अवधारो।
युगलानन्यशरण विरचित वित विमल सुवितरन हारो ॥३३७

पवित्र विक्रम संवत् १९०५ (अद्वैत १ भक्ति ९, पुनि–०, प्रान– ५ सहित देखो अर्थात् १९०५) दिन शनिवार, रात्रि व्यापी नवमी तिथि को जानो। श्री सरयू जी के किनारे निर्मली कुण्ड के समीप हृदय में इसे धारण किया। महाराज जी द्वारा विरचित मधुर मञ्जु–माला की विमल श्रीनामकान्ति श्रीनाम धन का लोक में वितरण करने वाली है अर्थात् वि० संवत् १९०५ शनिवार के दिन रात्रि–कालिक नवमी तिथि में इस श्रीनामकान्ति ग्रन्थ की रचना सम्पूर्ण हुई ॥ ३३७ ॥

जे जन अनुरागी बड़भागी पढ़ें सुप्रेम लगावें।
श्रीगुरु बदन बनज से सुनि-सुनि मंगल मोद बढ़ावें ॥
श्रीजानकी प्रान वल्लभ सब भाँति ताहि अपनावें।
युगलानन्यशरण सदेह सुख सिंधु सचेत समावें ॥३३८॥

जो अनुरागी प्रेम सहित इसे पढ़ते हैं वे सौभाग्यशाली हैं श्री गुरुदेव के मुखकमल से बारम्बार श्रवण कर विशेष आनन्द व कल्याण को प्राप्ति करते हैं। श्रीजानकी वल्लभ श्रीराम उन्हें सब प्रकार अपनाते हैं। वे सशरीर सुखसमुद्र में प्रत्यक्ष निमग्न हो जाते हैं ॥ ३३८ ॥

श्री श्रीयुगलप्रिया गुननिधि गुरु गिरा माधुरी पाई।
अनायास श्रीकनक महल अनुराग अनुच्छन छाई ॥
सरस सार सम्बन्ध स्वाद लहि बिबिध बितर्क बिहाई।
युगलानन्यशरण अनुपम सुखनाम निवास सजाई ॥३३९॥

गुणनिधान श्रीसद्गुरु देव श्री श्रीयुगलप्रियाजी महाराज के वाणी माधुर्य को प्राप्तकर (मधुर वाणी को सुनकर) बिना प्रयास के सहज

ही श्रीकनक महल का अनुराग प्रतिपक्ष छा गया अर्थात् हृदय श्रीसीताराम स्नेह से ओत-प्रोत हो गया । विविध प्रकार के तर्क-वितर्कों का परित्याग कर सुन्दर रससार प्रभु के सम्बन्ध के स्वाद को प्राप्तकर लिया एवं अद्‌भुत सुख निवास श्रीनाम को हृदय में सजा लिया है, श्रीनाम को चित्त में स्थापित कर लिया है । अथवा अनुपम सुखमय श्रीनाम के आश्रय को प्राप्त किया है ॥ ३३९ ॥

दोहा- नामकान्ति चित शान्तिप्रद परम प्रेम प्रद सार ।

पढ़त सुनत हिय गुनतहीं महाखेद निधि पार ॥ १ ॥

परम प्रेम सार प्रदायिनी व हृदय को शान्ति देने वाली श्रीनाम कान्ति के पठन, श्रवण व हृदय में मनन करते ही साधक अपार दुःख सागर से पार हो जाता है ॥ ३४० ॥

इति श्री मधुरमंजुमालायां श्री श्रीमद्युगलानन्यशरण विरचितायां श्रीनाम परात्पर परत्त्व निरूपण नाम द्वादशो श्रीनामकान्ति समाप्ता ॥ १२ ॥

संवत् १६३४ लिख्यते श्रीअयोध्यामध्ये कार्तिक श्रुति दिसु १४। लिख्यते बाबूराम ब्राह्मण ।

॥ श्रीसीताराम जू सहाय ॥

गोस्वामी तुलसीदासजी का नाम भरोसा

नाहिन आवत आन भरोसो ।

यह कलिकाल सकल साधनतरु है श्रम-फलनि फरो सो ॥ १ ॥
तप, तीरथ, उपवास, दान, मख जेहि जो रुचै करो सो ।
पायेहि पै जानिबो करम-फल भरि-भरि बेद परोसो ॥ २ ॥
आगम बिधि जप जाग करत नर सरत न काज खरो सो ।
सुख सपनेहु न जोग सिधि-साधन रोग-वियोग धरो सो ॥ ३ ॥
काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह मिलि ग्यान-बिराग हरो सो ।
बिगरत मन सन्यास लेत जल नावत आम घरो सो ॥ ४ ॥
बहु मत मुनि बहु पन्थ पुराननि जहाँ-तहाँ झगरो सो ।
गुरु कह्यो राम-भजन नीको मोहि लगत राज डगरो सो ॥ ५ ॥
तुलसी बिनु परतीति-प्रीति फिरि-फिरि पचि मरै मरो सो ।
राम-नाम बोहित भवसागर चाहै तरन तरो सो ॥ ६ ॥

Scanned by CamScanner

❋ श्रीनाम महाराज जी की स्तुति ❋

जय जयति श्री सियराम नाम अकाम जन मन रंजनम् ।
जय जयति सब सुख धाम पूरन काम भव भय भंजनम् ।।
जय जयति अशरन शरन अभरन भरन अघदल गंजनम् ।
जय जयति मानस मलिन के प्रभु अमल अनुपम मंजनम् ।। १ ।।

जय जयति तारन तरन कलिमल हरन मोद बढ़ावनम् ।
जय जयति ब्रह्म परेश परतम सेव्य अग जग पावनम् ।।
जय जयति आनन्द कन्द मति भ्रम फन्द द्वन्द नशावनम् ।
जय जयति जन गुन प्रकट कर अपराध अवगुन दावनम् ।। २ ।।

जय जयति श्री महाराज साहब नाम सब विधि लायकम् ।
जय जयति बारक जपत जीवनि सकल अभिमत दायकम् ।।
जय जयति रवि शशि अनल कारन कार्य पर निर्णायकम् ।
जय जयति ईश्वर ब्रह्म निर्गुन सगुन सुर मुनि नायकम् ।। ३ ।।

जय जयति अचल प्रताप चहुँ युग काल तिहुँ कल राजतम् ।
जय जयति नाम निशान निर्भय सकल दिशि नित बाजतम् ।।
जय जयति जापक नाम के जिन्हि निरखि यमगन भाजतम् ।
जय जयति तिन्हि 'सियलाल' नाम सुशरन होत न लाजतम् ।। ४ ।।

दोहा– जय करुनाकर प्रनत हित, समरथ स्वामी नाम ।
जय उदार रट देहु निज, 'प्रमलतहिं' वसुयाम ।।

Scanned by CamScanner

* प्रकाशक *
स्वामी श्री सीताराम शरण सेवा संस्थान
श्री हनुमानधाम, आशियाना, पटना (बिहार)
☎ 9431651405

Scanned by CamScanner